राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक १] तृतीय विधान सभा के प्रथम सत्र, १९६२ का पांचवां दिवस [संख्या ५

शनिवार, दिनांक १७ मार्च, १९६२

विधान सभा की बैठक म० पू० ११ बज कर २ मिनट पर विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

[सिंचाई, स्वायत्त शासन एवं अकाल सहायता विभाग]

प्रश्न संख्या ९

श्री अध्यक्ष : प्रश्न। श्री गोविन्दसहाय :

(अनुपस्थित-कृपया आगे देखिये)

श्री भीमसेन।

१०. **श्री भीमसेन** (लूणकरणसर) : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या राजस्थान नहर की लिफ्ट इर्रिगेशन स्कीम तैयार कर ली गई है। अगर हां, तो किस किस गांव को इस स्कीम में शामिल किया गया है ? अगर कोई योजना तैयार नहीं की गई है तो राजस्थान नहर के लिफ्ट एरिया में गांवों को शामिल करने के क्या आधार हैं ?

(२) क्या यह सही है कि कोलोनाइजेशन कमिश्नर ने मुख्य अभियन्ता राजस्थान नहर के परामर्श से अधिकांश गांवों को राजस्थान नहर के लिफ्ट एरिया में से निकालने की तजवीज सरकार के समक्ष रखी ? अगर हां, तो सरकार ने इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की है ?

उपमन्त्री, सिंचाई (श्री दौलतराम सारण) : (१) पुनरीक्षित राजस्थान नहर परियोजना के अन्तर्गत लिफ्ट इर्रिगेशन का प्रावधान किया गया है, लेकिन इस सम्बन्ध में विस्तृत योजनाओं को अभी अन्तिम रूप नहीं दिया गया है। बीकानेर, गंगानगर व जैसलमेर जिलों में लगभग ८ लाख एकड़ भूमि को लिफ्ट इर्रिगेशन द्वारा सिंचित करने

Page No 2

(श्री दौलतराम सारण)

का प्रावधान है। यह क्षेत्र और क्षेत्रों की अपेक्षा नीचा, समतल, उपजाऊ और निविड़ है।

(२) जी हां। प्रस्ताव मन्जूर नहीं किया गया।

श्री भीमसेन : मेरा प्रश्न यह था कि किस किस गांव को स्कीम में शामिल किया गया, यह जवाब नहीं मिला ?

श्री दौलतराम सारण : प्रारम्भ में ६८१ गांव शामिल किये, जिसके लिये नोटिफिकेशन हो चुका है।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा : किन किन गांवों को इसमें शामिल किया गया है ?

श्री दौलतराम सारण : जिन गांवों में लिफ्ट इर्रिगेशन द्वारा सिंचाई होने की संभावना थी।

श्री भीमसेन : क्या उसके लिए सर्वे किया गया था ?

श्री दौलतराम सारण : साधारण रूप से यह जानकारी की गई थी कि कहां कहां लिफ्ट इर्रिगेशन द्वारा सिंचाई हो सकती है, कहां कहां पानी पहुंच सकता है; उस आधार पर किया गया।

श्री भीमसेन : ये जो ६८१ गांव बतलाये गये हैं उनमें कब तक पानी पहुंच जायगा।

श्री दौलतराम सारण : राजस्थान नहर के पूरा होने पर।

श्री मोहरसिंह (चूरू) : कितने वर्षों में पानी पहुंच जायगा ?

श्री दौलतराम सारण : राजस्थान नहर निर्माण होने के बाद पोंग डेम बनेगा, उसमें लगभग दस वर्ष लग जायेंगे।

श्री भीमसेन : क्या आप निश्चित रूप से बता सकते हैं कि फलां फलां गांवों में लिफ्ट इर्रिगेशन के अन्तर्गत पानी पहुंच जायगा और उन गांवों की जमीन को पानी मिल जायगा ?

श्री अध्यक्ष : यह तो दस वर्ष के बाद पता लगेगा।

श्री भीमसेन : पानी की कोई संभावना न होने के बावजूद भी कोलोनी एरिया घोषित क्यों कर दिया गया ?

श्री विजयसिंह झाला : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय अगर-मगर न कह कर निश्चित रूप से जवाब दें तो ठीक रहेगा।

श्री अध्यक्ष : 'अगर मगर' नहीं कहेंगे तो फिर 'ना' कहना शुरू कर देंगे।

श्री भीमसेन : अभी तो पानी मिलने की संभावना नहीं है। दस पन्द्रह वर्षों में पानी

(श्री भीमसेन)

कहां मिलेगा, किसको मिलेगा अभी पता नहीं फिर अभी से उस जगह को कोलोनी एरिया डिक्लेयर करने से सरकार को क्या फायदा ?

श्री दौलतराम सारण : कोलोनी एरिया डिक्लेयर नहीं करते हैं तो आगे जाकर कई दिक्कतें सामने आती हैं। जमीन अलग अलग टुकड़ों में बंट जायगी इसके बाद गवर्नमेंट को जमीन एक्वायर करने पर अधिक कीमत देनी पड़ेगी। केनाल कोई एक दिन में तो आ नहीं जाती, उसके लिए समय चाहिये, श्रम चाहिए, पैसा चाहिए।

श्री भीमसेन : जब पानी मिलने की कतई संभावना नहीं, तो पहले से ही किसी क्षेत्र को कोलोनी एरिया क्यों घोषित कर दिया गया ?

श्री अध्यक्ष : प्रश्नोत्तर के समय बहस नहीं होनी चाहिए। जो कुछ सूचना मंत्री महोदय देते हैं उस पर अगर अधिक प्रकाश डालना हो तो बहस के दौरान में उन चीजों को उठा सकते हैं।

नगरपालिका द्वारा नल लगाने के लिये मांगा गया ऋण....

श्री गोविन्दसहाय (गंगापुर) : क्या स्वायत्त शासन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या गंगापुर सिटी में नल लगाने के लिये नगरपालिका ने सरकार से ऋण मांगा था ?

(२) यदि हां, तो क्या सरकार ने नगरपालिका को ऋण दे दिया है।

(३) यदि नहीं, तो क्यों नहीं तथा कब तक देने की योजना है ?

उपमन्त्री, स्वायत्त शासन (श्री दौलतराम सारण) : (१) जी हां, नगरपालिका ने मुख्य अभियन्ता, स्वास्थ्य को प्रार्थना की थी।

(२) जी नहीं।

(३) स्वीकृत धनराशि में बचत न होने के कारण विचार नहीं किया जा सका। निकट भविष्य में इस योजना पर विचार किया जाना सम्भव प्रतीत नहीं होता।

श्री गोविन्दसहाय : क्या यह सही है कि इन्जीनीयर्स महोदय ने सर्वे करके भेज दिया है ?

श्री दौलतराम सारण : जी हां, सर्वे हो चुकी है।

श्री गोविंदसहाय : क्या इस प्रार्थना-पत्र के आने के बाद किसी भी नगरपालिका को ऋण नहीं दिया गया ?

श्री दौलतराम सारण : किसको दिया गया या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता, लेकिन यह कह सकता हूं कि वहां सर्वे कराई गई है। धनराशि नहीं होने की वजह से इनको स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : कितनी धनराशि मांगी गई थी ?

श्री दौलतराम सारण : दस लाख रुपये के करीब।

श्री गोविन्दसहाय ; भविष्य में यह पूरी होने की आशा है क्या ?

श्री दौलतराम सारण : निकट भविष्य में मुश्किल है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : बजट में गुंजाइश रख कर फिर सर्वे कराई गई होती ?

श्री दौलतराम सारण ; सर्वे करानी ही पड़तीहै, पैसा होने पर प्रायोरिटी के आधार पर दिया जाता है।

श्री विजसिंह झाला (नाथद्वारा) : क्या इसके अलावा और भी जगो की सर्वे कराई गई ?

श्री दौलतराम सारण : काफी जगहों पर कराई गई है।

श्री गोविन्दसहाय : दूसरी दूसरी जगहों को तो मिल गया, केवल गंगापुर के लिये नहीं दिया गया, यह पक्षपात कैसे हुआ ?

श्री दौलतराम सारण : मैंने उत्तर में निवेदन किया कि प्रायोरिटी के मुताबिक धनराशि उपलब्ध होने पर दिया जाता है।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : सरकार की यह घोषित नीति है कि १० हजार तक की आबादी वाले क्षेत्रों में वाटर वर्क्स का इन्तजाम करेंगे उसके अनुसार भी इसको पैसा दिया जाना चाहिये ?

श्री दौलतराम सारण : मैंने निवेदन किया, वाटर सप्लाई योजना की सर्वे कराई जा चुकी है और अभी धनराशि नहीं है इसलिये इसको नहीं लिया जा सका।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : कई जगहों को इस प्रकार का लोन थोड़े दिन पहले दिया गया है, गंगापुर को ही क्यों पीछे रख दिया गया ?

श्री दौलतराम सारण : कहां दिया गया ?

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : सूरतगढ़ को दिया गया है कुछ दिनों पहले।

श्री दौलतराम सारण : राजस्थान में बहुत सी जगहों के लिये वाटर सप्लाई स्कीम्स हैं, इन पर काम चल रहा है। इस स्कीम के बारे में जानना चाहते हैं तो मेरे पास सब स्कीम्स तो हैं नहीं, जो मैं सबका जवाब दे सकूं।

श्री विजयसिंह झाला : इसका सर्वे कब हुआ था ?

श्री दौलतराम सारण : लास्ट इयर में।

श्री अध्यक्ष : श्री गोविन्दसहाय।

नगरपालिका, गंगापुर द्वारा लगाया जाने वाला चुंगीकर

६. श्री **गोविन्दसहाय** (गंगापुर) : क्या स्वायत्त–शासन मन्त्री, यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या गंगापुर नगरपालिका के ऑक्ट्राय ड्यूटी लगाने का प्रस्ताव स्वीकार करके सरकार के पास स्वीकृति के लिए भेजा है ?

(२) यदि हां, तो क्या वह स्वीकार हो गया है ?

(३) यदि नहीं, तो क्यों तथा कब तक स्वीकार हो जायगा ?

उप मन्त्री, स्वायत्त शासन (श्री दौलतराम सारण) : (१) जी हां।

(२) जी नहीं।

(३) समस्त नगरपालिकाओं के लिये समान चुंगीकर नियम बनाये जा रहे हैं और उनके स्वीकृत होने के उपरान्त यहां की चुंगी-कर की दरें भी स्वीकार कर ली जावेंगी। नियम जल्दी ही स्वीकार होने को हैं।

श्री **गोविन्दसहाय** : क्या यह सही नहीं है कि लॉ विभाग ने स्वीकृति भी इनको दे दी, फिर भी सिर्फ कैबिनेट में सिग्नेचर के लिए पड़ी है, श्रीमान जी ?

श्री **दौलतराम सारण** : मैंने निवेदन किया न कि सबके लिए समान नियम बनाये जा रहे हैं और उनके स्वीकृत होने के उपरान्त यहां की चुंगीकर की दरें भी स्वीकार कर ली जावेंगी।

श्री **गोविन्दसहाय** : ये नियम कब तक बनकर स्वीकार हो जावेंगे ?

श्री **दौलतराम सारण** : मैंने निवेदन किया, 'शीघ्र'।

श्री **मथुरेशबिहारी माथुर** (बांदीकुई) : क्या इन नियमों के बिना ऑक्ट्रॉय वसूली नहीं हो सकती ? आपकी पूर्व स्वीकृति क्या आवश्यक है ?

श्री **दौलतराम सारण** : मेरी जानकारी में तो ऐसा ही है।

श्री **मथुरेशबिहारी माथुर** : दौसा के अन्दर ऑक्ट्रॉय वसूली हो रही है और जो मंजूर हुई है जिन चीजों पर लेने के लिए उनके अलावा भी दूसरी मदों पर वसूली हो रही है, क्या आप इनके लिए कार्यवाही करना पसन्द करेंगे ?

श्री **दौलतराम सारण** : यह तो गंगापुर सिटी का प्रश्न है। दौसा का मुझे मालूम नहीं। मेरे ध्यान में अगर नियम विरुद्ध ऐसी कोई बात लाई जावेगी तो मैं उस पर कार्यवाही करूंगा।

श्री **योगेन्द्रनाथ हांडा** (रायसिंहनगर) : ऐसी तो बहुत सी नगरपालिकाएं हैं जहां कहीं तो चुंगीकर वसूली की आज्ञा दे दी गई है और कहीं नहीं दी गई है ?

Page No 6

श्री दौलतराम सारण : कौनसी ?

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : एक तो दौसा की ही बताई।

श्री मथुरेशबिहारी माथुर : आपके यहां से स्वीकृत होकर वसूल हो रही है। आपने फरमाया कि वगैर नियमों के वहां वसूली नहीं हो सकती, तो वगैर नियमों के भी वसूली हो रही है; इसका प्रमाण मैंने आपको दिया था।

श्री दौलतराम सारण : मेरे प्रश्न के उत्तर को आपने सुना नहीं मालूम पड़ता है। मैंने निवेदन किया कि समस्त नगरपालिकाओं के लिए समान नियम बनाए जा रहे हैं। इन नियमों के स्वीकृत होते ही चुंगी की दरें भी स्वीकार कर ली जावेंगी। कुछ ऐसी पुरानी म्युनिसिपैलिटियां हैं जिनके अपने चुंगीकर नियम पहले से हैं, स्वीकृत हैं और उन पुराने नियमों के आधार पर वे वसूली कर रहे हैं। नये नियमों के लागू होने पर सब जगह दरें समान हो जावेंगी।

श्री मथुरेशबिहारी माथुर : नहीं, ऐसा नहीं है। ये सन् ६१ के अन्दर ही मंजूर हुई है और ६१ में ही स्वीकृत होकर वसूल हो रही हैं। यह सही नहीं है कि पुरानी हैं। ६१ में ही स्वीकृत होकर वसूल हो रहीं हैं।

श्री अध्यक्ष : इसकी आप जांच कर लीजिये।

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : अध्यक्ष महोदय, जब तक नये नियम स्वीकृत न हो जावें तब तक गंगापुर की म्युनिसिपैलिटी ने जो नियम भेजे हैं उनको स्वीकृत करके वसूल करने की आज्ञा देने में सरकार को क्या दिक्कत हो सकती है ?

श्री गोविन्दसहाय : एक साल से, अध्यक्ष महोदय, यह मामला सरकार के पास पड़ा है। कितना नगरपालिका का नुकसान इससे अब तक हुआ होगा, इसका अन्दाज सभी लगा सकते हैं।

श्री दौलतराम सारण : मैं निवेदन कर चुका हूं कि चुंगी के समान नियम बनाये जा रहे हैं।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : जो नियम यहां से बन कर आये, उन पर आपने अब तक क्या कार्यवाही की, प्रश्न यह है ?

श्री दौलतराम सारण : जो नियम बन कर आये, उनके उपरान्त मैने निवेदन किया कि समान नियम बनाने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है।

(अनेक माननीय कई सदस्यों के एक साथ बोलने को खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष : श्री हांडा

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : (रायसिंहनगर) श्री गजसिंहपुर जो गंगानगर जिले में श्री गंगानगर से बहुत ज्यादा दूर नहीं है वहां ओक्ट्रॉय की वसूली की आज्ञा कैसे दे दी ?

Page No 7

श्री अध्यक्ष : प्रश्न एक निश्चित म्यूनिसिपैलिटी के बारे में है। अगर नियमों का उल्लंघन और म्यूनिसिपैलिटियों में हो रहा है तो इन सारी म्यूनिसिपैलिटियों के बारे में जानकारी इनको हो नहीं सकती अभी। इसलिए आपने जो बातें दूसरी म्यूनिसिपैलिटियों के बारे में बताईं उन पर मंत्री महोदय विचार करेंगे और अगर ठीक नहीं हैं तो ठीक करने की कोशिश करेंगे।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : कारण पूछे गये हैं कि ऐसा क्यों किया जा रहा है ?

श्री अध्यक्ष : वे तो स्वीकार ही नहीं कर रहे हैं कि आप जो कह रहे हैं वह है या नहीं।

श्री विजयसिंह झाला : क्या बीकानेर से नियम आने के बाद ऐसा किया गया है या पहले से ही आप एक से नियम बनाने की बात सोच रहे हैं ?

श्री दौलतराम सारण : क्या मतलब आपका ?

C

श्री विजयसिंह झाला : जो नियम गंगानगर से भेजे उनके आने के बाद आपने यह सोचा कि सब जगह एक से नियम लागू किये जाने का निश्चय किया जाय या यह आपका सोचना कि सब जगह एक से नियम हों, पहले से ही है।

श्री दौलतराम सारण : नये कानून के मुताबिक समान नियम बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है

श्री विजयसिंह झाला : तो फिर सवाल यह होता है....

(अनेक माननीय सदस्यों के एक साथ बोलने को खडे होने पर)

श्री अध्यक्ष : जब एक बोलते हों तो आपको बैठे रहना चाहिये।

आप (श्री झाला) जारी रखिये।

श्री विजयसिंह झाला : गंगानगर से नियम आपको भेजे गये, इन पर आपने क्या कार्यवाही की, जब कि पहले से चल रहा था आपका नियम बनाने का ?

श्री दौलतराम सारण : गंगानगर से कोई नियम नहीं आये। गंगापुर है, गंगानगर नहीं।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : आपके नियम की बात सामान्य रूप से लागू हो रही है सब जगह या नहीं, प्रश्न यह है ?

श्री अध्यक्ष : प्रश्न का उत्तर साफ है ? अब प्रश्न यह है कि जो मिसालें आपने दी हैं माननीय सदस्यों ने, उन पर माननीय मंत्री महोदय जांच करेंगे और सही होने पर उचित कार्यवाही करेंगे।

(अनेक माननीय सदस्यों के एक साथ खड़े होने पर)

Order please ! Order !! One at a time.

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : गंगापुर से जो नियम आये, क्या राज्य सरकार ने उनका कोई जवाब भेजा कि क्या कार्यवाही उन पर हो रही है और अगर भेजा तो कब भेजा ?

श्री दौलतराम सारण : कहां के जवाब ?

श्री मानिकचन्द सुराणा : जो नियम गंगापुर से बनकर आये स्वीकृति हेतु उनके बारे में ?

श्री दौलतरम सारण : नगरपालिका ने चुंगी नियम ६१ में भिजवाये और सरकार के पास जनवरी के अन्तिम सप्ताह में आये; तब से विचाराधीन है ।

श्री विजयसिंह झाला : पर इसका जवाब क्या दिया गया और कब दिया गया ?

श्री दौलतराम सारण : नियमों के अभाव में वहां चुंगी की दरें स्वीकृत नहीं की गई और अब समान नियम सबके लिये लागू शीघ्र किये जावेंगे । इसके बाद में वहां की चुंगी की दरें स्वीकृत हो जावेंगी ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : एक बात का आश्वासन मांगते हैं कि ये नियम कब तक बन जावेंगे ?

श्री अध्यक्ष : यह तो मन्त्री महोदय निश्चित तौर से कह चुके हैं पहले ही ।

श्री मथुरेशबिहारी माथुर : जब तक ये समान नियम नहीं बन जाते तब तक जो वगैर नियमों के वसूली हो रही है उसको बन्द करने की क्या सरकार कोशिश करेगी ?

श्री दौलतराम सारण : यह मेरे ध्यान में नहीं है । आप दौसा की कह रहे हैं । मैं इसकी जानकारी कर लूंगा और कहीं का मेरे ध्यान में नहीं है ।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : हिंडौन में भी हो रही है, सवाई माधोपुर में भी हो रही है फिर गंगापुर के लिये ही देर क्यों की जा रही है ?

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज ! ऑर्डर !! कल का एक प्रश्न था जो स्थागित किया गया ।

(विराम)

प्रश्न संख्या ३

(दिनांक १६ मार्च, १९६२ का स्थगित प्रश्न)

अभावग्रस्त क्षेत्र में राहत-कार्य, बीकानेर

३. **श्री भीमसेन** (लूणकरणसर) : क्या अकाल सहायता मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे !

(१) बीकानेर जिले के कौन कौन से गांवों को इस साल का अभाव ग्रत घोषित किया गया है ?

(२) उपरोक्त गावों में से कौन कौन से गांव ऐसे हैं जहां पिछले वर्ष भी अभाव की स्थिति थी ?

(३) ऐसे गांवों में राहत कार्यों के लिये सरकार ने अब तक क्या व्यवस्था की है ?

उपमंत्री, अकाल सहायता (श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल) : (१) बीकानेर जिले में जिन जिन गांवों को इस साल अभावग्रस्त घोषित किया है उनकी सूची सदन की मेज पर रख दी गई है।

(२) ऐसे गांवों की सूची भी सदन की मेज पर प्रस्तुत कर दी गई है।

(३) ऐसे गांवों में सरकार ने इस साल भी खरीफ के लगान की वसूली पिछले वर्ष जैसे ही स्थगित कर दी है और सहायतार्थ जिले की बीकानेर, कोलायत और लूणकरणसर तहसीलों के अभावग्रस्त गांवों में २५,०००) रुपया राजस्व राहत कार्य के लिये, पांच हजार रुपये ग्रेच्युटिस रिलीफ के लिये और पांच हजार रुपया जल-वितरण के लिये तथा ५० हजार रुपया तकावी के लिये स्वीकृत किया गया है।

(कृपया परिशिष्ट १ देखिये)

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : माननीय अध्यक्षजी, सुनाई नहीं दिया है इसलिये इसका उत्तर वापिस दिया जावे तो अच्छा है।

श्री अध्यक्ष : फिर से पढ़ दीजिये।

(उपरोक्त उत्तर पुनः उपमन्त्री महोदय ने पढ़ कर सुनाया)।

श्री विजयसिंह झाला : इस रुपये का वितरण करने के लिए किन किन विभागों को अधिकार दिया गया ?

श्रीमती कमला देवी बेनीवाल : जिस विभाग से यह कार्य सम्बन्धित हैं उन्हीं को।

श्री भीमसेन : वह राशि कब स्वीकृत की गयी है।

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : यह राशि २-२-६२ को स्वीकृत की गयी है।

श्री भीमसेन : जिन गांवों में लगातार दो सालों से कहतसाली पड़ रहा है उन गांवों के लिए २-२-६२ से पहले क्या क्या राहत कार्य किये हैं ?

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : इसके पहले १६६० में भी इसी प्रकार से लूण-करणसर, कोलायत और बीकानेर की तहसीलों में किया गया था...........

श्री भीमसेन : मैं १६६० के लिए नहीं पूछ रहा हूँ, मैं पूछ रहा हूँ कि २-२-६२ से पहले नवम्बर, दिसम्बर में लगातार कहत-साली थी उसके लिए सरकार ने क्या किया ?

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : इसके बारे में अभी मेरे पास कोई इत्तला नहीं है।

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : क्या मन्त्राणी महोदया यह बतायेंगी कि २-२-६२ में इस क्षेत्र को अभावग्रस्त क्यों घोषित किया गया, पहले क्यों नहीं कर दिया गया ?

Page No 10

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : राज्य सरकार के पास जैसे ही इत्तला आई उसकी जांच करवाकर घोषित किया गया ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : संबंधित अधिकारियों ने विभाग को १५ अक्टूबर तक, जब कि गिरदावरी होती है तो नवम्बर के पहले हफ्ते तक आपके पास क्यों इत्तला नहीं भेजी ?

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : अगर इस प्रकार की ढिलाई आपके सामने आई है कि राज्य सरकार के कर्मचारियों ने अपने काम में किस प्रकार की कमी की है तो इसकी जांच करवा लेंगे कि वह क्यों हुआ ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : ढिलाई तो, अध्यक्ष महोदय, स्पष्ट है । १५ अक्टूबर तक गिरदावरी बनती है, इसका मन्त्री महोदया को मालूम होना चाहिए ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : क्या सरकार स्वयं महसूस नहीं करती कि यह २-२-६२ से पहले होना चाहिए । अगर ऐसा महसूस करती है तो उन्होंने खुद कोई कार्यवाही करने की कोशिश की है क्या ?

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : २-२-६२ की देरी का कारण चुनावों के कार्यों से भी हो सकता है, यह आप भी जानते हैं ।

श्री भीमसेन : अध्यक्ष महोदय, यह निश्चित रूप से बात है कि वहां के लिए स्वीकृति तो राशि की हो गई है, लेकिन अभी तक अमाउन्ट की सैंक्शन कलेक्टोरेट में नहीं पहुंची ।

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : यह राहत कार्य शुरू करने के लिए आपकी तहसील के जितने भी तहसीलदार हैं उनके पास इत्तला भिजवादी गई है और उनको कार्य करने के लिए सूचना भी दी गयी है ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) । क्या इस बात की सूचना आयी है कि वह राशि अभावग्रस्त क्षेत्रों को मिल चुकी है ?

श्रीमती कमलादेवी बेनीवाल : इसकी सूचना मेरे पास नहीं है ।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न समाप्त हुए ।

(११.२७ म. पू.)

कार्य सलाहकार समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन एवं सदन द्वारा उस पर विचार

श्री मथुरादास माथुर (गृह मन्त्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य-सलाहकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन का उपस्थापन करता हूं ।

(विराम)

अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य-सलाहकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन से अपनी सहमति प्रकट करता है ।

श्री अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया ।

(विराम)

प्रश्न यह है कि जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है उसको स्वीकार किया जाये ?

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया ।

राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेतर वाद-विवाद

माननीय सदस्य (श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा) अपना भाषण जारी रखें और कृपया जल्दी समाप्त करें क्योंकि कल भी आप काफी समय तक बोल चुके हैं ।

राजा श्री मानसिंह (डीग) : I will request you, Sir, that time limit should be fixed for speeches.

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : वक्त का निर्णय पार्टियों के लिहाज़ से किया जाये तो मैं अपनी पार्टी के वक्त में से वक्त ले रहा हूं । कल मैं कुल १० मिनट ही बोला हूं ।

श्री अध्यक्ष : कितना बोले हैं ?

श्री **मानसिंह महार** (आमेर) : २० मिनट बोल चुके थे ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : श्रीमान्, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि उस समय ज्यादा इन्टरप्शन्स हुए होंगे और उनमें वक्त गया होगा । मैं तो अपनी कुर्सी पर बैठा था ।....

श्री अध्यक्ष : खैर, अब आप जल्दी समाप्त करें ताकि ज्यादा माननीय सदस्य बोल सकें ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : (पूर्व क्रम से) अध्यक्ष महोदय, संक्षेप में मैंने कल यह बताने का प्रयत्न किया था कि चारों पार्टियों के नेताओं ने अपने विचार रखते समय अपनी पार्टियों के विचार प्रतिबिम्बित किये हैं, उसके लिए मैंने उनको धन्यवाद दिया । मैं कल यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कांग्रेस सरकार को किन विचार-धाराओं के बीच में से राजस्थान को योजना-बद्ध विकास में आगे बढ़ाना है । उन दिक्कतों की तरफ जब मैंने सदन का ध्यान खींचा उस समय मैं यह कह रहा था कि स्वतन्त्र पार्टी को और दूसरी कॉम्युनिस्ट पार्टी को कि एक तरफ कांग्रेस को स्वतन्त्र पार्टी कहती है कि यह उच्च स्तर देश में लाना चाहती है और दूसरी तरफ हमारी कॉम्युनिस्ट विचारधारा के या कॉम्युनिस्ट पार्टी के लोग कहते हैं कि कांग्रेस इस स्वतंत्र पार्टी को मिलाना चाहती है । मैं इस स्थिति की तरफ सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि ये दोनों बातें गलत हैं । वे यह भी कहते हैं कि इनको प्रिवीपर्स क्यों दिया जाता है, वे यह भी कहते हैं कि इस तरह से किसानों के लिए, किसानों के कानून के लिए पिछली कांग्रेस सरकार कुछ नहीं कर सकी है और वे यह भी कहते हैं कि कांग्रेस एकदम प्रतिक्रियावादी हो गयी है । मैं बड़े अदब से यह अर्ज करना चाहता हूं और मैंने कल भी कहा था कि कांग्रेस सिद्धांत रूप से यह मान चुकी है कि इस देश के रहने वाले चाहे राजा हों, चाहे गरीब हों सब राज्य के सामने बराबर हैं और और यह भी मान चुकी है कि हमें राजाओं की राजाई से विरोध था, जागीरदारी से विरोध था; जागीरदारों से विरोध नहीं था । इसी तरह से प्रिवीपर्स और दूसरी बातों के लिए मैं कहना चाहता हूँ कि कांग्रेस का स्पष्ट मत है और वह मत यह है कि आज मैं अगर किसी सदस्य की एक पेन्सिल भी खींचूं तो

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

वह झड़प करने लगता है। लेकिन उन राजाओं से राज्य लिया जो एक अर्से से उसका उपभोग कर रहे थे उस राज्य को लिया, इस देश की अच्छाई के लिए लिया है, इस देश की गरीबी को दूर करने के लिए लिया है, इस जनतंत्र को आगे बढ़ाने के लिए लिया है। उसके लिए कुछ समझौते हुए हैं उनके मातहत इन सब चीजों को लेने के लिए किसी न किसी रूप में समझौते हुए। आप उस स्थिति को ध्यान में रखें कि जब अंग्रेज छोड़ कर गये उस समय राजस्थान में कितने ही राज्य थे और राजा थे। उन राजाओं ने शान्ति के साथ इसको एक्सैप्ट किया और उन राजाओं को प्रिवीपर्स देने के लिए समझौता सरदार पटेल ने किया। इतिहास इसका साक्षी होगा कि पटेल को बिस्मार्क के नाम से पदवी दी जायेगी। मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि हम किसी की भी चीज को छीन कर और डाकू बन कर नहीं लेना चाहते हैं। हम सही बात कहते हैं। कांग्रेस इस बात की मान्यता देती है कि देश को एक करने के लिए यह सब कुछ किया है। हम विकासबद्ध योजनाओं के द्वारा गरीबी से लड़ना चाहते हैं।

कुछ राजा इधर भी हैं। तो माननीय सदस्य, राजा मानसिंह ने कल कहा था कि राजा इधर भी हैं, हम ही फ्यूडल कैसे है? मैं इस बात को मानता हूँ कि राजा इधर भी हैं और राजा उधर भी हैं, लेकिन दोनों में फर्क है। एक अपरिवर्तनशील है और दूसरे मुल्क के साथ मिले हुए है जो कि मुल्क की गरीबी से लड़ने के लिए कांग्रेस के सिद्धान्तों को मान कर कांग्रेस के अन्दर आ गये हैं। आज भी उन लोगों के लिए जो इसमें विश्वास करते हों उनके लिए कांग्रेस के रास्ते खुले हुए हैं, और कम्युनिस्टों के लिए भी रास्ता खुला हुआ है, जो आना चाहे उसके लिए हमारे सिद्धान्तों को मान कर।

मैं यह मानकर कहना चाहता हूँ कि इन चीजों में उन दिक्कतों को आपके सामने रखता हूँ कि कांग्रेस विचार वैषम्य से, जो विचार-वैषम्य जनतन्त्र की जान है, देश की गरीबी की लड़ाई से लड़ कर आगे ले जाना चाहती है। मैं, श्रीमान्, आपसे कहना चाहता हूँ कि हम यहां किसी के रहम से नहीं हैं। जो कुछ हुआ है उसका विश्लेषण भी करें तो मेरा विश्लेषण एक अलग तरीके का है, मैं अपनी नाकिस राय आपके सबके–विचार के लिए रखता हूँ। मेरी मान्यता तो यह है कि राजस्थान इस मुल्क के अन्दर जिस तरह से पिछड़ा हुआ था, जहां तक राजाओं के राज्य थे, इतनी रियासतें थीं उनका सबका इन्टीग्रेशन हुआ, सब एक हुए। राजस्थान बना और किसी जगह पहुंचने के लिए पिछली सरकार का, पिछली कांग्रेस सरकार के जोश से हमारी जनता ने विश्वास किया था। वे जोश में आये और उन्होंने इन्कलाबी कानून बनाये, जिसकी सारी दुनिया ने तारीफ की। उस पर राजस्थान सरकार गौरव कर सकती हैं। हमने कानून के सम्बन्ध में इस तरह से पहल की कि हम हिन्दुस्तान में सबसे आगे निकल गये। क्या किसानों के कानून, क्या जमीनों के कानून, क्या विकेन्द्रीकरण के कानून, इतिहास इस बात पर गौर करेगा कि हम सब से आगे बढ़े हैं। आज गल्ती जो कही जाती है और जो मार्च किया है उससे जनमत पीछे रह गया है और उसका विरोध

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

हो सकता है, लेकिन सही इरादे से आगे बढ़ते जायं और बढ़ने के बाद फतह के करीब आयें । आज उसकी चिन्ता की जा सकती है लेकिन वह कोई चिन्ता का कारण नहीं है। लेनिन ने कहा है कि विरोध होने लगे तब समझो कि कुछ सफलता आई। मैं उस सिद्धान्त को मान कर उसका स्वागत करूंगा, जो कुछ भी इस चुनाव में हुआ है। हम समझते हैं कि हम इस तरह से आगे बढ़े हैं। हमने कानूनों के द्वारा इन्कलाब किया है और यहां भूमि-सुधार किये हैं। भूमि-सुधार की क्या स्थिति थी, क्या राजाओं के वक्त में, क्या जागीरदारों के वक्त में, उस स्थिति से हम निकले हैं। उस स्थिति से निकाल कर किसानों को यहां खड़ा किया है। यह सही है कि हमने इन्कलाबी कानून बनाये। हमने इन्कलाबी ढंग से आगे बढ़ने की कोशिश की, उनको जनता नहीं पचा सकी। मैं सही तौर पर कहूँगा कि उसको नहीं पचा सकी। कुछ जगह पर अगर आप देखेंगे, सारी इलेक्शन की बात आप देखेंगे तो चुनावों के बाद सही तौर पर इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि एक विशेष जगह की जनता ऐसी थी जहां वास्तव में एक इन्पेडि-एन्ट की मेन्टेलिटी थी, इस तरह की थी कि वह उस इन्कलाब के बढ़ते हुए कदम को पचाने में असमर्थ रही। आज उस जनता के सामने सिर झुका देते हैं। बाद में इस जनता को पता चलेगा कि कांग्रेस सरकार हमें कहां से निकाल कर यहां तक पहुंचाया है और हमारे मुल्क को बनाने के लिए उसने क्या क्या कोशिश की जिसको कम्युनिस्ट कहते हैं कि कुछ नहीं किया। मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या किया जिस दिन। उनको यह पता चलेगा तब तक एक चक्कर और डगमगायेगा और पामाल होंगे और सच्चाई की जीत होगी।

राजा श्री मानसिंह : You will be in no position then.

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं यह भी कहना चाहता हूं इस सिलसिले में कि हमारी भी नीतियों में हम कोई बदलाव करने वाले नहीं हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि राज्य रहे या न रहे, कांग्रेस जिन सिद्धान्तों के उपर है अडिग ढंग से अपने रास्ते पर चलना चाहती है, और उसमें अपने आदर्शों का जो विवेक है उसको हम मानते हैं। उसको कहने का आपको अधिकार है। दूसरी जितनी पार्टियां हैं उनकी जो आइडियोलोजी है उनको सम-झने की कोशिश करनी चाहिए। उसी तरह से हम चाहते हैं कि उसकी जो आइडियोलोजी है उसको सही तौर पर समझने की कोशिश करें। आप भी मौका दें कि जब तक इधर बैठे हुए हैं आप ही की तरह हमारे दिलों के अन्दर राजस्थान को बढ़ाने की चाह है। आप भी महसूस करें कि आज हम इस आग से निकले हैं चुनावों के बाद। चुनाव अभी खत्म हुए हैं और हम यहां सीधे आये हैं। पहले दो–एक महीने लगते थे, उसके बाद आया करते थे। आज हमारे दिमाग से चुनावों की बातें निकली नहीं हैं। आज सदन में जो विचार हो रहा है उसमें उनकी झलक मिलती है। अभी नई सरकार बनी है। हमने कुछ वायदे अपने अपने क्षेत्रों में किये हैं। हमने अपने अपने क्षेत्रों की आकांक्षाएं जगाई हैं कि हम वहां जायेंगे तो इस तरह से सेवा

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

करेंगे। चाहे जिस पार्टी से आये हों। जिस आग से हम निकले हैं उस आग को अभी हम अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रहे हैं, सदन में जो डिस्कशन हुआ है उससे यह पता चलता है। बासी बारूद की फुलझड़ियां चल रही हैं उस चीज को अभी निकाल नहीं पा रहे हैं। इन चीजों को हमें निकालना चाहिये। कुछ गर्म बातें आपने कही हैं, कुछ गर्म बातें हमने कही हैं, लेकिन वह चैप्टर बन्द हो गया। यह सरकार बनी है। जब कांग्रेस ने यह पवित्र भार ग्रहण किया क्योंकि सरकार बनाने के सिवाय और कोई पर्याय नहीं था। आप भी इस बात को मानेंगे। इसके नतीजे का बाद को पता चलने वाला है। आज प्रगतिपथ पर चलने के लिए, योजना बद्ध विकास के लिए जो योजनाएं रखी गई हैं उनके अन्दर चलने का प्रयत्न करेंगे। हम उसके अन्दर आपका सहयोग चाहते हैं।

इसके बाद मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि चुनाव के सिलसिले के पक्ष में बहुत सी बातें हुई हैं। मैं स्वयं भी आपके साथ आवाज लगाता हूँ कि अगर ऐसी बातें हुई है तो सरकार ऐसा प्रयत्न करेगी उनको रोकने का। लेकिन मैं इसके साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि आज कानून का राज्य है। भ्रष्टाचार और चुनावों की अनियमितता की जब बातें होती हैं तो एक तरफ तो चुनाव याचिका का सिलसिला शुरू होगा, लेकिन छोटे मोटे लोगों की जितनी शिकायतें आपने की हैं मुमकिन हो कि वे सही हों, लेकिन आपको इस तरीके का पता है कि जनतन्त्र के अन्दर किसी को वैसे ही सजा नहीं दे सकते जब तक कि उनके खिलाफ सुबूत नहीं हो। मैं यह निवेदन करूंगा कि सुबूत दें उन चीजों का जिनको आप यहां कहते हैं; तो सरकार कटिबद्ध है एक्शन लेने के लिए। लेकिन जब कि आज कानून का राज्य है तो किसी की गर्दन या उजा, बिना किसी सुबूत के नहीं दी जा सकती है। हमने जो यहां कसम खाई है सत्यनिष्ठ की उसके अन्दर लिखा है संविधान और कानून की रक्षा करने का। कानून की रक्षा करने का मतलब यह नहीं है कि खाली कह दें कि करप्शन है उससे कुछ नहीं होगा। सुबूत देकर सरकार की मदद करनी चाहिये। सरकार को आप सही तौर पर चलाना चाहते हैं, उसमें आपकी मदद चाहिए।

उसके बाद मैं यह भी कहता हूँ कि जो धन्यवाद और कृतज्ञता राज्यपाल महोदय ने सरकार के लोगों के प्रति ज़ाहिर की जिनकी संख्या ३२ हजार है। आपने बड़ा जोर लगाया और बहुत जोर लगाया और यह बात कही तो ऐसे १ हजार आदमी हो सकते हैं जिन्होंने कोई गलती की हो। चुनावों में ३२ हजार आदमियों ने काम किया है। उनमें से अगर एक हजार ने कोई गलती की हो, उसको जनरलाइज़ कर दिया तो उन १०००–१२०० आदमियों के खातिर बाकी के ३०, ३१ हजार आदमियों को नहीं देना चाहते जिन्होंने शान्ति के साथ चुनावों को चलाया, तो यह अन्याय होगा। मैं यह कहूँगा कि चाहे इधर की सरकार हो, चाहे आपकी सरकार हो इन्हीं लोगों से हमको काम लेना है। मैं यह भी कहूँगा कि हम बर्दाश्त नहीं कर सकते गल्तियां जो की हुई हैं उनको। चाहे

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

इधर वाले हों या उधर वाले हों, हम उनको बर्दाश्त नहीं करेंगे। मैं उम्मीद करता हूं कि सुबूत आप इकट्ठा करके सरकार के सामने रखेंगे तो उसको सजा दी जायगी।

मैं इसीलिए कहता हूं कि एक तरफ धन्यवाद के पात्र हैं कि उसने शांति के साथ में चुनावों को खत्म किया और एक तरफ ३२ हजार में से ३१ हजार कर्मचारियों के निश्चित रूप से कृतज्ञ हैं सरकार के कि इन चुनावों को खत्म करवाकर जनतन्त्र की पद्धति को सामने लाए। लेकिन धुंवा बहुत सा उठाया जाता है और कहा जाता है कि चुनाव इस तरह से हुआ, उस तरह से हुआ। दुनिया हमारे चुनावों की तारीफ करती है। सारे देशों के अन्दर हमारा सिर ऊंचा हुआ है उसकी वजह से खड़े हुए हैं। इसके बावजूद धुआं उड़ाया जाता है कि चुनाव बोगस हैं। उसका प्रत्यक्ष नमूना तो यहां बैठे उन लोगों पर लागू है जो यहां पर उपस्थित हैं। लेकिन मैं उनसे अदब के साथ कहूंगा कि आज जिस तरह का चित्र बनाया है, धुंआ उठाया है आज उतनी शकलें नजर नहीं आती हैं। यह बात सरकार की ईमानदारी का सुबूत है कि आज विरोधी लोग यहां पर इस तादाद में मौजूद हैं। यहां की सरकार ने ईमानदारी से काम किया है। दुनिया ने हमारे जनतन्त्र में चुनाव की तारीफ की है।

मैं यह भी कहूंगा कि चुनाव के सिलसिले में कुछ घटनाओं की ओर सामान्य सदस्यों ने ध्यान खींचा है। उनकी तरफ से सुबूत दिया जाय तो मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि उन पर निष्पक्ष रूप से जांच की जाय और जो दोषी हैं उनको सजा दी जाय। इसके साथ ही मैं अब दूसरे पहलू पर आऊंगा। मुझसे आपसे कुछ भ्रष्टाचार की बातें कही गईं.... ....

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, बोलने वाले बाकी बहुत रह जायेंगे, टाइम थोड़ा है। मेरी दरख्वास्त है कि उनका पक्ष तो आ चुका है, राज्यपाल के अभिभाषण में भी है, धन्यवाद के प्रस्ताव पर भी लम्बा-चौड़ा भाषण हो चुका है। विरोधी लोग हैं उनका टाइम कटता है। ये कल भी बोल लिये, रूस और चीन के साथ अड़ंगा लगा लिया; फिर हमारे लिये टाइम नहीं रहेगा।

श्री अध्यक्ष : विरोधी पक्ष का टाइम नहीं कटेगा माननीय सदस्य के बोलने से।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : (जारी) इसी तरह बीच में कई बार लाइन से उतारने की कोशिश होती है, वक्त खराब होता है। मैं माननीय सदस्य से कहूंगा कि आपका वक्त नहीं, मेरी पार्टी का वक्त ले रहा हूँ।

कुछ भ्रष्टाचार की बात कही, कुछ पार्टी के लिये चंदा आया उसकी बात कही। मैं आपसे कहना चाहता हूं और स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं दुनिया जानती है उस बात को कहना चाहता हूं वह यह कहना चाहता हूँ कि हमारे यहां, माफ करें स्वतन्त्र उम्मीदवार वे लोग कहलाते थे जिनकी कोई पार्टी नहीं होती थी, अब इस नाम से स्वतन्त्र पार्टी खड़ी हो गई, इसको मेरे इलाके में 'टाटा मर्सांडरी पार्टी कहते हैं।

राजा श्री मानसिंह : Do you call your party 'Birla's party'?

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : Yes, Yes यह टाटा मर्सीडरी पार्टी........

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : दोनों पार्टियां अपनी अपनी पार्टी का नाम स्वीकार करें तो हम भी उनको उसी नाम से सम्बोधित करें ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : टाटा और बिड़ला पार्टी का बंटवारा हो गया ।

श्री **ज्वालाप्रसाद** : मैं वही बात कहना चाहता हूँ जिसके बारे में धुंआ उठाया है । जवाहरलालजी के सामने टाटा कम्पनी का चैक यह कह कर पहुंचाया गया कि हम कांग्रेस की मदद करना चाहते हैं, तो पंडितजी ने उनसे साफ कह दिया कि ....

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : यहां चैक की बात नहीं है, धन्यवाद देने की बात है ।

श्री ज्वालाप्रसाद : (जारी) उसके लिये अध्यक्ष ही काफी अच्छी तरह से कंट्रोल कर लेते हैं, आपकी मदद की जरूरत नहीं थी । मैं अर्ज कर रहा था सच्चाई की बात । जब चैक पहुंचा तो हमारे नेता ने कहा कि आप हमारे सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करते हो इसलिये यह चैक तुमको वापिस दिया जाता है । तुमको तुम्हारी टाटा मर्सीडीज़ मुबारिक हो । बिड़ला का नाम लिया जाता है । एक नेता महोदय हैं, मैं उनको फ्लोटिंग नेता कहता हूं । फ्लोटिंग कहने से मेरा इतना ही मतलब है कि पहले वे श्रीमाधोपुर से थे अब फ्लोट करते करते जयपुर तक आ गये । उन्होंने फरमाया था, कागज हाथ लग गया, उनके कागज की बात मैं जानता हूं, दूसरा कोई नहीं जानता । आज आपके सिद्धान्तों में जो लोग विश्वास करते हैं उनसे आप भी पैसा लेते हैं और कांग्रेस भी, कांग्रेस के सिद्धान्तों में जो विश्वास करते हैं उनसे पैसा लेती है । जनतंत्र में यह सब जगह होता है । पैसा लेने आप भी गये थे । आपकी कोई बात नजूम या ज्योतिषी की होती है या आप जो आंकड़े लाते हैं वे नजूम से लाते हैं क्या ? मैं कहना चाहता हूं कि पैसा और यह चैक; मैं कांग्रेस कैन्डिडेट की हैसियत से कहता हूं कि मेरे क्षेत्र के लोग जानते हैं कि मैंने किस तरह चुनाव का सामना किया है । मेरे यहां भी दिन में छाती पर तारा लगाने वाले उसी तरह से घूम रहे थे । उनके पास साधन थे, भगवान ने उनको साधन दिये थे, लेकिन हमें तो अपने ही पांवों खड़ा रहना था । मेरे इलेक्शन में टाटा मर्सिडीज़ का मुकाबला उस तरह से था जिस तरह से टाटा मर्सिडीज़ और बैलगाड़ी का होता है । इस क्षेत्र के लोग जागरूक थे । वहां राजाई नहीं थी, इसलिये वे इनके चुंगल में नहीं आये और इसी कारण से मैं आज आपके सामने मौजूद हूं, वरना कोई मुजायका नहीं था । लेकिन जनतंत्र में हमारे सिद्धान्तों में जो विश्वास करते हैं उनसे पैसा लेना कोई करप्शन नहीं है । कोई केपिटलिस्ट कांग्रेस की पोलिसी में विश्वास करता है उससे हम सेवाएं लेते हैं, इससे इन्कार नहीं करते और आपके सिद्धान्तों में विश्वास करने वालों से आप भी सहयोग लेते हैं, इससे आप भी इन्कार नहीं कर सकते । आप भी हवा में नहीं चलते हैं । आप

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

जिस तरह से इलेक्शन लड़ते हैं वह लड़ना आपको मुबारिक ....

श्री नाथीसिंह (गोविंदगढ़) : बंटवारा है आप दोनों का, पर निर्दलीय क्या करेंगे ।

श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ़) : बिड़ला और टाटा का बंटवारा हो गया, हम तो वैसे ही रह गये ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : आप भी कल इधर बैठे थे ।

एक माननीय सदस्य : हमें तो जनता कम्पनी चाहिये ।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज़ ! माननीय सदस्य को बोलने दीजिये ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मुझे एक राजा की बात याद आती है । मैं यह मानता हूं, आगाह करता हूं कि उस जमाने में बड़ा शौर्य रहा है । वह भी एक तरह के राज्य का तरीका था । उस जमाने की बात है । एक राजा पर दूसरे ने चढ़ाई की और पहले राजा के एक मंत्री द्वारा धोखा देने पर दूसरा जीत गया । जब पहला राजा जीतनेवाले राजा के सामने लाया गया तब उससे पूछा गया कि तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया जाय तो उसने जवाब दिया कि जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है वैसा ही बर्ताव किया जाय । जीतनेवाले राजा ने उस मंत्री को कहा कि तूने जब अपने पालनेवाले को भी-धोखा दिया है तो मेरे प्रति वफादार कैसे रह सकता है, तुझे तो फांसी देनी चाहिये । जो लोग इधर से उधर जाते हैं उनके साथ भी उस राजा की तरह का व्यवहार करें । मैं कह रहा हूं कि इस तरह के भ्रष्टाचार की बात कही, यह कहा गया, वह कहा गया ....

एक माननीय सदस्य : आपकी पार्टी में ऐसे ही राजा हैं ?

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मुझे जो कहना था वह मैंने कह दिया । यह आपकी समझदारी की बात है । जैसा कपाट खुला है वैसी ही अन्दर जायगी ।

श्री अध्यक्ष : हर बात का जवाब देने की कोशिश न करें ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं यह अर्ज कर रहा था न इसके साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जहां तक इस चुनाव के सिलसिले में जो कुछ कहा था उससे आज भी गुरेज नहीं हो रहे हैं । आज भी कह रहे हैं लोगों को कि यह यह हमने किया, हमने किया । मैं कहना चाहता हूं कि हर एक पार्टी का मेनीफेस्टो है उसके अन्दर एक तरतीब है, एक तरीका होता है । तो मेनीफेस्टो के जरिये यह एलान करते हैं कि हम तुम्हारे सामने यह यह चीज लेकर आये हैं उसके जरिये हम जनता को समझाते हैं कि यह तो हम करने वाले हैं और यह हमारा इरादा है । मैं यह साफ तौर से कहना चाहता हूं कि मंत्री का, किसी और का और हर कांग्रेसी का यह जन्म सिद्ध अधिकार है कि वह जनता के सामने कहे कि यह हमारा मेनीफेस्टो है और उस मेनीफेस्टो के जरिये कहे कि हमारे

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

अलावा किसी और को वोट दिया तो यह मेनीफेस्टो पूरा होने वाला नहीं है। यह कहने का अधिकार है और इसका प्रयोग किया जा सकता है, इसमें कोई गलती नहीं है। इस तरह कह कर आप हमें दबा नहीं सकते कि यह कह दिया, वह कह दिया। हम भी कुछ सोचते हैं कि तुमने क्या नहीं किया। यह सब तुम्हारा किया हुआ है, ऐसा अगर तुम सोचते थे, समझते थे तो एक मीटिंग के अन्दर कहते कि सुखाड़िया एक लीडर है, हाउस का लीडर है, इसने किया है, हमने किया है। यह कहने को आप तैयार नहीं। आप तरह तरह की गलतफहमियां पैदा करके चुनाव लड़ रहे थे। हमने कहा तो वह बात कही, जो मेनीफेस्टो में थी। आज हम विकास के काम के लिए खड़े हुए हैं। आजादी की लड़ाई हमने-तुमने जीती। अब जनता के सहयोग से और आपके सहयोग से गरीबी की लड़ाई लड़ना चाहते हैं। यह कहा तो क्या गलत कहा ? हमें कोई भी हिच-किचाहट इस बात को मानने में नहीं है। हमने कहा है और आयन्दा भी कहेंगे, जिन बातों को हमने मेनीफेस्टो में माना है, उनका पूरी तरह प्रचार करेंगे। आपसे सहयोग किस बात का मांगते हैं ? जो नेशनल विकास की योजनायें हैं, जो इस देश में गरीबी के खिलाफ लड़ाई हम लड़ना चाहते हैं इन योजनाओं के जरिये, उसके अन्दर सहयोग चाहिए। आप जब यह कहते हैं कि ये नेशनल योजनायें हैं तो स्वतः यह मतलब होता है कि आप पंचवर्षीय योजना को मानते हैं। तीसरी पंचवर्षीय योजना के लिए भी यह समझना चाहिए कि इस योजना के अन्दर भी आप फर्क ला नहीं सकते। आपकी असेम्बली को अधिकार नहीं कि इन योजनाओं में फर्क ला सकें....

श्री अब्दुलजब्बार (निम्बाहेड़ा) : अध्यक्ष महोदय, ओन ए पोइन्ट ऑफ ऑर्डर, सर, यह असेम्बली को चैलेंज करना है कि असेम्बली पंचवर्षीय योजना में फर्क नहीं ला सकती। यह असेम्बली का बिल्कुल अपमान है ; असेम्बली बिल पास नहीं करेगी तो किसी प्रकार भी पंचवर्षीय योजना नहीं चल सकती। मैं, अध्यक्ष महोदय, निवेदन करूंगा कि जो हमारे बन्धु बोल रहे हैं उन्हें अपने शब्द वापस लेने चाहिए। इस तरह के शब्दों से असेम्बली का मान गिरता है। क्या वे असेम्बली के उत्तर-दायित्व को नहीं समझते हैं ? पंचवर्षीय योजना क्या असेम्बली से ज्यादा है ? He is not supposed to be the supreme authority to challenge us.

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मुझे कह लेने दीजिये........

श्री अब्दुलजब्बार : अध्यक्ष महोदय, कृपया आप इनसे स्पष्टीकरण कराने की कृपा करें। मैं निवेदन करता हूँ कि असेम्बली को चैलेंज करने का मतलब क्या है ?

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैंने यह नहीं कहा था। मैं कहता हूँ कि विदिन कॉम्पीटेन्स है ? मैंने चैलेंज करने की बात नहीं कही। देश की बात चल रही है, उसकी कुछ शर्तें हैं....

श्री अब्दुलजब्बार : अध्यक्ष महोदय,

(श्री अब्दुलजब्बार)

असेम्बली भी नहीं रोक सकती, नहीं कर सकती; इसका मतलब क्या है ?

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : अभी आ रहा हूँ, आप सुनें ।

श्री अब्दुलजब्बार : आ नहीं रहा हूँ। आप एक्सप्लेन कर दीजिये । अध्यक्ष महोदय, यह बुरी चीज है कि इस सदन का अपमान हो। सदन का हर एक सदस्य गूंगा, बहरा, लंगड़ा नहीं है । उनके भी बुद्धि है, उनके भी दिमाग है । यहां पर तोहीन कराने नहीं आये हैं । सदन को अधिकार है कि पंच वर्षीय योजना तो क्या, राज्य को भी बदल सकती है ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं अर्ज कर रहा हूँ कि मैंने कॉम्पीटेन्स की बात कही है; कुछ कर सकते हैं, कुछ नहीं कर सकते हैं । मैं जो अर्ज कर रहा हूं, मेरी बात को सुन लेंगे तो खुद संतोष करेंगे । मैं अर्ज कर रहा था कि जो पंचवर्षीय योजना है, इसके लिए एक कमीशन है, आयोग है जो हर देश के लिए, इस देश की गरीबी की लड़ाई के लिए नक्शा बनाती है, हर गांव की तरक्की का नक्शा बनाती है । इस राजस्थान के लिए भी नक्शा बनाया जाता है, उसकी कुछ शर्तें होती हैं । उसके लिए अगर असेम्बली चाहती है कि उन नक्शों को उस पैमाने पर आगे बढ़ा कर ले जाय, देश को तरक्की की ओर कदम से कदम बढ़ा कर आगे ले जाना चाहती है और चलाने की इच्छा है तो उसमें कुछ शर्तें पूरी करनी होती हैं । हमको यह सोचने का पूर्ण अधिकार है कि हमें इन विकास की योजनाओं को आगे बढ़ाना है । तो मैं कहता हूँ कि आप इसमें सहयोग करेंगे । आपको सहयोग करना चाहिए । अब उन योजनाओं को बढ़ाने का एक तरीका है । मिसाल के तौर पर जो बाहर के देशों से कुछ कर्ज लेने की बात है, उसके बारे में तो मैं बाद में कहूँगा । लेकिन जो कुछ रुपया लेते हैं उसकी कुछ शर्तें होती हैं कि इन देशों से कितने रुपये इन योजनाओं में लिए जायं........

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य काफी समय ले चुके हैं । दस–पन्द्रह मिनट में समाप्त कर दें । दूसरे माननीय सदस्यों को भी बोलना है । आपको ज्यादा नहीं बोलना चाहिए ।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं इस मामले को यहां ही छोड़ कर जो अन्य पार्टियों के बारे में विचार नहीं रखे हैं, वह रखना चाहता हूँ । जहां एक तरफ कुछ कहते हैं वहां दूसरी तरफ कुछ कहते हैं । जब चुनाव का वक्त निकल गया, उस वक्त प्रचार हुआ, उस प्रचार से निकल गये तो आज कह दिया कि छः सेर का अनाज मिलेगा । कैसे मिलेगा ? कुछ मालूम नहीं । आज कह दिया है कि हम रेवेन्यू नहीं लेंगे । यह भी कह दिया है कि हम टैक्स भी घटा देंगे । एक तरफ कहा जाता है कि बैलों के ऊपर से और सब पर से टैक्स हटा देंगे । यह गलतफहमियां पैदा करने का वक्त गया । मैं अदब के साथ कहना चाहता हूँ कि यह कहा जाता है कि हम सर्विसेज़ की तनख्वाह बढ़ा देंगे । एक तरफ कहा जाता है कि शिक्षा के लिए स्कूल फलां इलाके में नहीं खोला गया है तो दूसरी तरफ कहा जाता है कि सिंचाई योजनायें वैसी की वैसी पड़ी हैं । मैं नहीं समझता हूँ कि इन दोनों में सामंजस्य कहां है ? आज अगर सर्विसेज़ की कन्डीशन्स ठीक करनी हैं तो इसके लिए खजाने से रुपया लेना होगा । अगर आपको योजनाओं को चलाना है, लोगों को

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

राहत देनी है, विकास करना है, गरीबी से लड़ाई लड़नी है, सब जगह साधन पहुंचाने हैं तो मैं अदब से कहूँगा कि आपको टैक्स लगाने होंगे। इतना ही नहीं, मैं और आगाह करता हूँ कि जहां देश इस प्रकार की स्थिति से निकल रहा है, हमारी सीमाओं पर चीन और दूसरे मुल्क खराब निगाह कर रहे हैं तो अगर मौका पड़ा तो आज से चौगुने टैक्स देने के लिए हमारे देश की जनता आजादी के लिए, देने के लिए तैयार है। इसलिए टैक्स की बात इस तरह करने के बजाय एक जिम्मेदारी से करनी चाहिये। आप और हम और इस देश की जनता, इस देश के अन्दर, इस देश की आजादी के लिये बराबर जिम्मेदार हैं और उसी जिम्मेदारी के साथ हमें हमारी जनता को तैयार करना है। आज यह कहा जाय कि चीन को एक चप्पा जमीन नहीं देनी है तो उसकी तैयारी करनी होगी। जनता का आव्हान करना होगा क्योंकि आजादी खतरे में है और कॉम्युनिस्ट चीन से मुकाबला करना है, हमें चीन से मुकाबला करना है तो हमें होशियार रहना होगा। यह बात सोचनी चाहिए कि इस चीन ने हमारी तरफ थोड़ी भी निगाह उठाई तो उसका मुकाबला........

श्री हरिदत्तसिंह (नोहर) : अध्यक्ष महोदय, फोरिन अफेअर्स के बारे में कुछ कहने का मेरे ख्याल में अधिकार नहीं है और यह विषय से बाहर की बात है।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : अधिकार और विषय के बाहर की बात नहीं है। देश के अन्दर जहां एम. पी. का इलेक्शन हुआ है वहां टैक्स के बारे में गलत बातें कही जाती हैं।

श्री अध्यक्ष : आप राजस्थान की बात करें तो अच्छा है।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : जो टैक्स की बात करते हैं उनका चर्चिल चला गया। विरोधी दल के बुजुर्ग नेता साहब ने फर्माया था "Power corrupts, and absolute power corrupts absolutely." और उसके लिए उन्होंने मिसाल दी कि जब पोलिटिकल डिपार्टमेंट था, जो अंकुश रखता था और आज कहते हैं कि एब्सोल्युटली करप्ट हो गये हैं क्योंकि एब्सोल्यूट पॉवर है। कहां एब्सोल्यूट पावर है ? आप भी वोट से चुन कर आये हैं, हम भी वोट से चुन कर आये हैं। आज पॉवर बटी हुई है........

श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : यहां तो सभी को व्यक्तिगत विचार प्रकट करने का अधिकार है ....

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं भी वही कर रहा हूं।

श्री लक्ष्मणसिंह : जैसे माननीय सदस्य विचार प्रगट करते हैं वैसे हम भी करते हैं। इससे अच्छा यह है कि स्वतंत्र पार्टी को मौका दीजिये, हम बतायेंगे कि टैक्स घटाये जा सकते हैं या नहीं, तरक्की होती है या नहीं। सब एडमिनिस्ट्रेशन की आवश्यकता की वस्तुएं हैं वे रखते हुए भी टैक्स घटाये जा सकते हैं या नहीं, यह हम बता सकते हैं; आप मौका दीजिये।

Page No 21

(१२ मध्यान्ह)

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मौका आपको मिल चुका है। अब आप को नहीं मिल सकता। अंग्रेज दे सकते थे। आपको अब जनता से मौका लेना होगा। यहां कोई देने वाला नहीं बैठा है।

मैं अर्ज करना चाहता हूं कि उनके समय में टैक्सों की क्या हालत थी ? उनके समय में जो टैक्सेज़ की हालत थी उसको सुनाता हूं। हमारे सम्माननीय मित्र, राजा मानसिंह ने कल कहा था कि आज ताजमहल खड़ा है, हमारे बुजुर्गों ने तालाब बनाये, सड़कें बनवाई हैं। आपके टैक्सेज़ के गवाह आपके बड़े बड़े महल और गढ़ चुने हुए हैं। मैं यह कहूंगा कि आपने टैक्स पैसों के रूप में नहीं लिया। आपने हमारी मां–बहिनों को बैगार में लगाकर उनसे काम लिया। आपने जो टैक्स हमसे लिया उसके लिए आप आपकी उन नींवों से पूछिये जिसमें हमारी मां–बहिनों का पसीना और खून पड़ा हुआ है।

श्री लक्ष्मणसिंह : यह बिल्कुल गलत है, हमने कोई ऐसे टैक्स नहीं लिये।

श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा : मैं आपको उस वक्त की याद दिलाना चाहता हूं और यह भी याद दिलाना चाहता हूं कि कहां हैं वे आज अंग्रेज ? मैं उनसे पूछना चाहता हूं कहां हैं उनके आदेश, जब आपके गढ़ के सामने दो व्यक्तियों को गोली से मार दिया गया था ! मैं उनकी मुर्तियों को देखकर आया हूं....

श्री लक्ष्मणसिंह : Hon'ble member is indulding in stories which are full of half truths.

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : वे मूर्तियें मैंने देखी है।

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्य से कहूंगा कि वे कृपया ऐसी बातें न कहें जिसके तथ्यों को वे साबित न कर सके। इसके अलावा हर एक बात को इस बहस में लाना अच्छा नहीं।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैंने मूर्तियें देखी हैं और मैंने उनको मालाएं पहिनाई हैं।

श्री अध्यक्ष : आप अपना भाषण समाप्त करें।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : मैं यह कहूंगा कि आज कोई भी हुकूमत दुनिया में चाहे कहीं भी हो, चाहे जिस तरह की हुकूमत हो, बगैर टैक्स के नहीं चल सकती। मैं आपको एक मिसाल देता हूं....

श्री लक्ष्मणसिंह : इस पर कोई दो राय नहीं हो सकती कि बगैर टैक्स के कोई हुकूमत नहीं चल सकती। मगर टैक्सेज़ की कोई सीमा तो होनी चाहिये। यहीं पर आपके और हमारे मतभेद हैं।

विपक्ष के एक माननीय सदस्य : माननीय सदस्य भी अपना पारा नीचे उतार कर बात करें।

श्री अध्यक्ष : आप इनका पारा और चढ़ा रहे हैं। इससे इनका पारा और खराब होता है।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा : वे अपने नेता पर रहम करें। कहीं उनको माफी मांगनी नहीं पड़े।

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

मैं माननीय सदस्य से, जिन्होंने कहा कि आदर्श की बात रखिये, मैं यह कहूंगा कि आप अपनी जगह रहिये; इस बात पर कि राज्य अच्छा चले, योजना अच्छी तरह से चले उसके बारे में राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में जो कन्क्लूड किया है वह हमारे लिये अच्छी चीज है। उन्होंने बताया है कि समस्त सदस्यों के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता होगी। सहयोग किसमें चाहिये? उन्होंने कहा है कि यदि हम पारस्परिक मतभेद समाप्त कर देने का निश्चय कर लें, जनता को अपने कार्यक्रमों में शामिल करने तथा उनका पूरा पूरा सहयोग प्राप्त करने के लिये संयुक्त प्रयत्न करें तो निस्सन्देह हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल होंगे। हम लोकतंत्रात्मक जीवन-क्रम अपनाने के लिये वचन बद्ध हैं और समाजवादी ढांचे में अपने समाज को ढालने के लिये इस सदन के समस्त सदस्यगण के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता होगी। आज जो इस सरकार की स्थिति है इन पर लक्षित करती है और हमारे राज्यपाल महोदय के इन विचारों के लिये मैं आपसे अपील करता हूं कि आप लोग, जहां तक हो सके, अपना सहयोग दें। आप 'भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार' की बातें करते हैं। मैं यह कहूंगा कि भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये हम आपसे सहयोग चाहते हैं। इधर बैठने वाले सभी भ्रष्टाचार को मिटाना चाहते हैं, लेकिन आप हमारी लिमिटेशन को समझने की कोशिश करें। आज हमको किसी भी व्यक्ति को कानून के अनुसार ही सजा देनी पड़ती है। यह तो नहीं हो सकता कि हम किसी से नाराज होकर किसी का गला काट दें, तो वह तो हम कर नहीं सकते। आप कानून के अनुसार बतावें जिसको सहर्ष स्वीकार किया जायेगा। हम यह भी आपको कहना चाहते हैं कि ताकत से, मन-माने तरीकों से कुछ नहीं कर सकते।

हम यह नहीं कह सकते कि सभी अफसर चोर हैं। इसलिए यह भी आवश्यक है कि जो ईमानदार और अच्छे अफसर हैं उनकी तारीफ करें। यह नहीं कि हर एक आदमी के खिलाफ शिकायत हो। जिस व्यक्ति के साथ खिलाफ सुबूत हो उसको सजा दी जा सकती है। हम उसके खिलाफ कड़ाई और मजबूती के साथ कदम उठा सकते हैं। इसलिए हमको आपकी मदद और सहयोग की आवश्यकता है। और वह कानून के जरिये। मैं समझता हूं कि कर-प्शन के खिलाफ आप लोग उसे मिटाने के लिये हाथ बटावेंगे।

श्री अब्दुलजब्बार : (निम्बाहेड़ा) ओन ए पोइन्ट ऑफ ऑर्डर, सर....

श्री ज्वालाप्रसाद : इन शब्दों के साथ मैं राज्यपाल महोदय को धन्यवाद का प्रस्ताव देने के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मानसिंह महार (आमेर): माननीय अध्यक्ष

श्री अध्यक्ष : Order please !

श्री अब्दुलजब्बार : यह जो पब्लिक के साथ सहयोग के प्रसंग को बार बार दोहराया जाता है इसके लिये मैं हमारे माननीय सदस्य से जानना चाहता हूं कि जयपुर में जिस कॉन्स्टेबल को ठोकर से मारा गया महरबानी करके उसके लिये तो आप जो कुछ करें कि किस तरह से एक इन्सान को ठोकर से उड़ाया गया?

श्री अध्यक्ष : There is no point of order. यह कोई पोइन्ट ऑफ ऑर्डर नहीं है।

श्री अध्यक्ष : श्री मानसिंह महार।

श्री मानसिंह महार (आमेर) : माननीय अध्यक्ष, सदन के समक्ष मैं अपनी पार्टी के विचार रखना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, मैं पहले सदन के सभी मित्रों से अपील करना चाहता हूं कि सदन में कल से कुछ ऐसा वातावरण बना है कि जो एक विधान सभा के लिये कोई अच्छा नहीं कहा जा सकता। इसलिये मैं सब मित्रों से अपील करूंगा कि अपने भाषणों के स्तर हम लोगों के चुनाव के भाषणों की तरह या सुरमा, काजल बेचने वालों की तरह, बाजारी भाषण होते हैं उनको न रख कर उच्च स्तर के भाषण करें। मैं दंग रह गया, मैं नहीं जानता था कि जब जागीरदारियें खत्म हो गईं, राजा और महाराजा खत्म हो गये, ये पुरानी बातें हो गईं। मैं नहीं जानता था कि हमको इस सदन में मुगल काल या मौर्य काल की बात करनी होगी। मैं समझता हूँ कि हमारे साथ हमारी जागीरें गईं, राजाओं के राज्य गये, अब तो हमारा पीछा छूट गया होगा इन आलोचनाओं से। हम समझते थे कि कम से कम सरकारी पक्ष तो जागीरदारों और राजाओं की बड़ाई करेगा। मैं यह उम्मीद करता था कि जिन लोगों के रूसी लाल चश्मा लगा है, जो अपने आप को लाल कहते हैं, जो देश को खून से लाल रंगना चाहते हैं, वे कुछ भी कहें, मुझे उस पर दुख नहीं होता। लेकिन सरकारी पक्ष की ओर से कहा गया जिसके लिये राजा-महाराजाओं ने जबर्दस्त त्याग किया....

एक माननीय सदस्य : आपको उसके लिये चिन्ता हो रही है क्या?

श्री मानसिंह महार : आप घबराइये नहीं....

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्य से निवेदन करूंगा कि इस तरह से बार बार इन्टरप्शन न करें। कभी कभी करें तो उसका असर पड़ता है, लेकिन हर ५-१० मिनट में सदस्य खड़े होकर बोल जाते हैं, यह बिल्कुल अनुचित चीज है।

श्री मानसिंह महार : मैं अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये सदन के नेता से अपील करता हूँ कि राजा-महाराजाओं को समाप्त करने में आपको इस दिशा में एक खून का कतरा तक नहीं बहाना पड़ा, आपको कुछ नहीं करना पड़ा, उन्होंने खुद ने सत्ता छोड़ दी। इसके लिये तो गवाह सरदार पटेल जैसे आदमी हैं। आपने सदन में बैठ कर कानून बना दिया और उसको हमने सहर्ष स्वीकार किया, इसको जानते हुए भी आपके साथी से ऐसी बात कहलाते हैं तो मुझे बड़ा दुख होता है।

मैंने कह दिया कि अगर हमारे लाल चश्मेवाले साथी ऐसी बातें कहें तो मुझे कोई मलाल नहीं क्योंकि वे लोग हमारे देश में अराजकता लाना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि हमारे देश में लड़ाइयां हों, खून बहे क्योंकि लड़ाइयां चलें तो उनका दाव लगता है। वे

(श्री मानसिंह महार)

कितना ही कुछ कहें, पर शान्तिपूर्ण वातावरण हम यहां बनाये रखें, यह हमारा परम कर्त्तव्य है ! हम भारतवर्ष के नागरिक हैं, हम अपने आपको भारत का नागरिक पहले मानते हैं, इसके बाद अपने स्वार्थों की बात सोचते हैं, हम सब से पहले भारत के नागरिक हैं। मैं सरकार को विश्वास दिलाता हूं कि हम चाहें स्वतन्त्र पार्टी से जीतें या कहीं से जीतें; हमें हमारे देश में पूरा विश्वास है, हम हमारे देश के स्वाभिभक्त हैं। हम उनको बता देना चाहते हैं जिनको कि रूस से या दूसरे देशों से प्रेरणा मिलती है, हम ऐसे आदमियों से कोई बात सुनने को तैयार नहीं हैं। हमें तो दुख उन बैंचों का है, हमारे मुख्य मंत्रीजी बैठे बैठे उन बैंचों से ऐसी बातें कहलवाते हैं कि रूस में जिस तरह जारों की मुंडियां काट काट कर दरख्तों में लटकाई गईं उसी तरह भारतवर्ष में भी होता। मैं कहता हूं जारों की मुंडियां लटकाईं तो वह कोई खूबसूरती की बात नहीं थी, अच्छी बात नहीं थी। अरे आप तो कांग्रेस सदस्य हैं, आप लोग तो महात्माजी के चेले हैं, कोई महात्मा गांधी का चेला होकर जार की बात कांग्रेस बैंच से करता है तो दुख होता है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि सदन में इस तरह की बातें की जाती हैं ....

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : ओन ए पोइन्ट ऑफ क्लेरिफिकेशन, सर ....

श्री अध्यक्ष : Order ! Order !! No, Interruption Please.

श्री मानसिंह : मुझे बड़ा दुख होता है जब ऐसी बातें सुनता हूं। जिस दिन से मैं चुनाव जीत कर आया था निश्चित धारणा लेकर आया था कि कन्स्ट्रक्टिव सजेशन्स दूं, सुझाव दूं; पर मैंने तो देखा कि यहां राजाओं के जमाने की बातें की जाती हैं। अगर महारावल डूंगरपुर हमारे नेता चुने गये, अगर महारानी गायत्रीदेवी लोक सभा का चुनाव जीत गईं, महाराजा झालावाड़ कांग्रेस सीट से जीत कर आये तो क्या अन्याय हो गया, क्या हमने जुर्म कर दिया; मैं तो कहता हूं, यदि साम्यवादी प्लेटफॉर्म से चुनाव लड़ते तो अच्छे हो जाते, लाल चश्मा पहने हुए रायसिंहनगर, गंगानगर से चुनाव जीत कर आये उनके पास सैकड़ों मुरब्बा जमीन है। उनके पास है तो हमें खुशी है। हम तो हमारे देश को खुशहाल देखना चाहते हैं। हम नहीं चाहते कि हमारा देश बर्बाद हो, पर वे हमारे देश की बर्बादी की बात कहते हैं। तो मैं उस तरफ बैठे माननीय मित्रों से कहना चाहता हूं कि कुछ लोग हमारे देश को सेबोटेज करके बर्बाद करना चाहते हैं। मैं कहता हूं, आप उनके भुलावे में मत आइये, उनकी इन मोटी-मोटी भुलावों की बातों में मत आइये। यह पहला मौका है कि मैं उनको भी चेतावनी देता हूं कि वे कभी इधर हाथ करते है कभी उधर हाथ करते हैं और हमारे सदन में बीच में विराजमान हैं। यह भी हमारे संविधान की तारीफ है। रूस में वे लोग नहीं बैठ पायेंगे, उनको रूस में गोली से उड़ा दिया जायगा। यह तो हमारे संविधान की तारीफ है कि उनको मौका दिया जा रहा है। मुझे दुख है कि वे इस प्रकार जनता को भुलावे में डालना चाहते हैं। ये चन्द बातें कह कर उस ओर बैठे हुए मेरे मित्रों से, चाहे वे कांकरौली से आये हों,

(श्री मानसिंह महार)

चाहे नसीराबाद से आये हों उनसे अपील करूंगा कि अपने भाषण के स्तर को ऊंचा उठावें, वे समझें कि विधान सभा में आये हैं, भाई भाई की तरह काम करने आये हैं, आपसी दुश्मनियां निकालने के लिये नहीं आये हैं। यह सच है, टाटा मर्सेडीज़ नहीं मिली, बैलगाड़ी ही रह गई। बैलगाड़ी में बैठें, उन को मोटर नहीं दी, इसके लिये मैं सदन के नेता को मुबारिकबाद देता हूं।

अब मैं निवेदन करूं अध्यक्ष महोदय, मैं उस पुराने इतिहास के बारे में नहीं कहना चाहता। मैं सभी भाइयों करबद्ध प्रार्थना करना चाहता हूं कि हमको जागीरदार, राजा–महाराजा मत समझिये; हम तो आप जैसे ही नागरिक हैं। प्रिवीपर्स को बन्द करना, यह इस सदन के अख्तियार की बात नहीं। कांग्रेस पार्टी चाहेगी तो दिल्ली में तय हो जायगा। आपने समझौता किया, अब आप अपनी जबान तोड़ना चाहते हैं तो शौक से तोड़िये। सरकार तो वही है जो अपनी जबान पर अडिग रखे। जो सरकार आज कुछ कहे, कल कुछ कहे, वह सरकार सरकार नहीं। मैं सदन के सभी माननीय सदस्यों से प्रार्थना करूंगा कि जो राजा–महाराजा, जागीरदार आदि को बू जिनके दिमाग में घुसी हुई है उसको छोड़ दें, हम तो सीधे–सादे एम. एल.-ए. हैं विधान सभा के, हम कोई हौवा नहीं हैं।

यदि यह कहा जाय कि राजाओं के जमाने में आदमी मारे गये, मैं यह बताना चाहूंगा कि हमारी इस सरकार का राज हुआ तो २७ आदमी गोली से मार दिये गये आज तक, तो क्या बात हुई ? राजा होता है वह मारेगा, सत्ता पर बैठेगा वह मारेगा ही। महारावल डूंगरपुर के यहां २ आदमी मार दिये गये, महाराज हुकमसिंह के यहाँ जैसलमेर में एक आदमी मरा होगा, हमारे सदन के नेता के युग में, इनके प्रिडिसेसर के युग में २७ आदमी गोली से मार दिये गये।....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : मेरे युग में गोली से एक भी नहीं मारा गया।

श्री भैरोंसिंह : कांग्रेस के शासनकाल में मारे गये।

श्री जोधसिंह (गिरवा) : सुवाणा काण्ड आपको याद दिलाता है।

श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : डूंगरपुर जिले में १२ आदमी मारे गये और गोली से मारे गये, इसको मैं साबित कर सकता हूं।

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा....

श्री लक्ष्मणसिंह : मैं व्यक्ति गत रूप से अपने लिये कुछ नहीं कहता, पर मेरे २० वर्ष के गद्दी के काल में दो आदमी मारे गये, इसका मुझे मलाल है; पर स्वतंत्रता के पश्चात् डूंगरपुर जिले में बंदूक से १२ आदमी गोली वार करके मार दिये गये।

श्री मानसिंह महार : माननीय अध्यक्ष, मैं निवेदन कर रहा था कि राज्य जिसके पास होता है तो राज्य को सही तरीके से चलाने के लिए यह सब कुछ करना पड़ता है। मैं तो

Page No 26

(श्री मानसिंह महार)

सदन के नेता की तारीफ करता हूं कि डूंगरपुर में १२ आदमी मारे, करना पड़ता है। कांग्रेस की सरकार बनने के बाद में २७ आदमी गोली से मार दिए गये, हमारे नेता ने भी कहा; उनके युग में दो आदमी मारे गए....

एक माननीय सदस्य : डकैत मारे गए।

श्री मानसिंह महार : डकैत तो मारे जायेंगे, उस दिन हमारे कई मित्र मारे जायेंगे। सही डकैत अभी नहीं मारे गये जो जनता को लूट रहे हैं। वे अभी तक नहीं मारे गये।

एक माननीय सदस्य : तीसरे युग में मारे जायेंगे।

श्री मानसिंह महार : तीसरे युग की बात करते हैं। तीसरा युग रूस में देख लिया, हंगेरी में देख लिया; हम तो देखना नहीं चाहते क्योंकि हमें तो सीधा गोली से पटाक उड़ा दिया जायगा।

एक माननीय सदस्य : गुनाह करनेवाले मारे जायेंगे।

रावत श्री मानसिंह महार : गुनाह करने वाले वहां नहीं मारे जाते, विरोधी मारे जाते हैं। यहां तो राजाओं के युग में जिन्दा बैठे हैं, आपका युग आयेगा तो वे भी जिन्दा नहीं रहेंगे और हम भी जिन्दा नहीं रहेंगे। मैं मानता हूँ, मैं खुद मानता हूँ। आपकी इमानदारी की बात करता हूँ। चुनाव कुछ जगह बड़ी इमानदारी से हुए। यह स्वीपिंग रिमार्क कस देना कि राजस्थान भर में चुनावों में अनियमिततायें हुई, बेईमानियां हुई, मैं इसको नहीं मानता। मैं यह मानता हूँ कि अच्छे ढंग से चुनाव हुए और गवर्नर महोदय ने अच्छा काम किया। सरकारी स्टाफ को धन्यवाद दिया, हम उसके विरोध में नहीं हैं। लेकिन कुछ टापू ऐसे थे, भरतपुर से आने वाले माननीय मित्र की अन्दरुनी आत्मा की आवाज दी, बात थी कि वहां पर चुनावों के दौरान में ज्यादतियां हुईं। अब मैं महत्वपूर्ण चुनाव जो मालपुरा में हुए उनकी ओर आना चाहता हूं।

श्री भैरोंसिंह : मालपुरा की याद मत दिलाइये। कांकरोली से आने वाले माननीय सदस्य को तकलीफ होगी।

श्री निरंजननाथ आचार्य (राजसमन्द) : डूंगरपुर में एक दफा हो चुका है।

श्री मानसिंह महार : मालपुरा की ट्रेजेडी के लिए मैं निवेदन तो नहीं करना चाहता क्योंकि उससे मुझे भी दुख होता है। मेरे भी मित्र हैं। मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं। मैं उधर देखता हूँ तो मुझे दुख होता है।

बातें कही गई हैं। मुझे बोलना पड़ता है। मालपुरा में जबरदस्त अन्याय हुआ। पर्टीक्युलर कौन्स्टिट्युएन्सी को लेकर कुछ बातें हैं, जो मैं आपके जरिये सदन के

(श्री मानसिंह महार)

समझ रखता हूँ और उस तरफ बैठने वाले माननीय सदस्यों से आशा करूंगा कि वे इस बात को देखें कि मालपुरा में अन्याय क्यों हुआ। हम चाहते हैं कि अन्याय दोहरायें नहीं। चुनाव खत्म हुए हैं। मालपुरा क्षेत्र ऐसा है, अध्यक्ष महोदय, जहां चुनावों के दौरान में चार लाख रुपयों की जमानतें ली गई और चार लाख रुपयों की जमानतें ब्रीच ऑफ पीस की ली गई और वे भी खाली स्वतन्त्र पार्टी वालों की ली गई। यदि ब्रीच ऑफ पीस का अन्देशा हो सकता था तो चार लाख की जमानतें जहां हमारे पक्ष वालों की ली गई वहां दूसरे पक्ष वालों की कम से कम ५० हजार, २० हजार की तो ली गई होती। कोई मन्त्री महोदय इसकी जांच करेंगे तो बतायेंगे कि वह दौर खत्म नहीं हुआ है। मालपुरा में नये नये केस चल रहे हैं। मैं मिसाल दूंगा।

एस. डी. ओ. मालपुरा हैं विशम्भरसिंहजी जो यू. पी सरकार से मांगे जा रहे हैं। जब धौलपुर में वे एस. डी. ओ. थे तो चावल की मोटर का गलत परमिट काटा करते थे। उनको उस सिलसिले में यू. पी. सरकार मुद्दतों से मांग रही है। मुमकिन है गलत होगा, मैं नहीं कहता कि जानबूझ कर कर रहे हैं। हो सकता है कि मालपुरा में हारने वाले माननीय सदस्य ने उस केस को दबा दिया होगा। वे राजस्व मंत्री थे। अब तो सरकार जांच करेगी और उस केस में उनको हैंड ओवर कर देगी तो दिक्कत मिट जावेगी। वे इस वक्त भी इस ख्याल में हैं कि अन्याय करूंगा तो वहां पर नहीं भेजा जाऊंगा और न्याय करूंगा तो वहां भेज दिया जाऊंगा। तो ऐसी बात नहीं करनी चाहिये; सरकार को और यू. पी. गवर्नमेंट को उस केस में उनको सौंप देना चाहिये। दबाव में न आये पहले इसीलिए आये।

सरकारी अफसरों के लिए कहता हूं कि हमें गर्व है सरकारी अफसरों पर। कुछ आदमी ऐसे हो सकते हैं जो कुछ गलतियां कर रहे हों, लेकिन बहुत से आदमी ऐसे हैं जो निहायत ईमानदार हैं और मैं उनकी तारीफ करना चाहता हूं। विरोधी पक्ष में बैठे हैं लेकिन स्वतन्त्र पार्टी नहीं चाहती कि ईमानदार आदमी को ठेस पहुंचाई जायें। सरकारी नौकरों का क्या? मजबूर करते हैं तो वे करते हैं। यदि ईमानदारी से प्रमोशन दें और उनका तबादला करें तो क्यों सरकारी नौकर दबेंगे? यदि बेईमानी और पक्षपात कराया जाता है तो उधर बैठने वाले इतने जिम्मेदार हैं। हम नहीं कहते हैं कि हम नहीं हैं लेकिन उधर बैठने वाले ट्रेज़री बेन्चेज़ वाले हैं और उनको अपील करना चाहता हूं कि अफसर आठ-सात आदमियों की लुगाई थे तो अब १६ की लुगाई बन गये और मिनिस्टर महोदय का दबाव होगा तो कितनों का दबाव मानेगी? आपके जरिये अध्यक्ष महोदय, मैं नेता महोदय से अपील करूंगा कि यदि सरकारी अफसरों पर दबाव करते हैं उस पर अंकुश कर लें तो राजस्थान का भला होगा। मैं स्वतन्त्र पार्टी की ओर से सुझाव देना चाहता हूं कि स्वतन्त्रता से काम करें और पॉलिसी को ही डिक्टेट करें। एक एक पटवारी या चपरासी के तबादले में मंत्री खुद इन्टरफियर करते हैं, जैसे एक वैद का तबादला आयुर्वेद मंत्री

(श्री मानसिंह महार)

महोदय ने इन्टरफियर करके रुकवा दिया और दो महीने तक मेरे गांव में वैद्य नहीं भेजा। मैं इसका विश्लेषण तो आगे करूंगा, लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि ऐसे आदमी को फिर आयुर्वेद डिपार्टमेन्ट दे दिया। यदि योग्य आदमी को देते तो वह बढ़ता। मेडिकल एण्ड हैल्थ को जब मैं देखता हूँ तो मेरी आत्मा में तसल्ली होती है कि अच्छे आदमी के हाथ में दिया। आयुर्वेद को जब देखता हूँ तो लगता है फूट गये हमारे कर्म। मैं नामजद न कह कर केवल इन्स्टान्सेज़ दूंगा। जब इन्स्टान्सेज़ दिये जाते हैं तो उनको खत्ते में डाल दिया जाता है। दो-चार, हजार, दो हजार इन्स्टान्सेज़ दे सकता हूं और प्रार्थना करता हूं कि न्यायपूर्वक तरीके से जांच कीजिये। आयुर्वेद मंत्रीजी की कृपा से उनके इन्टरफियरेन्स से दो महीने तक वैद्य मेरे गांव में नहीं पहुंच सका। आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप जांच करें। ट्रान्सफर्स जातीयता के तौर पर कैंसिल हुए और आयुर्वेद मंत्री ने डाइरेक्ट इन्टरफियर किया और आयुर्वेद मन्त्री इन्टरफियर करें, यह राजस्थान के लिए शर्म की बात रहती है और फिर उनको यह महकमा दे दिया; यह और भी शर्म की बात है।

मैं चुनावों की बात कह रहा था। दूसरा, मालपुरा में अन्याय किया वे हैं रामसिंह डिप्टी एस. पी.। उनका भी नमूना पेश कर दूं।

श्री निरंजननाथ आचार्य : Point of Order, Sir. So far as the debate pertaining to the Governor's Address is concerned we have certain rules and regulations about it. I would like to quate from the observations of Chair:

"...what is desired under the parliamentary convention is to make a general criticism of the whole policy of the Government which is enunciated by way of the speech of the the Rajpramukh. The Hon'ble memberis no doubt entitled to contre on a particular point. But the citing of instances will be more appropriate when the particular demand comes."

श्री मानसिंह महार : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने सुन लिया जो कुछ माननीय सदस्य ने फरमाया है, लेकिन मैं एक पर्टीकुलर पोइन्ट को स्ट्रेस कर रहा हूं। मैं बता रहा हूं कि मालपुरा में क्या अन्याय हुआ है और जब तक मैं अन्याय का विश्लेषण नहीं करूंगा माननीय सदस्यों के और सदन के साथ और सरकार के साथ में धोखा करता हूं। मैं सरकार को और सदन को बताना चाहता हूं कि क्या अन्याय हुआ है? डिप्टी एस. पी., मालपुरा को जब आर. पी. एस. की लिस्ट बन रही थी तो उस समय उनको रिजेक्ट कर दिया गया था, लेकिन उन्होंने डाइरेक्टली, विदाउट थ्रू प्रोपर चैनल, पी. एस. सी. को भूतपूर्व राजस्व मंत्री के इशारे पर अप्लाई किया और वे आर. पी. एस. में आ गये। वे इतने आभारी हैं भूतपूर्व राजस्व मन्त्री के। मैं नहीं कहता आपके हैं, इसलिए उन्होंने अन्धाधुन्ध काम किया। नये गृह मंत्री भी आ गये, वह भाई-भतीजावाद तो खत्म हो गया। मैं कहता हूँ कि काबिल दिमाग आदमी आयें। वे काम तो करें। जनता यह नहीं कहती कि किनको ले

(श्री मानसिंह महार)

जाकर बैठा दिया आपने। यह बात नहीं समझती, अध्यक्ष महोदय।

यह इनकी हालत है साहब। अगर आप इसके डिटेल्स चाहेंगे तो मैं सब फर्निश करने को तैयार हूं। इसके बाद अध्यक्ष महोदय, नानूसिंहजी सब इन्सपेक्टर हैं जिनके भाई को २००–३०० बीघा जमीन दी गई। तो इस तरह से वे तो उनके मातहत के नौकर हैं, इसलिए उन्होंने इतनी बेईमानियां कीं और इतने अन्याय हुए। महाराज कुमार साहब की जब सिक्योरिटी के रुपये जमा कराना चाहा तो वे जमा किए नहीं, बड़ी मुश्किल से यहां से वकील वगैरह गये, दो–तीन घण्टे के बाद उनके रुपये जमा किए गए। अध्यक्ष महोदय, इस प्रकार कितने ही अन्याय वहां हुए, उन सब को मैं दोहराना नहीं चाहता। मालपुरा की ट्रेजेडी को तरफ अब हम आंख मींचना चाहते हैं, लेकिन कांकरोली से आने वाले माननीय सदस्य ने कुछ ऐसी बातें कहीं जिनकी वजह से मुझे भी इतना कहना पड़ा।

श्री भैरोंसिंह : कांकरोली और मालपुरा का क्या सम्बन्ध है ?

श्री मानसिंह महार : राजस्थान में साला–बहनोई, भाई–भतीजे का सम्बन्ध रहता ही है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अब साले-बहनोई कहां रहे हैं ?

श्री मानसिंह महार : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था चुनावों के बारे में। इस तरह से मालपुरा का जिस तरह से केस हुआ है उसी तरह उनकी जगह इस प्रकार के मामले हुए हैं; उसके लिये मैं माननीय गृह मंत्रीजी से प्रार्थना करूंगा कि ऐसी जो बातें हैं उनको रोकने की कोशिश करें। संग्रामपुरा का नाम लिख लीजिये, मैं इसके डिटेल्स फिर आपके नजर कर दूंगा। अगर आप इतनी सहानुभूति रखते हैं तो हम तो आपके पास दिन–रात हाजिर हो जायेंगे, आपको सहयोग देने के लिए। यही हुआ मालपुरा में भी····

श्री लक्ष्मणसिंह : हमारे सामने निष्पक्षता का प्रश्न है, सिद्धान्त का प्रश्न है।

श्री मानसिंह महार : निष्पक्षता तो दूर रही, ये हमारी सुन लेंगे और उस पर कुछ कार्यवाही कर लेंगे तो उससे ही हम खुश हैं। अध्यक्ष महोदय, हमने जितनी शिकायतें कीं उन पर लोगों को प्रोमोशन दिया गया। हम तो यह चाहते हैं कि आप न्याय करें। इसके और डिटेल्स मैं बजट के समय प्रस्तुत करूंगा।

अब मैं तीसरे मुद्दे पर आता हूँ, वह है डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन का। अध्यक्ष महोदय, आज से दो–तीन वर्ष पहले राजस्थान में डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन का श्रीगणेश हुआ। मुझे बड़ी खुशी हुई अध्यक्ष महोदय, मैं अपने गांव में बैठा सुना करता था, हमारे यहां डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन हो गया, सारी सत्ता गांवों को मिल गई है। मैं बड़ा खुश हुआ, कम से कम सत्ता चाहे न मिलें; हमारे मुख्य मन्त्री की सारे भारतवर्ष में खूब तारीफ हुई, खूब शोहरत हुई कि उन्होंने सर्व प्रथम अपने प्रान्त में डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन की शुरूआत की। इसके लिए वे हमारी भी बधाई के पात्र हैं। इसके साथ साथ छोटा

(श्री मानसिंह महार)

सा निवेदन और कर दूं कि इस डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन में जितनी जबरदस्त हत्या हमारे मुख्य सचिव महोदय ने की उससे बड़ा दुख हुआ। मुख्य मन्त्री ने तो इसकी शुरूआत की, लेकिन राजस्थान के मुख्य सचिव ने इसकी भ्रूण हत्या ही कर दी........

श्री अध्यक्ष : आप सरकार की नीति पर ही बोलें, किसी अधिकारी वर्ग का नाम न लें।

श्री मानसिंह महार : अध्यक्ष महोदय, मैं भी नाम लेना नहीं चाहता, लेकिन आखिर मुझे अर्ज करना पड़ ही जाता है। जहां विकास अधिकारियों के अपोइन्टमेन्ट्स हुए उन अपाइन्टमेन्ट्स में इतना जबरदस्त अन्याय हुआ है जिसकी कोई हद नहीं। अध्यक्ष महोदय, इसके उदाहरण आपके सामने पेश करूंगा। जिस डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन के जरिए पंचों को परमेश्वर बना दिया गया, जिस प्रकार न्याय पंचायतों को कायम किया गया उसके अन्दर क्या क्या नहीं हुआ उसकी मिसालें भारतवर्ष ही क्या, दुनिया भर में नहीं मिलेंगी। जिस डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइज़ेशन की दुनिया भर में तारीफ हुई, जिसके लिए लोगों ने हमारे मुख्य मन्त्री महोदय के तारीफ के पुल बांध दिए। उन पंचायतों के सरपंचों की क्या हालत है; उसका मैं इस छोटे से पुर्जे द्वारा बताने की कोशिश करूंगा। अध्यक्ष महोदय, हमसे कहा जाता है कि हमने सत्ता का विकेन्द्रीकरण कर दिया। मैं उसका एक उदाहरण सदन के सामने रखूंगा। एक अध्यापक थे। उनके लिए सरपंच ने लिख दिया पंचायत की तरफ से कि आपके स्कूल में पढ़ाई ठीक नहीं होती; बराये महरबानी बच्चों की ओर अधिक ध्यान दिया कीजिये। इस पर उस सरपंच को जो जवाब मिलता है वह इस प्रकार है:—

"पंचायत जयसिंहपुरा शेखावतान स्कूल में पढ़ाई ठीक न होने की वजह से जो सूचना दी वह प्राप्त की।" यह है डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रेलाइजेशन का नमूना। वे लिखते हैं "आप इस बात को भली प्रकार, जान जावें कि बन्दर को अदरख मिल जाने पर उसके स्वाद का आस्वादन नहीं कर सकता।" इस तरह से हम सरपंच लोग बन्दर हैं। वे आगे लिखते हैं मैं आपको यह बता दूं, यहां पढ़ाई कैसी होती है, इस बात को आप क्या जाने? आजकल की पढ़ाई में और तुम्हारी पुरानी पढ़ाई में दिन रात का अन्तर है। हम बेसिक पद्धति से पढ़ाते हैं इसलिये आज तो आपने जवाबदारी मांगी है, आयन्दा इस बात का ध्यान रखें कि अगर आपको कुछ भी शिकायत करनी हो तो वह आमेर जाकर करें। इस प्रकार के सरकारी मामलों में आपके विचार करने का अधिकार नहीं है। आप जनता के मामलों में विचार सकते हैं। ध्यान रखना, आगे से मास्टरों की बात कहने-सुनने के लिये कार्यालय, आमेर से बात करें और उनके द्वारा पत्र देवें। आप अपने दिमाग में यह बू भले ही रखते हो। नीचे दस्तखत हैं, "हरिनारायण शर्मा, अध्यापक।"

अध्यक्ष महोदय, यह है डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइजेशन का नमूना! जिसके

(श्री मानसिंह महार)

अनुसार शिक्षा पंचायत समितियों को दे दी गई, जिसमें सब कुछ हो गया । उसका एक नमूना आपके सामने रखा । अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा हो तो यह नमूना आपको हाजिर करूं या मुख्य मन्त्री महोदय को नजर करूं । आज तक उस अध्यापक के खिलाफ एक्शन नहीं । इसके अलावा और भी नमूने पेश करूंगा । कट मोशन्स के समय इस डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइज़ेशन के नाम पर क्या काम हो रहा है ? अध्यक्ष महोदय, यह भी सुना कि समितियों को बहुत पॉवर्स दे दिये गये । पहले तो मैंने चुनाव नहीं लड़ा, लेकिन जब सुना कि पॉवर्स और दे दिये गये हैं इसलिये मैंने भी चुनाव लड़ा और मैं एक पंचायत समिति का सरपंच चुना गया । अध्यक्ष महोदय, मैं अपने तजुर्बे से अर्ज करता हूं, यह एक ढकोसला मात्र है, पार्टी विशेष के आदमियों की जेबें भरने का तरीका है, मैं सही अर्ज़ कर रहा हूं । आपके जरिये सभी सदस्यों को बतादूं कि डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइज़ेशन बिल्कुल पार्टी विशेष के आदमियों के लिये बनाया हुआ है ।

गोविन्दगढ़ पंचायत समिति के बारे में निवेदन करूं कि वहां के बी० डी० ओ० प्रधानजी को अपने चपरासी से भी नीचा मानते हैं । इनका इतना हौंसला इसलिये है कि ये एक बहुत बड़े ऑफिसर के कुंवर हैं, उनके सुपुत्र हैं । अध्यक्ष महोदय, इन्होंने एक इतनी बड़ी गलती की । २५ हजार रुपये की एक बिल्डिंग बिना जमीन एक्वायर किये जबरदस्ती कब्जा करके बनवा दी । बहरहाल उस जमीन पर लीगली कब्जा बिल्डिंग बनने के तीन महीने बाद हुआ । सभी अधिकारी, तहसीलदार, एस० डी० ओ०; सबने मिल कर २५ हजार की बिल्डिंग बनवा दी, कहीं पर भी उसकी सुनवाई नहीं हुई । यह एक नजीर बता कर मैं निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसे अफसरों को आप सस्पेन्ड करिये । अगर मैं गलत कहता हूं तो आप मुझे हाऊस से सस्पेन्ड करिये, मैं गलती की सजा भुगतने को तैयार हूं । मैं सही बात कहता हूं और ट्रेज़री बैन्चेज़ पर बैठने वाले सभी माननीय सदस्यों से विनम्र शब्दों में निवेदन करूंगा और प्रार्थना करूंगा कि आप अपने एडमिनिस्ट्रेशन के स्तर को ऊंचा उठावें । ऐसे आदमियों को, गद्दारों को सस्पेन्ड कीजिये और उनके खिलाफ इन्क्वायरी इन्स्टीट्यूट करिये । ऐसा ऐसा अन्याय ! मैं तो एक समिति का मेम्बर हूं और अन्याय को जानता हूं, इसलिये बता रहा हूं ।

एक नया नमूना । मैं कहना नहीं चाहता, लेकिन कल ही शाम को पब्लिक मीटिंग के टाइम पर रेगरों ने बताया कि सांगानेर के विकास अधिकारी महोदय यह कहते हैं कि अब तुम्हें समाज सेवा विभाग से रकम नहीं मिलेगी क्योंकि तुमने महारानी गायत्री देवी को वोट दे दिया । जाओ अब तो राजमहल से रकम लो । चुनाव हो गया । अब ऐसी ओछी, नीची बातें नहीं करनी चाहिये । मुझे दुख होता है जब इस सदन में मुझे ऐसी बातों के बारे में कहना पड़ता है । मैं किसी का नाम नहीं लूंगा । मुझे दुख होता है और मैं माननीय मुख्य मन्त्री से अपील करूंगा कि वे इस बात को यहीं रख कर उनको समझा दें । पर उनसे करबद्ध प्रार्थना करूंगा कि वे समझा जरूर दें । ऐसी बात सरकारी अफसरों को नहीं

(श्री मानसिंह महार)

करनी चाहिये । भावावेश में गलती हो गई तो वह अब रेक्टिफाई तो नहीं हो सकती । हम तो आपको सहयोग देने को आये हैं। सहयोग देंगे हर बात में । कभी हम गलत बात नहीं करेंगे । पर उस हमारे सहयोग को आप चाहें तो इन छोटी-मोटी ओछी बातों में आप भी नहीं पड़ने का सहयोग हमें दें ।

तो यह डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइज़ेशन की बात है ; गलत ढंग से हो रही है । चुनाव भी होते हैं पंच, सरपंच भी चुने जाते हैं, समितियां भी बनती हैं, सब होता है पर ईमानदारी की बात कहता हूं और यह बात कहने का सब से बड़ा कारण यह है अध्यक्ष महोदय, कि यह भी मेरा एक कन्सट्रक्टिव सुझाव है कि ब्लॉक्स के अन्दर जो आदमी नौकर हैं उनको अधिकारी नाम के बजाय अगर कोई नीचा नाम दे दिया जाता तो शायद वे काम करते । लेकिन वहां पर तो जब हम देखते हैं तो सब अधिकारी ही अधिकारी पाये जाते हैं; कौन से प्रसार अधिकारी और कौनसे प्रसार अधिकारी यानी वे सब अपने को अधिकारी ही अधिकारी समझने लगे हैं, तनख्वाह चाहे उनको सौ, सवा सौ ही मिलती हो, पर बू आ गई उनमें अधिकारी की । ग्राम सेवक है इस तरह से और कोई दूसरे नाम इनके आप रखिये तो ये कुछ काम करेंगे, नाम बदलिये । मैं सही कहता हूं कि उनके दिमाग में अधिकारी की बू बुरी तरह से घुस गई है और वे अपने को अधिकारी ही अधिकारी समझते हैं, जनता की सेवा नहीं करते ।

दूसरा सुझाव यह है कि प्रसार अधिकारी का या इस तरह से अधिकारी का नाम न रख कर और कोई नाम रख दीजिये ताकि वे जनता की सेवा करें । इस विषय में डिटेल में तो मैं बाद में अर्ज करूंगा, पर अभी तो चन्द बातें ही अर्ज कर रहा था । ये छोटी मोटी बातें हैं जो मैं डेवलपमेन्ट के बारे में अर्ज कर रहा था ।

जैसे कि हमारे नेता ने बताया कि कई जगह खड्डे खोदे गये और रुपया ले लिया । मैं तो अब भी, अध्यक्ष महोदय, ट्रेज़री बैन्चों से यह उम्मीद करता हूं कि उनमें से कोई यह कहे कि लाओ मिसालें दो; तो मैंने पहले भी दी हैं, पर वे मेरी सारी मिसालें खत्ते में गईं, कोई सुनवाई नहीं हुई और अब भी देने को तैयार हूं हजारों मिसालें । मैं तो कहता हूं, एक कमेटी बना दी जावे । मैं प्रार्थना करता हूं माननीय मुख्य मन्त्री से कि वे एक कमेटी बना दें और हमें मौका दिया जावे कि हम उस कमेटी को ले जाकर वास्तविक काम दिखाएं । आपसे लोगों ने पैसा ले लिया और काम ही नहीं हुआ । हमारे नेता ने कहा, चार कमरे बने और एक नहीं बना । मैं बताना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि वहां चार तो बने, वह तो बहुत काबलियत की बात हो गई । यहां तो कुछ काम नहीं हुआ और पैसा हजम हो गया । इस प्रकार की मिसालें मैंने दीं । कुआं नहीं बना और पैसा गया । तालाब नहीं बना और तालाब के लिये दिया गया पैसा गया । तो इस प्रकार की नजीरें चाहें आप तो मैं दूंगा, आपको गांव गांव में जाकर लाकर दूंगा । आप मुझे आने-जाने का टी० ए०, डी० ए० मत दीजिये; पर मुझे मौका दीजिये, मेरी बात सुनाने का और साबित करने का । मैं आपसे

Page No 33

(श्री मानसिंह महार)

यह प्रार्थना करता हूं कि हम जो शिकायत करें उसे आप न्यायपूर्वक सुनिये। हम आपसे न्याय चाहते हैं। अब भी जब मैं न्याय की बात कहता हूँ तो अध्यक्ष महोदय, मुझे दुख होता है कि ट्रेजरी बैंचेज का कोई मन्त्री यह कहने को तैयार नहीं कि न्याय देंगे। हे भगवान्! ऐसे अन्यायों के राज्य में कब तक रहना पड़ेगा ? हमारी यहां न्याय की मांग पर भी कोई यह नहीं कह सकता कि न्याय देंगे। मैं अब भी यही कहता हूं, आप एक कमीशन बैठाईये। आपके इस डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रे-लाइजेशन में इतना जबरदस्त अन्याय हुआ है जितना हिन्दुस्तान में और कहीं नहीं हुआ होगा। आप बैठाईये कमीशन, लेकिन यह ध्यान रखियेगा, हम जैसों को एक आध को साथ जरूर कर दीजिये। not as a member. हम मेम्बर-वेम्बर नहीं बनना चाहते हैं। टी० ए०, डी० ए० हमें मत दीजिये; हम तो अपने पास से खर्च करके चले जायेंगे, आप टी० ए०, डी० ए० उनको हो दीजिये, हम तो हाथ जोड़ कर यही कहेंगे कि हमें साथ जाने दीजिये और कहने दीजिये कि जो काम हुआ है वह कहां हुआ है, वह हमें बता दीजिये। इतनी सहायता हम सरकार की कर देंगे। वह तालाब और वह कुआं कहां है, यह बात बताने को चले जावेंगे। तो मैं आशा करूंगा कि मेरा यह कन्स्ट्रक्टिव सुझाव है। इन पंचायतों में, पंचायत समितियों में इस प्रकार की गड़बड़ियां हो रही हैं और इसका कारण भी मैं जानता हूं। यह महकमा हमारे मुख्य मन्त्री महोदय ने ऐसे अयोग्य हाथों में दे दिया था कि उन हाथों में यही क्या, जो कुछ भी हो जाता वही थोड़ा था। पर आपको मालूम है अध्यक्ष महोदय, कि इस महकमे में क्या क्या नहीं हो रहा है। आप भी जानते हैं। पर आप तो मौन हैं। पर आपके जरिये हमारी बात को हमें माननीय मन्त्रीजी को पहुंचाने दीजिये और हमको मौका दीजिये कि हम राजस्थान की जनता को बता सकें कि अब राजस्थान में इस प्रकार का आइन्दा अन्याय नहीं होगा और होगा तो तरकीब से होगा कि दस पर्सेन्ट या पांच पर्सेन्ट ले लिया। पर यह सारा ही हजम कर लिया, यह नहीं होगा। तो क्या मैं माननीय पंचायत मन्त्रीजी से उम्मीद करूं कि वे कुछ करेंगे ? उनमें गट्स नहीं दिखते, इसलिये आगे नहीं बोलता हूं। पर यह सही बात है और यह मेरा कन्स्ट्रक्टिव सुझाव है। फिर कहते हैं, तुम डेस्ट्रिक्टव बातें करते हो। मैं कहता हूँ, यह कन्स्ट्रिक्टिव बात है, आप कमीशन बनायें। विरोधी पक्ष के आदमियों को साथ रखिये। हमें टी० ए०, डी० ए० मत दीजिये। हम स्वत: अपने खर्चे से जावेंगे, आपके आदमी उनके साथ जावें, उनको भले ही आप टी. ए. डी. ए. दीजिये। पर हम अपने पास से खर्चा करेंगे। हमें तो साथ में जाने का मौका भर दीजिये, ताकि हम मौके पर जाकर बता सकें। डूंगरपुर, बांसवाड़ा के इलाके में इन मोटे-मोटे आदमियों ने किस तरह से लाखों रुपयों से अपनी जेबें भर ली हैं और यहां ३०३ लगा कर नेता बन बैठे हैं—यह भी बताऊंगा। हम और कुछ भी नहीं चाहते, हम न्याय चाहते हैं। हम इस सदन में आते हैं, हम जनता को धोखा नहीं दे सकते। हम सदन से न्याय चाहते हैं, आपसे न्याय चाहते

(श्री मानसिंह महार)

हैं। हम अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये ट्रेज़री बैन्चेज़ से न्याय चाहते हैं, हम और कुछ नहीं चाहते। हमारी मांग यह है कि जिन्होंने बेईमानियां की हैं, जिन्होंने गलत कार्यवाहियां की हैं आप उन पर अंकुश रखिये, उनको आप रोकिये। मिसालें अगर आप चाहेंगे तो हम इतनी देंगे कि आप दस कमीशनों से भी जांच पूरी नहीं करा पायेंगे! आप कमीशन बना कर तो देखिये।

आप कहते हैं डेवलपमेन्ट का काम आपके बिना रुक जावेगा, पंचवर्षीय योजनाएं नहीं चल पावेंगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ये हमारी योजनाएं नहीं रुकेंगी, हम तो इसमें आपके सहयोगी हैं। हम तो चाहते हैं कि आपकी योजनाएं इससे भी आगे बढ़ें। हम कभी यह नहीं चाहते कि आपकी योजनाएं असफल हों। पर जो असफल हुई हैं वे जिनमें करोड़ों अरबों, रुपया जनता की गाढ़ी कमाई का लगा दिया और विदेशों के कर्जे के नीचे भी जनता को दबा दिया, पर उसका रिटर्न कुछ भी नहीं है। हम उनको बंद करना चाहते हैं, यह बात नहीं। हम तो चाहते हैं कि इनका बहुत बड़ा हिस्सा जो भ्रष्टाचारियों की जेब में चला जाता है वह रुके और जिन योजनाओं के लिये यह पैसा है वह पूरा का पूरा उनके लिये काम आवे। हम नहीं चाहते योजनाएं रुकें। आप हमारे मुबारिकबाद के पात्र हैं। सरकार इसके लिये मुबारिकबाद की पात्र है, पर योजनाओं को योजनाबद्ध तरीके से चलायें, उसका पैसा उचित रीति से खर्च करें तो मुबारिकवादी सही तरीके से दे सकता हूँ। पर आप योजनाएं बनाते हैं, सब कुछ करते हैं पर वहां पर होता क्या है। इसको देखिए। इसकी जांच कराइये।

दूसरी बात, मैं निवेदन करूं। एक कमेटी हर पंचायत समिति में, और मैं तो कहता हूं कि जिला परिषद् में बनाइये। एक मैं सुझाव देता हूँ कि जो डेवलपमेंट का काम गांव में होता है उस पर एक अंकुश रखिये। कहीं पर मानसिंह महार गोविंदगढ़ ब्लॉक में प्रभावशाली आदमी है तो कहीं खड्डे में नहीं डाल दे पांच हजार रुपया ले जाकर इसका वह ध्यान रखे। मैं सही अर्ज कर दूं। जनतंत्र अभी बहुत बच्चा है। उसका अभी शैशव-काल है। इसमें पक्ष-पात भी होता है। इसमें कई तरीके होते हैं। तो कमेटी इस बात की भी जांच करे कि पैसा जो दिया जाता है वह सही ढंग से खर्च किया जाता है या नहीं, वह पैसा सही काम के लिये दिया जाता है या नहीं–इस ओर भी ध्यान दीजिये। आप सही कह रहे हैं, आपने स्कूलें खुलवा दीं, तालाब बनवा दिये, कुंए खोद दिये, पैसा आपने जरूर दे दिये, पर हमको देखना यह है कि यह सही तौर से खर्च हो रहा है या नहीं और यह जरूरतमंद को मिल रहा है या नहीं। यह भी देखने की जरूरत है। कई पंचायत समितियों में प्रधान वगैरह जो हैं उनको, उनके रिश्तेदार, दोस्तों वगैरह को ही तकाबियां मिलती हैं, पर जो वास्तव में जरूरतमंद हैं तकावी कुएं वगैरह की, उनको नहीं मिलती।

गांवों के लिए मेरा एक सुझाव और है। अगर आप डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइजेशन को

(श्री मानसिंह महार)

कामयाब बनाना चाहते हैं तो इसके लिए अध्यक्ष महोदय, मैं आपके जरिये राजस्थान के मुख्य मंत्री महोदय को और सदन के नेता को निवेदन करूंगा कि हमारे जयपुर इलाके में अगर डेमोक्रेटिक डीसेन्ट्रलाइज़ेशन को आपको सही ढंग से कामयाब करना है तो अधिक कोटा सीमेन्ट का और चद्दरों का देना चाहिए; क्योंकि हमारे यहां पर आपके उदयपुर की तरह बड़े बड़े तालाब नहीं हैं, हमारा इलाका छोटे छोटे कुओं से सिंचित इलाका है। इस इलाके में अगर आप कुएं बना सकते हैं, कुओं के लिए मदद दे सकते हैं तो वह बड़ी जबरदस्त मदद होगी। मैं आपसे निवेदन करूं कि हमारे इलाके मे तकावी दे देते हैं लेकिन वे चिल्लाते फिरते हैं कि हमको सीमेन्ट दो, पर लोगों को सीमेन्ट नहीं मिलती है। मुझे मालूम है कि थोड़ी सी सेक्रेटेरियट की गलती हो गई। अध्यक्ष महोदय, मैं जानता हूं इस चीज को भी कि ३ महीने का कोटा लैप्स हो गया सीमेन्ट का, इसलिए यह सीमेन्ट की कमी आ गई। लेकिन इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ पी० डब्ल्यू० डी० के स्टॉक को कम कर दिया जाये और उसको गांवों में काश्तकारों को कुंए बनाने के लिए दे दिया जावे तो काफी उन्नति हो सकती है। कम से कम जयपुर डिविज़न के लिए एक स्पेशल सीमेन्ट की ग्रान्ट दे दी जाये ताकि इस डिविज़न का उत्थान हो सके। अब तो हमारा कोई खास रिप्रेज़ेन्टेशन है नहीं इसलिए हम तो सारी ट्रेजरी बेन्चेज़ को प्रेमी मान कर चलते हैं। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि जयपुर का ध्यान रखें तो आपको भी आइन्दा मौका मिलेगा। मैं तो कोई दस-पन्द्रह हजार वोटों से ही जीता हूं और हमारे और मित्र भी कोई दस हजार से और कोई सत्रह हजार से जीते हैं तो उसका आप लोग मेक-अप कर लीजिए।

तो यह सीमेन्ट वगैरह का काम तो बहुत जरूरी है, इसलिए मैं आपके जरिये अध्यक्ष महोदय, अर्ज करूंगा कि सीमेन्ट की बड़ी जबरदस्त जरूरत है और उसको आप जरूर पूरा करें। इसी प्रकार से टीनों की बात है। अगर किसी फैक्टरी के लिए टीनों की जरूरत होती है तो उसको ओवरानाइट टीनें दे दी जाती हैं और अगर कोई किसान दस टीनों के पतरे भी मांगता है तो उसको नहीं देते, दुख तो हमें इसी बात का होता है। एक पूंजीपति हजारों चद्दरें लेकर ब्लैकमार्केट कर देता है तो उसकी जांच भी नहीं होती है। जिन्होंने बड़े बड़े चन्दे दिये हैं, २२ लाख के लिये माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने इन्कार किया; पर हो सकता है कि वह रकम २१ लाख ६६ हजार होगी, लेकिन २२ लाख नहीं थी। वह नट गये क्योंकि वे बहुत ईमानदार आदमी हैं। २२ लाख नहीं, लेकिन २१ लाख ६६ हजार होगा। वह गलती तो फिगर्स में चलती ही है। गर्मियों में हमारे गांव के लोगों को बहुत गर्मी लगती है। आप एक आदेश आज ही कर दीजिए और अभी जाते ही कर दीजिए कि इन्डस्ट्रीज़ के लिए ३ महीने का कोटा बन्द और वह सारा कोटा गांवों में डाइवर्ट कर दीजिए। इसमें आपकी ही वाह-वाही होगी। कल हमारे एक हरिजन भाई बोल रहे थे और आपकी बहुत बड़ाई कर रहे थे। मुझे भी अध्यक्ष महोदय, बहुत खुशी हुई तो उनका जरा सा तो उत्थान करो, आप इतना तो करो।

(श्री मानसिंह महार)

इसलिए अध्यक्ष महोदय मैं कहता हूँ कि यह जो कोटा आप इन्डस्ट्रीज़ को देते हैं वह कुछ समय के लिए बन्द कर दीजिए, इन्डस्ट्रियलिस्ट्स को कह दीजिए कि आपको चद्दरें नहीं मिलेंगी। मैं तो कहता हूँ कि हमेशा के लिये बन्द कर दो। मैं कहूँगा कि इससे गांवों का उत्थान होगा। आप कहेंगे कि आपने तो हमारी सारी इन्डस्ट्रीज़ की ग्रोथ को ही रोक दिया, पर वह रुपया तो पूंजीपति ले जायेंगे; पर नहीं १० हजार रुपया आप मकान बनाने में लगा देंगे तो आपकी स्थाई चीज बन जायेगी। यह मेरा छोटा सा सुझाव है, कन्सट्रक्टिव सजेशन है कि इन्डस्ट्रीज़ के लिए कम से कम ३ महीने के लिए सीमेन्ट और चद्दर बिल्कुल बन्द कर दीजिए और वह कोटा हमारे जयपुर जिले को दीजिए ताकि हम कुंए बना सकें। देखिए, फिर हम आपको दिखायें कि किस तरह प्रोडक्शन बढ़ता है।

मैं कहता हूँ कि आज प्रोडक्शन नहीं बढ़ रहा है, कोई तरक्की नहीं हो रही है; इसलिए मेरा कन्सट्रक्टिव सुझाव है कि नेक्स्ट थ्री मन्थ्स के लिए इन्डस्ट्रीज़ का जो कोटा है उसको रोकिए और वह गांवों की तरफ डाइवर्ट कीजिए; तब देखिये कि कितने मकानों पर चद्दरें पड़ती हैं और कुएं बनते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं यह एक कन्सट्रक्टिव सुझाव दे रहा हूं और इसे आपको मानना चाहिए। इसके बाद मैं अब चलूं, अध्यक्ष महोदय, कोऑपरेटिव मूवमेन्ट के ऊपर।

एक माननीय सदस्य : एक घंटा हो गया।

श्री मानसिंह महार : मेरी पार्टी का टाइम जा रहा है। आप क्यों दुखी हो रहे हो ? अध्यक्ष महोदय, मैं कोऑपरेटिव मूवमेन्ट के बारे में जो बातें कल मैंने सुनी उनको सुन कर स्तब्ध रह गया। डीडवाना से आये हुए मेरे एक माननीय सदस्य बहुत इन्टरेस्ट रखते हैं। उन्होंने कह दिया कि कोऑपरेटिव के मामले में

(१. म० प०)

जितनी राजस्थान में तरक्की हुई है, सारी दुनिया में नहीं हुई। उन्होंने दुनिया से मुकाबला कर लिया। मैं तो कहता हूं कि वे अमेरिका जाकर आये हैं, कुछ समझ कर आये होंगे, वहां पर इतनी तरक्की नहीं हुई होगी, रशिया में तरक्की नहीं हुई होगी। पर मैं तो समझता हूं कि वह हिन्दुस्तान का कुछ देकर ही आये हैं, लेकर कुछ नहीं आये। कोऑपरेटिव मूवमेन्ट के लिए मैं कोऑपरेटिव मंत्री से कहना चाहता हूं कि राजस्थान में यह कम्पलीट फेल्योर रहा है। अगर हमारे कोऑपरेटिव विभाग के मन्त्री कोऑपरेटिव मूवमेन्ट को राजस्थान में कामयाब बनाना चाहते हैं तो उनको कोऑपरेटिव मूवमेंट के स्तर को ऊंचा उठाना चाहिये.......

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : आपकी पार्टी बिलीव करती है या नहीं ?

श्री मानसिंह महार : बड़े दुःख की बात है, फिर वहीं बात आ गई। जो किसी चीज में सिवाय डेस्ट्रक्शन में विश्वास नहीं रखते वह यह बीच बीच में क्या करते हैं ? हम तो हर चीज में बिलीव करते हैं जो भी कन्सट्रक्टिव हो। हमारा तो स्लोगन है कि कुछ भी करो वह कन्सट्रक्टिव हो। सिर्फ रशिया को

(श्री मानसिंह महार)

प्रोत्साहन करें, इसमें विश्वास नहीं रखते हैं; बाकी हर बात में हम साथ देंगे, अगर कन्सट्रक्टिव बात हुई तो।

श्री रामानन्द अग्रवाल : चुनावों में।

श्री मानसिंह महार : चुनावों में भी साथ देंगे, ऐसी कोई बात नहीं है। आप क्या समझते हैं ?

तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपके जरिये निवेदन करूंगा कि यह इन्टरप्शन में बहुत समय ले लेते हैं। मैं कहता हूं कि आज कोऑपरेटिव सोसाइटीज़ ऐसी हैं कि जो पैसा दे तो देती हैं, लेकिन उनमें वसूली एक पाई की भी नहीं होती है। ३-४ सोसाइटीज़ के तो कागज मेरे पास ही पड़े हुए हैं, जिनके पैसे खत्म हो गए हैं। फिर मैं कहूंगा तो आप कहेंगे कि यह क्या कहता है, लेकिन राजा-महाराजाओं की बात हो रही थी लेकिन कोऑपरेटिव डिपार्टमेंट में भी एक राजा साहब विराजमान हैं। वह चाहे वैसे राजा नहीं होंगे, लेकिन बेमुल्क के राजा होंगे। लेकिन वे राजा जरूर हैं। मैं कहता हूं कि उनके पास दो-चार बार मिलने के लिए मैं गया तो दो घण्टे तक बाहर रहना पड़ा, फिर वे कहने लगे, "You goto my subordinates and I don't know about this"

अगर आपको किसानों का विकास करना है, कोऑपरेटिव मूवमेन्ट को बढ़ाना है तो ऐसे आदमियों को रखिये कि जो लोग जनता से बात करें। यह मैंने एक मिसाल दी है। मेरे लिए नहीं दी है। मैं तो दो मिनट में ही मिल लेता हूं। लेकिन मेरे जैसे दो-चार आदमी गए थे उनके लिए कहा है। मुझ से तो मिल लिये थे, यह मत समझना........

(१ म० प०)

हमारी राजागिरी पर जलने वाले जला करें। हम तो रहेंगे। क्या बात है, अध्यक्ष महोदय ?

तो यह चीज़........

श्री रामानन्द अग्रवाल : ज्यादा अर्से तक नहीं रहोगे। सामने वाले रखना चाहते हैं तब तक ही रहोगे।

श्री मानसिंह महार : अध्यक्ष महोदय, मुझे जवाब देना पड़ता है। आप नाराज होंगे। मैं कान बन्द करलूं और बोलता रहूँ। उनको जवाब तो देना ही पड़ता है।

आप कोशिश करके उतार दें उनको (सरकारी पक्ष को) और हमको भी तब जानें। कोरी × × × × करने से क्या होता है।

तो, अध्यक्ष महोदय मैं कोऑपरेटिव मूवमेंट की बात कह रहा था। कोऑपरेटिव सोसाइटी बनती है। लोगों की सिफारिश पर बनती है। वह बन गई। लोगों को पैसा दे दिया गया है, लेकिन पैसा देने के बाद वसूली का कोई तरीका नहीं है। लाखों रुपया आज

× × × अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

(श्री मानसिंह महार)

बकाया पड़ा है लोगों में। वसूल करने को जाते हैं तो नेता लोग पहुंच जाते है और कहते हैं, "अरे साहब, ६ महीने के लिए मत-करो" और बेचारा कोऑपरेटिव इन्सपेक्टर आ जाता है। यह है कोऑपरेटिव डिपार्टमेंट की हालत जिसके लिए डीडवाना से आने वाले माननीय सदस्य कहते हैं कि दुनिया में उसकी बराबरी का नहीं है। मैं भी यही कहता हूँ कि दुनियां में उसकी बराबरी नहीं है कि पैसा दे दिया और पैसा वसूल नहीं करते हैं। दुनिया में यह लाजवाब चीज है। मैं ऐसा मानता हूँ कि उन्होंने जो यह कहा है वह इसी नियत से कहा होगा। उन्होंने कहा कि कोऑपरेटिव डिपार्टमेंट दुनिया में हमारे यहां तरक्की पा रहा है। मैं भी मानता हूँ कि यह चीज हमारे यहां दुनिय से ज्यादा तरक्की पा रही है कि पैसा दे दिया और वसूल नहीं किया। यह बात दुनिया में कहीं नहीं होती, रूस में होती हो तो मुझे मालूम नहीं, मगर और जगह नहीं होती। अमेरिका में नहीं होता है, इंग्लैंड में नहीं होती है, स्केन्डिनेविया में नहीं होता है, जर्मनी में जो आइड्योनार का इलाका है उसमें नहीं होती है। ईस्ट जर्मनी में हो सकता है शायद, लेकिन वैस्ट जर्मनी में नहीं होता है, फ्रांस में भी नहीं होता है।

तो मैं अर्ज कर दूँ कि कोऑपरेटिव डिपार्टमेंट पर विशेष ध्यान देने की बात है। अगर आपको सरकार को कामयाब बनाना है, अध्यक्ष महोदय, तो यह सब से बड़ा महकमा है जिससे किसानों की भलाई हो सकती है, लेकिन उसमें गलत तरीके से काम हो रहा है; यह नहीं होना चाहिए।

मैं आपसे अर्ज करूंगा, मुझे अधिक नहीं कहना है; काफी समय सदन का ले चुका हूँ और पोइन्ट्स पर बजट के समय बातें करूंगा, सदन से निवेदन करूंगा। लेकिन एक डिपार्टमेंट............

श्री हरिराम (सिवाना) : यह आखिरी सेशन है, आपका।

श्री मानसिंह महार : आप लोगों के लिए यह आखिरी होगा। मैं तो १० साल से बराबर आ रहा हूं।

श्री हरिराम : बीच में नहीं थे।

श्री मानसिंह महार : वह तो छुट्टी पर गया था ५ साल के लिए।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में बड़े यंग और एनर्जेटिक गृह मन्त्री बने हैं। उस विभाग में इतना असन्तोष था, मैं बहुत ही सही कहता हूं, जिसके लिए कोई मिसाल नहीं है। अब मैं गृह विभाग पर २–४ बातें कह कर अपना भाषण समाप्त करता हूं। मैं निवेदन करना चाहता हूँ, अध्यक्ष महोदय, कि इस विभाग में जितनी अनियमितताएं और जितना अन्याय हुआ है वह किसी विभाग में नहीं हुआ है। अभी एक–दो मिसालें तो मैंने दी थीं। अब एक मिसाल और देता हूँ कि आप ताज्जुब करेंगे, माननीय अध्यक्ष महोदय, कि आज जयपुर में नायब नजारा पेश हो रहा है। जयपुर के

(श्री मानसिंह महार)

सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के नीचे एडीशनल एस० पी० हैं वे उनसे सीनियर हैं । एक सीनियर आदमी जूनीयर आदमी के नीचे काम कर रहा है । गृह मन्त्री भी चाहें तो देख लें । यह एक फैक्ट है । इससे डिनाई नहीं किया जा सकता । गृह मन्त्री खुद देख लें । अगर नाम चाहें तो नाम दे सकता हूँ, वर्ना एस. पी. जयपुर एडीशनल एस. पी., जयपुर से जूनियर हैं । यह एक फैक्ट है ।

श्री नाथूराम मिर्धा (कृषि मन्त्री) : वे रिटायर्ड हो गये ।

श्री मानसिंह महार : उनको क्यों लगाया जा रहा है, यह भी नजर कर दूं । जितने भी डी० वाई० एस० पीज़० प्रोमोशन के लिए एलिजिबल हैं वो सारे जयपुर के हैं । तो यह एडीशनल एस० पी० की पोस्ट जो है वह आर० पी० एस० की है, लेकिन आई० पी० एस० को क्यों लगा रखा है क्योंकि जयपुर के डीवाई० एस० पीज़० वहां पर न हो जायं ।

श्री मथुरादास माथुर (गृह मन्त्री) : माननीय अध्यक्ष, मैं थोड़ा सा माननीय सदस्य की सूचना के लिए कह दूं कि उनका तबादला नागोर कर दिया गया है ।

श्री मानसिंह महार : मैं धन्यवाद देता हूं, अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्रीजी को । मुझे यह मालूम हो गया था, लेकिन मैंने एक नजारा बताया था । मैंने पहले ही कह दिया है कि राजस्थान में एनर्जेटिक गृह मंत्री आ गए हैं तो सुनवाई करेंगे....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : जोर से सुनवाई कर देंगे, आप नाम बता दें ।

रावत श्री मानसिंह महार : नाम मैं निवेदन कर दूंगा । आपका जमाना आयेगा तब । आपको क्या है ? ऐसे मैं मुखियाओं से नहीं कहता ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : ऐसा लगता है कि माननीय सदस्यों ने मिलजुल कर दोनों ने बात कही हैं ।

श्री मानसिंह महार : अगर मेलजोल की बात है तो जलन क्यों होती है लोगों को ? अध्यक्ष महोदय, मेरी समझ में नहीं आता कि हम सरकार को सहयोग देते हैं, हमारे नेता ने सहयोग का हाथ बढ़ाया है उस हाथ को हम आगे भी बढ़ायेंगे । आपके क्यों दर्द होता है ? आप क्यों जलते हैं ? हमारा सहयोग होगा और पूरा सहयोग देंगे । आप बेफिक्र रहें । हम इन बातों में आने वाले नहीं हैं ।

यह जो तबादले की बात हो गई, लेकिन दूसरी बात का जवाब नहीं आया । जितने भी डीवाई० एस० पीज़० प्रमोशन की लैडर में हैं वे सारे बेचारे जयपुर के हैं, जिनको भूतपूर्व गृह मन्त्री, जो श्रीमाधोपुर के भूतपूर्व सदस्य ने हराया है उन सब को लटका रखा है क्योंकि वे हाजिरी नहीं करते थे, बंगले पर जाकर हाथ नहीं जोड़ते थे ; यह वजह थी । मैं आपको सही निवेदन कर रहा हूँ । मैं चाहूँगा कि बेचारों के साथ अन्याय हुआ है, उस अन्याय की तरफ नये गृह मन्त्रीजी ध्यान दें । वे ऐसा नहीं करेंगे कि जोधपुर से लाकर

(श्री मानसिंह महार)

किसी को थोप देंगे । अगर यह होगा तो हमारा दुर्भाग्य होगा ।

मैं तो कहना चाहता हूँ कि होम डिपार्टमेंट में पब्लिसिटी का मामला बहुत दिनों से चलता आ रहा है । उनका इम्तिहान आ रहा है । नये गृह मन्त्रीजी पब्लिसिटी के मामले में कुछ करेंगे तभी जानेंगे वर्ना पुरानी घिस-घिस तो चलेगी ही । अध्यक्ष महोदय, मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ कि थोड़ा न्याय करें ।

मेडिकल और हैल्थ के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूँ । आयुर्वेद के बारे में मैंने एक मिसाल दी थी और मैं यह चेतावनी के रूप में कहना चाहता हूँ इस सदन में माननीय मुख्य मन्त्रीजी को कि यह आज राजस्थान में सबसे बड़ा महत्वपूर्ण महकमा है । अगर आप आयुर्वेद से गांव के लोगों की चिकित्सा का प्रबन्ध करना चाहते हैं तो वह आयुर्वेद के जरिये से कर सकते हैं । आपके पास इतना पैसा नहीं है, इतने साधन नहीं हैं, इतने डॉक्टर्स नहीं हैं कि आप गांव गांव में भेज देंगे । लेकिन आप वैद लोगों को गांवों में भेज सकते हैं । इसलिये इस महकमे के मन्त्री को बदल दें भगवान् के लिये । मैं ज्यादा अर्ज नहीं करता । मैं इतनी गलत बात नहीं करता । इन लफ्जों में सही अर्ज कर रहा हूँ । ××××के पास यह महकमा है वह ज्यादा क्या कर सकता है ? मैं यह नहीं चाहता........

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आप किस वैद्य के लिए ऐसी पैरवी कर रहे हैं ?

श्री मानसिंह महार : मैं अर्ज करूंगा कि ऐसी बातें कैसे हो सकती है कि एक वैद्य गया जिसका कोई लेना-देना नहीं था वह सीधा मन्त्री के दफ्तर में पहुंच जाय और इसको भी बुला ले जाय । यह स्तर थोड़ा ऊंचा उठाना चाहिये । हम नहीं चाहते कि हमारी सरकार के मन्त्री लोग इतने नीचे जांय । तो यह मेरी प्रार्थना है कि सरकार के स्तर और मन्त्री महोदयों के स्तर को ऊंचा उठाया जाय । अगर आप राजस्थान का भला करना चाहते हैं तो आप राजस्थान सरकार के लिये कुछ कीजिये । आप राजस्थान के फलने-फूलने के लिये कीजिये । एक बेचारा डाइरेक्टर है वह ट्रान्सफर कर देता है और मन्त्री उसको कैन्सल कर देता है, तो आप सोचिये कि उस डाइरेक्टर की क्या बात रही ? यह आयुर्वेद की बात बता रहा हूं । आयुर्वेद के अन्दर इन्सपेक्टर्स की हालत देखिये कि ५, ६ रुपये की रिश्वत लेते हैं । ××××चपरासी को अपनी पसन्द की जगह पर भेजने के लिए आयुर्वेद का इन्सपेक्टर १०) रु० लेता है । यह तो आपकी रिश्वत का स्तर है । कहां तक क्या कहें ? पुराने जमाने के लिए यहां कहते थे उस समय यह देखते थे कि अगर जुर्माना करना है तो किस तरह से किया जाय । वहां आप जैसे मंत्री हो गये तो रिश्वत १०) रु० की हो गई । ज्यादा रिश्वत १००), २००) रु० की नहीं, यह मैं मानता हूं, मगर मैं कहूंगा और माननीय मुख्य मंत्रीजी से प्रार्थना करूंगा कि कुछ थोड़ा ध्यान दें ।

××××अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

×××× अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

(श्री मानसिंह महार)

यह महकमा ऐसे हाथों में है कि अगर यही रफ्तार रही तो सुधार नहीं हो सकता।

पी० डब्लू० डी० के बारे में तो वहां पर कमीशन बेसिस चलता है वह १०, १५ व २५ रुपये की पुरानी चीज है। राजाओं के युग में भी थोड़ी बहुत थी। अब भी वही राजाई टर्रा चल रहा है। तो मैं अधिक कुछ नहीं कहूंगा, लेकिन इसमें यदि पर्सेन्टेज में माननीय मंत्रीजी कुछ कमी कर सकें तो वह भी अच्छा है। अभी नई सरकार आई है इसलिए पुराने रोने को रोना ठीक नहीं। अब अधिक न कह कर शिक्षा विभाग की ओर थोड़ा सा ध्यान दिलाना चाहता हूं।

मैं यह मानता हूं कि शिक्षा में क्वान्टिटी की ओर अधिक ध्यान न देकर क्वालिटी की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। मैं सरकार से नम्र निवेदन करूंगा कि क्वान्टिटी की बात छोड़ दें, क्वालिटी में विलीव करें। यह आपको सोचना है। अध्यक्ष महोदय, ट्रेजरी बेन्चेज़ से कहा गया कि हमने १० हजार स्कूलें खोल दीं, लेकिन आप इस ओर ध्यान दीजिये। कि इन स्कूलों में मास्टर कैसे रखे जाते हैं। एक नमूना कि कैसे शरीफ और सज्जन मास्टर रखे जाते हैं वह सदन में पेश कर दिया। मास्टरों को भी आप देखिये। शिक्षा विभाग का स्तर इतना नीचा क्यों हो रहा है? मास्टर वह आदमी होता है जिसको दुनिया में कोई जगह नहीं मिलती। इसलिये वहां पर अयोग्य आदमी जाते हैं क्योंकि वहां तो कोई क्वालीफिकेशन की बात नहीं है ....

एक माननीय सदस्य : आपको पढ़ाने वाला कौनमास्टर था?

रावत श्री मानसिंह महार : मुझे पढ़ाने वाला मास्टर यदि आपको पढ़ा देता तो आप इन्सान हो जाते, मैं तो यह जानता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपके जैसे इन्सान नहीं बनें तो ही अच्छा है।

श्री मानसिंह महार : मेरे गुरु जैसा तो आपको इन्सान बना सकता है। आपने कहा था कि मैं पढ़ा सकता हूं, लेकिन आप मुझे नहीं पढ़ा सकते। मैं यह कह देता हूं कि आपको मैं ७ जन्म तक पढ़ा सकता हूं। तो मैं शिक्षा मंत्री को अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये, कहना चाहता हूं कि शिक्षा के अन्दर लड़कों की शिक्षा, लड़कियों की शिक्षा का भी प्रश्न है, उसका महत्व भी कम नहीं समझना चाहिये, हाथ पैर बचा कर काम करें क्योंकि यह प्रान्त और देश की इज्जत का सवाल है। मैं नेक सलाह शिक्षा मंत्रीजी को देना चाहता हूं, उनकी बुजुर्गी को देख कर, क्योंकि जयपुर में मास्टरनियों की कई बातें आती हैं। अब बुजुर्ग शिक्षा मंत्रीजी आ गये हैं इसलिये मैं समझता हूं इस तरह की कोई बात नहीं होगी। अगर इस तरह की बात होगी तो फिर मैदान में आयेंगे। पहले भी भैरूसिंहजी वगैरह ने पेश ही किया है। आप मास्टरों के स्तर को ऊंचा करिये; चाहे जिसको भेड़-बकरी की तरह मास्टर बना दिया जाता है, यह गलत है। इससे लड़कों की जिन्दगी बिगड़ती है। एक लड़का भले ही पढ़े नहीं, लेकिन वह यदि चरित्रवान है तो वह दुश्चरित्र पढ़े-लिखे

(श्री मानसिंह महार)

से अधिक अच्छा है ....

एक माननीय सदस्य : पीना भी अच्छा है क्या ?

श्री मानसिंह महार : मैं टी टोटलर हूं, उनकी तरह छिप कर नहीं पीता हूं। अब तक शराब मुंह के नहीं लगाई है। सदन की इत्तला के लिये बता दूं कि जिन्दगी में मैंने कभी शराब नहीं चखी है। यह तो आप लोग हैं जो छिप छिप कर रम और जिन लेकर काम चलाते हैं। मैं सदन में इतने रोब से बोलता हूं उसका कारण यह है कि मैं जानता हूं कि मेरे चरित्र पर कोई धब्बा नहीं है। सामने बैठनेवाले और ऊंचा हाथ करने वाले हैं वे चुपके चुपके पीते हैं। मैंने भी डाल कर जरूर पिलाई है, लेकिन पी नहीं है; यह मैं सदन में कहता हूं और यह बताना चाहता हूं कि मैं चरित्रहीन नहीं बल्कि चरित्रवान् में विश्वास रखता हूं सदन में भी जो भी भाई आये हैं उनको चरित्र में विश्वास रखना चाहिये। यदि चरित्रहीनता में विश्वास रखते हैं तो सदन में नहीं आना चाहिये।

एक माननीय सदस्य : आपके आश्रम में आयेंगे।

श्री मानसिंह महार : चरित्र वाले आ सकते हैं। ऐसे वैसों को आश्रम में नहीं लूंगा। शिक्षा के बारे में मैं अर्ज कर रहा था कि क्वालिटी पर ध्यान दीजिए किन्तु आप क्वान्टिटी पर ध्यान देते हैं। नये शिक्षा मंत्री आये हैं इसलिये बताता हूं कि जयपुर की तीन कॉन्टीटयुएन्सीज़ हैं; आमेर, गोविन्दगढ़ और बैराठ। इनमें से बैराठ में ७ हायर सेकिन्डरी स्कूल्स हैं, लेकिन मेरी आमेर कॉन्टीट्युएन्सी में एक भी हायर सेकिन्डरी नहीं है, इसलिये नियम बनाईये कि जिस इलाके में नहीं है उसको प्रायोरिटी दीजिये, उसके साथ न्याय कीजिये। यह नहीं कि बैराठ में ७ इसलिये खोल दिये कि वहां के लोगों की मुख्य मंत्रीजी तक पहुंच थी; इसलिये डोली और रोडवास में भी हायर सेकन्डरी स्कूल खोल दिये। यह बात मैं शिक्षा मंत्रीजी के नाते कहता हूं कांग्रेस के नाते नहीं, यह उनकी कलम से अन्याय हुआ है। अब नये शिक्षा मंत्रीजी ऐसा अन्याय नहीं करेंगे। वहां पर एक भी हायर सेकन्डरी नहीं है। आमेर और बड़गांव में नई बिल्डिंग भी बन गई हैं, इस ओर ध्यान देंगे।

मेरे और भी सुझाव हैं जो बजट भाषण के समय रखूंगा। आपने कोऑपरेशन की तरफ हाथ बढ़ाया है, यह नहीं कि मिली-जुली सरकार बनायेंगे। इस धोखे में न रहें, कहीं परेशानी न उठानी पड़े; इसलिये न्याय करें, आप न्याय कीजिये। आप जिस गद्दी पर विराजमान हैं अध्यक्ष महोदय, वह आपकी गद्दी बहुत ऊंची है। आप न्याय करते हैं तभी आपको हमने सर्व समिति से चुना है। आप अपने न्याय का हिस्सा कुछ मुख्य मंत्रीजी को भी दीजिये, सदन के नेता को दीजिये ताकि वे हमारे साथ न्याय करें। ये चन्द बातें कह कर निवेदन करूंगा कि सदन में स्वस्थ परम्परा कायम करें। इस तरह से भावावेश में न बहें। मित्रों से कहूंगा कि ऐसी बातें, पुराने जमाने की बातें जाने दीजिये, 'by gone is by gone.' अब मुझे महार ठाकर न समझें, केवल मानसिंह समझें।

(श्री मानसिंह महार)

इसी तरह से महारावल लक्ष्मणसिंहजी को डूंगरपुर महारावल मत समझिये । डूंगरपुर में तो पंडियाजी ने १० वर्ष तक राज्य कर लिया । उन बातों को भूल जाइये; सही ढंग से काम करेंगे तो कोई बुराई नहीं करेगा । राजाओं ने अच्छा काम नहीं किया तभी तो आपको राज्य मिला । बिल्ली के भाग्य का छींका इसीलिए तो टूटा कि वे मजबूत नहीं थे, नहीं तो आपको कौन आने देता ? अब की बार तो भगवान् ने इज्जत रख दी । एक सदस्य को तोड़ लिया, दो-चार को और तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं । ले जाइये अनडिज़ायरेबल एलीमेंटस को, हम तो थोड़े ही अच्छे हैं, मजबूत ४०–५० भी अच्छे हैं ; इधर-उधर बेपेन्दे के लुढ़कने वाले नहीं चाहिये । मतीरों की पोटलियों को ले जाइये, आप ही ले जाइये ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यों से एक बात निवेदन कर देना चाहता हूं । ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से माननीय सदस्य इस बहस में भाग लेना चाहते हैं । एक सुझाव यह है, यदि माननीय सदस्य पसन्द करें तो भाषणों पर सीमा लगादी जाय पन्द्रह मिनट की अवधि में माननीय सदस्य भाषण समाप्त करलें ताकि ज्यादा से ज्यादा सदस्य इस बहस में भाग ले सकें । इस बात को ध्यान में रखते हुए आप अपने विचार रखें । यह जो सीमा है, जो सरकारी पक्ष के मंत्री महोदय बोलेंगे उन पर लागू नहीं होगी । इस सुझाव के साथ मैं समझता हूँ आपकी सहमति है और इस पन्द्रह मिनट के निर्णय का, मैं आशा करता हूँ, आप पूर्ण पालन करेंगे एक घंटी जो मैं बजाऊंगा वह वार्निंग के तौर पर होगी और दूसरी या तीसरी घंटी पर आप अपना स्थान ग्रहण कर लें ।

श्री कुमारानन्द ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : माननीय अध्यक्ष, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि स्वतंत्र पार्टी में से आये तीन व्यक्ति बोल चुके हैं........

श्री अध्यक्ष : देखिये, यह बहस नहीं हो सकती कि कौन बोला है, क्या बोला है । जिस तरह की व्यवस्था है वह ठीक समझ कर ही दी जायगी ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : अट्ठारह आदमियों के ग्रुप में से आप दूसरों को मौका दें, उनको बोलने दें ।

श्री अध्यक्ष : आप कृपया स्थान-ग्रहण करें ।

श्री कुमारानन्द (ब्यावर) : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान की विधान सभा में बोलने का मुझे यह पहला मौका मिल रहा है । आज से इक्यावन, सतावन वर्ष के पहले १९०५ में जब हम लोग देश की आजादी के लिए आगे आये थे तो उस समय कभी सोचा नहीं था कि हमको किसी विधान सभा में खड़े होकर बोलना पड़ेगा । हम लोग उस समय आपस में होड़ लगाते थे कि देशके लिए पहले कौन फांसी पर चढ़ेगा, देश के लिए कौन पहले गोली

(श्री कुमारानन्द)

जायेगा, देश के लिए कौन पहले जेल जायेगा। इस पर हम में होड़ लगती थी। लेकिन आज कल होड़ है कि कुर्सी पहले किसको मिलनी चाहिए, इस बात पर होड़ है। इस बात को देख कर कभी कभी दुःख होता है। फिर भी मैं कुछ बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं कुछ ऐसी बातें आपके सामने बोलना चाहता हूं कि जो पिछले दस वर्ष से सदन के सामने नहीं आई हैं, जान-बूझ कर छिपाई गई हैं या लोग नहीं जानते हैं।

राज्यपाल का भाषण हमने पढ़ा, दो, दो बार पढ़ा। राज्यपाल व्यक्तिगत हैसियत से एक अच्छे आदमी हैं। मैं उनको बहुत पुराने अर्से से जानता हूं; व्यक्तिगत हैसियत से एक बहुत अच्छे आदमी हैं। लेकिन क्योंकि वे एक राजनैतिक पार्टी की तरफ से बोले इसलिए खेद है कि हम उनके धन्यवाद प्रस्ताव में शामिल हो नहीं सकते हैं।

चुनाव में, तीनों चुनावों में, बड़ी बड़ी घटनायें घटी हैं। आपके जयपुर के चुनाव में बाहर से, मैं आपको बतला देना चाहता हूं, सौलह सौ कॉरेस्पोन्डेंट्स आये। एक नहीं, दो नहीं; सौलह सौ कारेस्पोन्डेंट्स आये थे जिनमें ६० प्रतिशत अमेरिकन कोरेस्पोन्डेंट्स थे। क्या बात है कि जयपुर में इतने लोग आये? उन लोगों के आने की क्या जरूरत थी? वे लोग जाने क्यों आये, हम कह नहीं सकते।

दूसरी बात यह है कि कहा गया है कि पीसफुल और शांति से चुनाव हुए। ये चुनाव भी हैं और एक भ्रष्टाचार का बोलबाला भी है। इन चुनावों में करोड़ों रुपया बहाया गया, लोगों को रिश्वत दी गई। इस चुनाव में लाखों रुपयों की शराब बांटी गई। इस चुनाव में तरह तरह से लोगों को खुश करने की कोशिश की गई। तो इसलिए ये चुनाव निष्पक्ष चुनाव हुए हैं, यह नहीं कहा जा सकता है। आपके इस चुनाव में मैं एक गांव में गया था। मैं सत्रह तारीख को रात को नौ बजे मायला गांव में गया। मेरे ऊपर हमला किया गया। पत्थर से हमला किया गया। मोटर में टकरा कर मेरे सिर पर लगा। नहीं तो हमारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जाते, वहीं हमारी मौत हो जाती। यह गांव वालों ने नहीं किया है। गांव वाला किसी से दुश्मनी नहीं रखता है। यह किसी शहर के लोगों ने किया है। शहर से लोगों ने पीछा किया है, किसी पोलिटिकल पार्टी के लोगों ने। मैं कहना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय, वहां पर सिर में से खून गिरने लगा और क्योंकि मुझ में प्रेज़ेन्स ऑफ माइन्ड थी और एक पुराना सिपाही हूँ जिसमें अतुल शक्ति थी, मेरी जगह कोई नौजवान होता तो वहीं बेहोश हो जाता। मैं चार मील दुर नायला से आया मसूदा; वहां तीन टांके लगवाये। यह हुआ है। यह जरूर है कि हम उसका बदला लेना चाहते तो न मालूम क्या होता। मैं, अध्यक्ष महोदय, इन मामलों में आगे चलूं तो इस मामले में हम पर जितने पत्थर फेंके उससे आगे जा सकता था। मैंने मां की गोद से बच्चे को मांग कर फांसी के तख्ते पर भेजा है। यह मेरा गौरव है, हिन्दुस्तान की आजादी के लिए पच्चीस वर्ष से ज्यादा मैं जेल में रहा हूँ। इसलिए मेरे उपर इस तरह का हमला होवे, यह मेरे ख्याल से अगर कांग्रेस के राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद या

(श्री कुमारानन्द)

नेहरू भी सुनें तो इसकी तारीफ नहीं होगी। तो इसलिए ये चुनाव जिस प्रकार के हुए हैं, ये शांतिपूर्ण चुनाव हुए हैं, यह कहा नहीं जा सकता। अध्यक्ष महोदय, मुझे बड़े खेद के साथ कुछ कहना पड़ता है। आज मैं ७२ साल की उम्र में राजस्थान की विधान सभा में खड़ा हुआ हूं। यह देख कर मुझे बहुत ही दुःख होता है कि देश की वर्तमान हालत क्या है, किस तरह देश चल रहा है, जो कांग्रेस में पच्चीस वर्ष रहा, जो कांग्रेस में ऊंचे ऊंचे पद पर रहा, जिस कांग्रेस में वर्षों ए. आई. सी. सी. का मेम्बर रहा, १९१७ में अक्टूबर की कलकत्ता की ए. आई. सी. सी. की बैठक में प्रिसाइड करने का मौका मिला, इतना हाइएस्ट ऑनर मिला है उस कांग्रेस को मुझे छोड़ने को बाध्य होना पड़ा। देश को आजादी मिलने के बाद मैंने जब देखा कि कांग्रेस टाटा, बिड़ला डालमियां और बड़े बड़े राजा-महाराजाओं और जागीरदारों से हाथ मिला रही है तो हमने समझा उस कांग्रेस में मेरा स्थान नहीं है। मेरे बांये हाथ मेरे पुराने मित्र बैठे हैं, जिनके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर हमने काम किया, लेकिन आज अफसोस की बात है, व्यक्तिगत रूप में हमारे मित्र हैं, लेकिन पोलिटिक्स में हम एक दूसरे से दूर हैं। आज कांग्रेस का टिकट किसको दिया जाता है? झुंझुनू से किसको टिकट दिया गया? अगर कांग्रेस के किसी पुराने कांग्रेस सेवक को दिया जाता तो हमें दुःख नहीं होता, लेकिन किसको टिकट दिया; एक बहुत बड़े करोड़पति सेठ मुरारका को। सीकर में टिकट किसको दिया जाता है? वहां के पुराने सेवक लालूराम को नहीं दिया गया। इस तरह हिन्दुस्तान में टाटा, बिड़ला, डालमिया के एजेन्ट्स को टिकट देते हैं और देश के पुराने सेवक हैं; उनका उनमें स्थान नहीं है। ऐसे ही आप सौदा कर रहे हैं। हमारे जो दाहिने हाथ पर बैठे हैं उनको लेने की कोशिश की जा रही है। उनका इतिहास मैं आपको बताना चाहता हूँ। मैं कहता हूं कि राजस्थान सभा ही ऐसी जगह है, सदन ऐसी जगह है जहां उस चीज को मैं बता सकता हूँ और वह यह है कि मैं यह कहना चाहता हूँ कि इन मेम्बरों को इस प्रकार से अपने साथ मिलायें तो यह नहीं हो सकता कि कांग्रेस में शामिल होने से, केवल टोपी बदलने से उनका दिल भी बदल जायेगा। यह नहीं हो सकता। मैं आप से कहना चाहता हूं, अध्यक्ष महोदय, मेरे साथ राजस्थान के सम्बन्ध १९०७ से हैं। बहुत सेर राजा महाराजा हमारे मित्र थे। मैं उनके साथ में चित्तौड़ में गया। चित्तौड़ का इतिहास बंगला भाषा में जैसा लिखा है किसी दूसरी भाषा में नहीं मिलता। मैं वहां पर ठहरा। चित्तौड़ को मैं पवित्र समझता था। परन्तु यह भी मैं आपको बताना चाहता हूँ कि भारत का राजनैतिक इतिहास लिखा जा रहा है उसमें भी यह आवेगा, यह मैं कहना चाहता हूं। मैं पुरानी बात को इसलिये कहना चाहता हूँ कि १९१४-१५ में क्रान्तिकारी लोग राजस्थान में घुसे और राजाओं से मिले। बहुत से राजाओं ने क्रान्तिकारियों को आश्रय दिया था। क्रान्तिकारियों की राजाओं से यह संधि हुई थी कि फर्स्ट ग्रेट वार में १९१४-१५ में गुरिल्ला वार शुरू हो। राजस्थान ही एक ऐसी जगह है जहां से गुरिल्ला वार शुरू होगी। इसी बात को लेकर १९१६-१७ से क्रान्तिकारी पार्टी का राजाओं से समझौता हुआ था। लेकिन बड़े

(श्री कुमारानन्द)

अफसोस की बात है कि जब क्रांतिकारी लोगों ने देखा कि ये लोग पब्लिक की आजादी नहीं चाहते लेकिन राजा लोग अपने राज्य को बढ़ाना चाहते हैं; वे यह चाहते थे कि कोई पंजाब तक चला जावे तो जयपुर ने देखा कि वह भी अपनी सीमा बढ़ा ले। हमने देखा कि अंग्रेजों से हम संघर्ष जनता को आजाद कराने के लिए करते हैं और आज ये लोग गोरों के बजाय काले हमारे सिर पर बैठ रहे हैं, तो हमने यह बात पसन्द नहीं की। हमें उसको बन्द करना पड़ा।

इसके बाद मैं आपको आजादी के बाद की ओर ले जाता हूँ। हिन्दुस्तान के आजाद होने के बाद, मैं कहना चाहता हूँ कि अगर इन्क्वायरी हो तो सारी बातें आपको मालूम हों। १६४८ में ब्यावर के सेन्दड़ा में एक कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें जोधपुर के महाराजा चेयरमैन थे। उसमें कई लोग थे। उनका उस समय क्या प्लान था? उनका यह प्लान था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान और राजस्थान बने और वह जो कांफ्रेन्स हुई उसमें आउटवर्डली यह जाहिर था कि राजा-महाराजाओं का सम्मेलन हो रहा है लेकिन वहां क्या हो रहा था, यह मैं आपको बताना चाहता हूँ। वहां यह हो रहा था कि अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़ कर भाग रहे थे वे राजाओं से हाथ मिला कर जा रहे थे कि वे उनको हथियार सप्लाई करेंगे और राजस्थान को भारत सरकार से आजाद करेंगे। पंडित सुन्दरलाल जो भारत में अंग्रेजी राज्य के लिखनेवाले हैं, इस इतिहास को लिखने में मदद कर रहे हैं। इसलिये मुझे पूरा विश्वास होता है अध्यक्ष महोदय, कि ये लोग फिर सिर न उठावें और मेरे बायें हाथ की ओर बैठने वालों से दाहिने हाथ वाले मिल कर उनको पूरी तरह खत्म न कर दें। यह मैं आपसे कहना चाहता हूँ। मैं कांग्रेस मिनिस्टरों से कहना चाहता हूं कि क्या आप इसी तरह से समाजवाद लावेंगे। डालमिया, बिड़ला, टाटा, और राजा-महाराजाओं से मिल कर समाजवाद लावेंगे? मैं पूछना चाहता हूँ अपने साथियों से जिनके साथ मैंने बर्षों काम किया। कल ज्वालाप्रसादजी बोल रहे थे। मैं यह कहूँगा कि ज्वालाप्रसाद मेरे कन्धे पर चढ़ कर जेल से भागे थे। वही ज्वालाप्रसाद हमारा पुराना साथी है। अफसोस की बात है आज कांग्रेस में रहते हुए कांग्रेस की तारीफ करेगा, बाहर जावेगा, मेरे माफिक बातें करेगा। तो मैं कांग्रेस सदस्यों से पूछना चाहता हूँ कि यह कौनसा तरीका है समाजवाद लाने का? इस तरह से करेंगे तो मैं यह कहूँगा कि असमाजवाद लावेंगे आप देश में

(समय–समाप्ति–सूचक घंटी)

इसलिए मैं आपसे बातें करना चाहता हूँ कि.... आप जिस रास्ते में चल रहे हैं वह समाजवाद का रास्ता नहीं है। हमारे कांग्रेसी मित्रो, यह समाजवाद का रास्ता नहीं है, यह असमाजवाद का रास्ता है। आखिर में तुम्हारा मेल ये जो हमारे दाहिने हाथ में बैठे हैं उनके साथ होगा और हमारे साथ नहीं होगा। हम गद्दारों में शामिल हैं! तुम्हारे लिये हम गद्दार हैं! मैं यह कहूँगा कि आज जो हिन्दुस्तान को पीछे से छुरा भोंकते रहेंगे वे तुम्हारे मित्र हैं!

हमने भी देश की सेवायें की हैं, आज हमारे शरीर में गोलियों के दाग है हमने मुल्क की सेवा की है। १४ साल की उम्र में पिश्तोल

(श्री कुमारानन्द)

लेकर क्रान्तिकारी पार्टी के साथ निकला। देश की सेवा की। आज हम गद्दार हैं, खास कर राजस्थान की कांग्रेस में जो हमारे मित्र राइट की तरफ बैठे हैं उनके साथ २५ साल तक कांग्रेस में मैं रहा, राजस्थान की कांग्रेस जो मध्य प्रदेश आदि में सबका हैडक्वार्टर अजमेर में था उनके साथ रह कर उनको साथ देने में मेरा भी हाथ था।

कांग्रेस में मेरे खड़े नहीं होने से, मैं चीफ मिनिस्टर से कहना चाहता हूं, कि इस तरहसे मुझे बोलने नहीं दिया। थोड़ा बहुत हक तो मेरा है ही। कम से कम इतना हक तो मेरा है। इसलिये मैं बहुत लम्बा भाषण नहीं देना चाहता हूँ। सिर्फ १५ मिनट में हमें कोई बात है उसे कहनी है........

श्री अध्यक्ष : १५ मिनट तो हो गये।

श्री कुमारानन्द : कुछ आप समय दें, कुछ हम छोड़ देंगे।

एक बात मैं जयपुर के बारे में कहना चाहता हूँ, वह यह है कि जयपुर को बी क्लास सिटी की मांग है। सरकार की तरफ से कहा जाता है कि जयपुर 'बी' क्लास सिटी नहीं हो सकती क्योंकि इसकी पोपुलेशन पांच लाख नहीं है। माननीय अध्यक्ष, मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जयपुर की पोपुलेशन ५ लाख नहीं, बल्कि ६ लाख है। जयपुर के बापूनगर, सी स्कीम आदि को अगर अलग नहीं रखा जाता है और उसकी आबादी को जयपुर में मिला दिया जाता है तो उसकी आबादी ६ लाख है। इस तरह से जयपुर को 'बी' क्लास सिटी नहीं बना कर जयपुर के हजारों कर्मचारियों को तरक्की से महरूम रखा जा रहा है और मैं यह कहूँगा कि राजस्थान ही एक ऐसा प्रान्त है अध्यक्ष महोदय, मैं एक लेबर लीडर कह सकता हूँ कि जयपुर में जहां लेबर लॉ केवल नाम के लिये निकाले जाते हैं, उसका लोगों को कोई फायदा नहीं होता। आपके यहां उनको लागू नहीं किया जाता। केवल निकाले जाते हैं ताकि लोगों को तसल्ली हो जाए। शोप एण्ड कॉमर्शियल एक्ट की भी यही हालत है। ब्यावर की एडवर्ड मिल को सरकार ने ऑर्डिनेन्स जारी करके अपने हाथ में ले लिया था। वह ऑर्डिनेन्स ऐसा था कि जिसके जरिये लेबर कोर्ट में नहीं जा सकते थे, कोई मजदूर किसी से शिकायत नहीं कर सकता था। सरकार जैसा चाहे वैसा ही करती थी। कोर्ट में वह जा नहीं सकता था मुकदमा कर नहीं सकता था। ऐसी हालत में सरकार जैसा चाहे वैसा ही करती थी। ऐसे काले ऑर्डर्स कहीं इण्डिया भर में नहीं देखने को मिलेंगे, जो एडवर्ड मिल में लगे। सरकारी अधिकारियों ने जिस समय इसको लिया उस समय आमदनी करके दिखाई। उसके बाद फिर इसको प्राइवेट कम्पनी को दे दिया गया। अब इस मिल की हालत क्या है ? इस मिल की हालत बहुत सोचनीय है। इस मिल में हालत यह है कि वह आज घाटे में जा रही है और महीने, दो महीने में बन्द हो सकती है।

ब्यावर की टैक्सटाइल लेबर यूनियन हमारे यहां आने से पहले ८ मार्च को रात पाली 'shift' और दिन पाली दोनों पाली के मजदूरों ने प्रस्ताव पास करके सरकार के पास भेजा है कि ब्यावर की मिल सरकार अपने हाथ में ले ले। ब्यावर की मिल में ४२ आदमियों को निकाला गया था, उनका कुसूर यह था कि लाल झण्डे का काम

Page No 48

(श्री कुमारानन्द)

करने वाले थे जिसके लिये ७० साल की उम्र में हमको बारह–तेरह दिन की भूख हड़ताल करनी पड़ी। उस समय कॉमरेड डांगे हिन्दुस्तान के बाहर थे। मेरी भूख हड़ताल के बारे में सुन कर जल्दी से प्लेन में इन्डिया में चले आये और ब्यावर आये। सरकार की तरफ से इन्क्वायरी कराई गई। इन्क्वयारी से यह साबित हुआ कि उनका कोई गुनाह नहीं था, उनका गुनाह केवल यही था कि लाल झण्डे का काम करने वाले थे।

ब्यावर में एक मनुष्य है जो कहता है कि हमने लाल झण्डा खत्म कर दिया है। मैं इतिहास दोहराना चाहता हूं। सन् ३० में संसार के तीन पगलों ने पैक्ट कर लिया था; हिटलर, टोजो और मुसोलिनी ने पैक्ट कर लिया था कि लाल झण्डे को दुनिया से खत्म कर देंगे, पर वे तीनों आज कब्र में पड़े पड़े अल्लाह–अल्लाह कर रहे हैं और संसार के १२ देशों पर आज लाल झण्डा फहरा रहा है। ऐसा ही आज ब्यावर में एक मनुष्य है जो कहता है कि लाल झण्डे को ब्यावर में खत्म कर दिया है, उसने ब्यावर में लाल झण्डे से बुरी तरह डिफीट खाई। ४२ मजदूरों को इन्क्वायरी करने के बाद लिया गया, पर १३ मजदूर आज भी बाहर हैं, उनके घर के लोग भीख नहां मांग सकते। दूकानदार उनको सौदा देता नहीं क्योंकि पहले काम पर जाते थे तो सोदा दे देते थे कि पैसे दे देंगे, पर अब देखता है कि काम पर तो ये लोग जाते नहीं फिर सौदा दे दिया तो पैसे कहां से देंगे इसलिये सौदा देते नहीं हैं, कितने ही तो उपवास करते हैं। यह हालत है मजदूरों की।

ब्यावर की कृष्णा मिल में गवर्नमेंट ने जबरदस्ती की, पुलिस के जरिये मजदूरों पर वर्क लोड लागू किया कि जिसकी इन्डिया में दूसरी मिसाल नहीं। ताज्जुब की बात है, मिल मालिक पुलिस से मिल कर मजदूरों पर गोली चलाने वाले थे, मैं इन्टरफियर करके मजदूरों को मिल में नहीं भेजता तो गोली चलने वाली थी। मजदूर वर्क लोड में काम करने को तैयार नहीं हो रहे थे, पुलिस उन पर गोली चलाने वाली थी। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने स्वयं स्वीकार किया कि एक मिनट और मजदूर बिखर नहीं जाते तो गोली चला देता। आज यह हाल है कि केसरीलाल को थाने में ले गये। मैंने पूछा कि उनको क्यों अरेस्ट किया, तो मुझे कहा कि आप भी चलिये और मुझे भी वहां ले जाकर गिरफ्तार कर लिया। अंग्रेजों ने भी कभी इस तरह बेशर्मी से गिरफ्तार नहीं किया। सन् ४६ की जुलाई में ब्यावर की २० हजार जनता की मीटिंग में जब पुलिस हमको गिरफ्तार करने आई सो–सवा सौ पुलिस के सिपाहियों के साथ तो ब्यावर के मजदूरों ने हमको छीन लिया, गंगानगर में मजदूरों पर जुल्म किया गया जिसके लिये गंगानगर में हड़ताल हुई, रामसिंह को भूख हड़ताल करनी पड़ी। भीलवाड़ा में भोडल के मजदूरों को आज तक तनख्वाह नहीं चुकाई जा रही हैं। हमारे मुख्य मंत्री भीलवाड़ा जाते हैं, किन्तु कभी देखा कि उन भोडल के मजदूरों की क्या हालत है ?

— अब मैं शिक्षा के बारे में थोड़ा कहना चाहता हूं, थोड़ा समय मुझे और भी दिया जाय।

एक माननीय सदस्य : On a point of Order, Sir, as the time limit has been fixed up he should be checked and asked to take his seat.

श्री अध्यक्ष : आप पांच मिनट में समाप्त कर दें।

श्री कुमारानन्द : अब शिक्षा के बारे में कहना चाहता हूं। मैं पुलिस के बारे में कहना चाहता था कि क्या धोखा हो रहा है। कुछ टाइम दें तो गवर्नमेंट एम्प्लोइज के आंकड़े बता कर बैठ जाऊंगा।

सरकारी कर्मचारियों को पे कमिशन बैठने से पहले क्या मीलता था, वे आंकड़े बताऊं। सब मिलाकर पे कमीशन ने १२७ रू० ५० नया पैसा थर्ड ग्रेड वालों को दिया है। अब दिखाने को कह दिया कि तनख्वाह बढ़ा दी गई है, लेकिन उनका प्रोविडेन्ट फंड कट जाता है साढ़े सात रुपया, वह क्या उनके घर में पहुच जाता है? इस मंहगाई के वक्त में क्या हालत होती है उनके परिवारों की। ऐसे ही अजमेर मेरवाड़ा में मर्जर से पहले सेन्ट्रल गवर्नमेंट का पे स्केल था। अजमेर मेरवाड़े का राजस्थान में मर्जर हुआ तो मुख्य मन्त्री ने कहा कि अजमेर मेरवाड़ा के कर्मचारियों के ग्रेड में कमी नहीं होगी। पर ग्रेड में कमी हो गई और हजारों कर्मचारी मारे मारे फिर रहे हैं, उन लोगों के ७०–८० रुपये कम हो गये, कितने ही टेम्पोरेरी बन गये।

इसी तरह राजस्थान के टीचर्स का ६१-४-८०का ग्रेड था अब ७३ से हुआ है, पर देखें तो पहले से एक रुपया कम ले जाते हैं। तीसरे, अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूँ, मुख्य मन्त्री का ध्यान सरकारी कर्मचारियों की ओर दिलाना चाहता हूँ, उनकी तनख्वाह में उल्टी कटौती की है। आपके बड़ी बड़ी तनख्वाह वालों की तरक्की हुई है। मैं बहुत पुराना राजनैतिक सेवक हूँ। करांची के १९३० के अधिवेशन में कांग्रेस ने प्रस्ताव पास किया था कि किसी को ५००) रु० से ज्यादा तनख्वाह नहीं दी जायगी, आज ऊंचे वालों की ऊंची ऊंची तनख्वाह और गरीबों को बिल्कुल ही नहीं, कुछ भी नहीं। कल केरल, रूस और चीन के बारे में कहा गया। चीन के मामले में मैं कहना चाहता हूँ कि देश पर किसी तरह का संकट आया तो हम सबसे आगे रहेंगे :

देश की आजादी के लिए, चाहे कोई भी हमारे देश पर हमला करे सबसे पहली पंक्ति में हम होंगे :

"देश की उलफत का जलवा,

दिल से मिट सकता नहीं।

कौम की खिदमत की ख्वाइश,

कभी जाती नहीं"

मिल पे घिसने से संदल की बू जाती नहीं'

जमीन पे गिरने से फूल की महक जाती नहीं"

मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि चाहे चीन हो या और कोई; हम देश की आजादी के लिए, हिन्दुस्तान की चप्पा चप्पा जमीन के लिए सबसे पहले हम लड़ेंगे।

(श्री कुमारानन्द)

गोवा में कांग्रेस के लोग चुप्पी पकड़ कर बैठे जब कि हमारी पार्टी के लोगों ने वहां जाकर गोली खाई। वहां पर अरुणा आसफ-अली की दस हजार फौज गुरिल्ला सैनिक लगी हुई थी। मैं कहना चाहता हूँ कि गोवा पर हमला हुआ तो हमारे प्राइमिनिस्टर की, यह सच्ची बात है, अमेरिका के राजदूत ने आकर कहा कि वर्ल्ड वार शुरु हो जायगी। रूस के राजदूत ने रात को १२॥ बजे कहा कि हम मदद करेंगे, मार्च ओन। १२॥ बजे रात को मार्च शुरु हुआ। उस समय रूस की ओर से नेहरू को बल मिला। रूस हमारा मित्र देश है। उसकी निन्दा करना यहां अच्छा नहीं है। हमको भिलाई का कारखाना मिला वह रूस की बदौलत ही मिला है। अंग्रेजों ने कहा कि हिन्दुस्तान में मशीनरी नहीं बन सकती, अंग्रेजों ने कहा कि तेल नहीं है हमको आज रुमानिया की वजह से तेल मिल रहा है। केरल के लिए कहते हैं, केरल में जब हमारी पार्टी का मंत्रिमंडल था तो वहां पर मिनिस्टर ५००) रु० तनख्वाह लेते थे। किसानों को जमीन दिया गया था। आपने तो, कांग्रेस ने तो मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्था के साथ गठबन्धन करके केरल में हमारी संस्था के मंत्रिमंडल को बेरहमी से खत्म कर दिया। अमेरिका जो हमारी संस्था से खिलाफ है उसने भी केरल में मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक संस्था से गठ बन्धन करने पर बहुत खिलाफ लिखा था। लेकिन केरल में शासन को खत्म करके आपने संविधान का गला घोंट दिया।

(समय—समाप्ति—सूचक घंटी)

मैं बहुत ज्यादा टाइम लेता नहीं। मैं कहना चाहता हूँ 'खास कर कांग्रेस से कहना चाहता हूँ कि यह आपका आखिरी दौर है। आप मानसिंहजी से दोनों हाथ मिला लें। उनके साथ आपका मेल हो सकता है। हम गद्दारों में शामिल हैं, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हम गरीब किसान और मजदूरों के साथ हैं, उनकी भुखमरी मिटाने के लिए हमारे पास प्रोग्राम है, और किसी पार्टी के पास नहीं है। भुखमरी, बेकारी मिटाने के लिए हमारे सामने प्रोग्राम है उसके लिए बहस करने के लिए तैयार हैं; और किसी के पास प्रोग्राम नहीं है। इतना कहते हुए बैठूंगा।

(अनेक माननीय सदस्य बोलने के लिए प्रस्तुत हुए)

श्री अध्यक्ष : श्रीमती लक्ष्मीकुमारी।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत (भीम) : अध्यक्ष महोदय........

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय, कृपया निर्दलियों की ओर भी ध्यान दें।

श्री अध्यक्ष : कृपया आप अपना स्थान ग्रहण करें।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत : अध्यक्ष महोदय, मैं राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का समर्थन करती हूँ। जो राज्य के विकास और प्रगति के आंकड़े उन्होंने दिये हैं, जो ब्यौरा दिया है वह आशाप्रद है। विकास की जिन मंजिलों को हम तय कर चुके

(श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत)

हैं उनके ऊपर हमें प्रसन्नता है। जो आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं उनके ऊपर हमें संतोष है। राज्य के विभिन्न कामों में, विविध पहलुओं पर जो प्रकाश डाला गया, उसका मैं स्वागत करती हूँ; पर साथ ही यह सोचती हूँ कि कई महत्वपूर्ण प्रश्न उस अभिभाषण में छूट गये जिनका उल्लेख नहीं किया गया है। ऐसे ही एक महत्वपूर्ण प्रश्न को, एक भूले हुए प्रश्न को मैं सदन के सामने रखना चाहती हूँ।

हम सब जानते हैं कि हमारा राज्य एक विस्तृत राज्य है और हमारे राज्य की एक विशेष संस्कृति है, विशेष परम्परा है, विशिष्ट साहित्य है और विशिष्ट भाषा है। मैं पूर्ण सम्मान के साथ सरकार का ध्यान उस भाषा और साहित्य के लिए खींचना चाहती हूँ। मुझे कहते हुए दुख होता है कि हमारी भाषा और हमारा साहित्य हमारे राज्य में उपेक्षित है। क्यों? जो व्यवहार उसके साथ होना चाहिये वह नहीं हुआ। वैसे ठीक है, पांच वर्ष में सरकार का ध्यान उस ओर गया, कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये, साहित्य अकादमी की स्थापना हुई और उससे साहित्यकारों को प्रेरणा मिली। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि साहित्य अकादमी की स्थापना होने पर भी हमारी भाषा और साहित्य को न बल मिला, न विकास हुआ और न वृद्धि हुई। इसका कारण यह है कि साहित्य अकादमी में हमारी भाषा और साहित्य को प्राथमिकता नहीं दी गई। अध्यक्ष महोदय, यह कितनी अजीब बात है कि हमारे राज्य में अकादमी की स्थापना हो और हमारे राज्य की भाषा और साहित्य के विकास और वृद्धि के लिए उसके लिए स्थान हो उस अकादमी में उस भाषा और साहित्य को प्राथमिकता नहीं दी जाती। साहित्य अकादमी के बजट में दसवां हिस्सा भी हमारी भाषा और साहित्य पर आज तक भी खर्च नहीं किया गया। अध्यक्ष महोदय, हमारे राज्य में हमारी भाषा और साहित्य की उपेक्षा कहां तक हो चुकी है? यह मैं मानती हूँ कि सरकार का ध्यान इस ओर गया है और उस दिशा में काम करने के लिए सन् १९५८ में एक कमेटी की स्थापना की थी और रिपोर्ट मांगी थी कि साहित्य और भाषा के लिए क्या कदम उठाये जायं। उस कमेटी के अध्यक्ष श्रीमान् लक्ष्मीलालजी जोशी थे। मैं भी उस कमेटी की सदस्या थी और मुनि जिनविजयजी सदस्य थे। उस कमेटी ने यह रिपोर्ट पेश की और यह सुझाव दिया कि राजस्थान के साहित्य और भाषा के लिए, उसके विकास और वृद्धि के लिए एक अकादमी की स्थापना की जानी चाहिये, तब ही भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर काम किया जा सकता है। मुझे नहीं मालूम है कि सरकार ने उस पर क्या कदम उठाये, क्या विचार है और क्या योजना है। मैं सरकार से निवेदन करूंगी कि इस विषय पर ठोस कदम उठायें।

अध्यक्ष महोदय, भाषा और साहित्य का प्रश्न कोई मामूली प्रश्न नहीं है, यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है, इसे टाला नहीं जाना चाहिये। आयरलैंड की आजादी की जब लड़ाई लड़ी जा रही थी तो एक बार डी.-वेलरा ने कहा था कि कोई मुझे पूछे कि पहले अपनी भाषा रखना चाहोगे या अपनी आजादी; उसने कहा कि कोई मुझे पूछे तो

(श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत)
मैं यह स्पष्ट कहूँगा कि मुझे भाषा चाहिये। अगर हमारे पास अपनी भाषा है तो हम आजादी लेकर रहेंगे; अगर हमारे पास अपनी भाषा नहीं है तो हम आजाद होने के बाद भी हमारी आजादी कायम नहीं रख सकेंगे, आजाद होने के बाद भी हम मानसिक गुलाम रहेंगे। मैं सरकार से निवेदन करूंगी कि इसके लिए विचार किया जाय। या तो इसके लिए अलग अकादमी कायम हो या अब काम कर रही है अकादमी उसमें एक बड़ी धन राशि इस पर खर्च की जाय। दूसरा यह है कि राजस्थान का साहित्य, लोक साहित्य और संस्कृति से भरा पड़ा है। पर दुख है कि रत्ती भर इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। आज के लोकतन्त्रीय युग में लोक साहित्य और संस्कृति की आवश्यकता है, उसके विकास और वृद्धि की बड़ी आवश्यकता है। दूसरे देशों में लोक साहित्य और संस्कृति में काम चलता है; इसीलिए बल मिलता है, गति मिलती है। आज हमारे राज्य में उसे गति, बल और रफ्तार की आवश्यकता है। लेकिन समस्या यह है कि इस लोक साहित्य और संस्कृति पर काम कौन करे। साहित्य अकादमी और पुरातत्व मंदिर काम कर सकते हैं। मैंने लोक साहित्य और संस्कृति के विषय में साहित्य अकादमी और पुरातत्व मंदिर को कहा कि इनको अपने अन्तर्गत ले लें। उन्होंने उत्तर दिया कि वैसे ये महत्वपूर्ण काम हैं, उनको किया जाना चाहिये, लेकिन इनका हमारे क्षेत्र से सम्बन्ध न होने के कारण हम काम करने के लिए मजबूर हैं।

(२ म. प.)

मैं फिर पुरजोर शब्दों में अर्ज करूंगी कि या तो इस कार्य को साहित्य एकेडेमी को सौंप दिया जाय या पुरातत्व मन्दिर को सौंप दिया जाय या इसके लिए अलग एकेडेमी की स्थापना हो।

अध्यक्ष महोदय, मैं जानती हूँ समय कम है। मैं चाहती हूं कि दूसरों को भी समय मिले, फिर भी इसके ऊपर संक्षेप में दो-तीन सुझाव रख देना चाहती हूँ। मेरा पहला सुझाव यह है कि हमारी यहां की युनिवर्सिटी में राजस्थानी सीट कायम की जाय और इस भाषा का कॉलेज में पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाय। अध्यक्ष महोदय, यह कितना विचित्र है कि हमारे राज्य में हमारी अपनी भाषा को मान्यता प्राप्त नहीं है, उसको पढ़ाने तक का प्रबन्ध नहीं है, जब कि हमारे यहां विदेशी भाषा–जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं को पढ़ाने का प्रबन्ध है।

दूसरा मेरा सुझाव यह है कि हमारे यहां की प्रारम्भिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा राजस्थानी भाषा में होनी चाहिए। इसको प्रारम्भ करने के लिए लिंग्विस्टिक लोगों की एक कमेटी बनायी जा सकती है जो विज्ञान, जनरल नॉलेज आदि पर पुस्तकें तैयार करे। ऐसी पुस्तकें तैयार करे जिनके द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा राजस्थानी के माध्यम से दी जा सके।

तीसरा मेरा सुझाव यह है कि दूसरे राज्यों की उत्तमोत्तम पुस्तकों का हमारी यहां की भाषा में अनुवाद कराया जाय और विदेशी भाषा की पुस्तकों का भी अनुवाद कराया जाय। यह अनुवाद की परम्परा अभी इसी साल से टैगोर पुस्तकों का राजस्थानी भाषा में

(श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत)

अनुवाद कराना प्रारम्भ अकेडेमी द्वारा किया गया है, इसके लिए साहित्य अकेडेमी को धन्यावद दिए बिना नहीं रह सकती। अध्यक्ष महोदय, मेरे इन सुझावों पर सरकार विचार करेगी, यही निवेदन करती हुई मैं अपना स्थान ग्रहण करती हूं।

श्री अमृतलाल यादव (वल्लभ नगर) : अध्यक्ष महोदय, आज राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद होते हुए तीसरा दिन है और इस तृतीय आम चुनाव के बाद जो हमारे हाउस की तस्वीर बनी है, विरोधी दल के सदस्य जो अलग अलग रूप से आये हैं उनके प्रमुख नेताओं के भाषणों को सुनने का मौका मिला और मैं यह अर्ज करना चाहता हूं, मैंने भी गौर से और दिलचस्पी से उनके भाषणों को सुना है; क्योंकि हमने अपने देश में प्रजातंत्र तरीके से समाजवादी अर्थ व्यवस्था लाने का निश्चय किया है और इस दृष्टि से उन सारे विचारों को सुन कर उनको आंकने का हर विधायक का फर्ज है। मैं ऐसा मानता हूँ कि हमारे देश में जो यह आम चुनाव हुए हैं यह कोई छोटी-मोटी घटना नहीं, बहुत बड़ी घटना है। दुनियां के जितने भी प्रजातन्त्रीय राष्ट्र हैं उन सब में हिन्दुस्तान ही शायद सब से बड़ा प्रजातान्त्रिक राष्ट्र है जिसमें वयस्क मताधिकार के आधार पर इतना बड़ा चुनाव हुआ। इतने बड़े कार्य में अपने राजस्थान में ११॥ हजार मतदान केन्द्र थे और इनमें करीब ३२ हजार कर्मचारी लगे, जिन्होंने शान्तिपूर्वक तरीके से ७ दिन में चुनाव सम्पन्न कराये। उसके लिए राज्यपाल महोदय ने उसकी तारीफ की। इस दृष्टि से वे प्रशंसा के लायक भी हैं। राज्यपाल महोदय ने अगर अपने अभिभाषण में इस महत्वपूर्ण पहलू को प्रथम स्थान दिया तो यह कोई अप्रासंगिक नहीं था; इसलिए इस अभिभाषण के लिए वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रजातन्त्र में हम सब जानते हैं कि स्वस्थ विरोधी दल का होना आवश्यक है। इस दृष्टि से मैं आशा करता था कि विरोधी दल जो अब की बार आया है वह शायद कुछ अंश तक इस सदन में स्वस्थ परम्परा कायम करेगा और रचनात्मक और क्रियात्मक सुझाव उनकी ओर से आयेंगे जिससे हमारा यह प्रजातंत्र ज्यादा मजबूत बनेगा और प्रजातान्त्रिक परम्परायें सुदृढ़ होंगी। इससे हम यह समझते हैं कि राजस्थान विधान सभा का विरोधी दल इसको और आगे बढ़ाना चाहता है, लेकिन माननीय अध्यक्ष, यह देख कर बड़ी निराशा हुई; विरोधी दल के नेता के भाषण से जो उन्होंने विचार व्यक्त किये उनको सुनकर निराशा हो हुई; वे कुओं की बात लेकर, पंचायत समिति की बात लेकर उसी में अपने आपको उलझा गये और उस सीमा से आगे नहीं बढ़ सके। वास्तव में जो उनसे हमें आशा थी कि वे प्रान्त के महत्वपूर्ण मसलों पर प्रकाश डालेंगे और देश के अन्दर जो योजनाबद्ध विकास हो रहा है उसके बारे में क्रियात्मक सुझाव देंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं उन राजाशाही और जागीरदारी प्रथा की बातों में जाना नहीं चाहता, उनको पुरानी मानकर उनको अब छोड़ देना चाहिये। जो कल हो गया उसको जाने दीजिये, पर जो आज वर्तमान में है उसको देख कर हमें चलना चाहिये। डूंगरपुर महारावल जिस समय महारावल थे उस

(श्री अमृतलाल यादव)

समय उन्होंने क्या किया, उसको खयाल में न रखते हुए आज वे विरोधी दल के नेता के रूप में हैं; उनके जिस प्रकार के विचार हैं उनके उन विचारों से उनको आंकना चाहिये। हम सोचते थे कि वे विरोधी दल के नेता की हैसियत से राजस्थान के विकास के संबन्ध में क्रियात्मक और महत्वपूर्ण योगदान देना चाहते हैं; इस दृष्टि से यदि उनके भाषण को देखता हूं तो एक प्रकार से हमें निराशा होती है।

मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां एक सवाल आया कल, एक बाड़मेर से सज्जन आते हैं, उन्होंने प्रिवीपर्स के बारे में कुछ बातें कहीं। इस बारे में मैं समझता हूं देश के अन्दर आज जब कि विकास के लिये हमें काफी धन की आवश्यकता है और देश के अन्य नागरिक टैक्सों के भार में दब रहे हैं तो यह स्वाभाविक ही है कि ऐसी आवाज उठे कि यह प्रिवीपर्स के रूप में जो भार हमारी एक्सचेकर पर पड़ रहा है वह हटाया जाय। प्रगतिशील देशों में यह आवाज उठाना स्वभाविक है, इसे दबाया जा नहीं सकता और दबावेंगे तो यह दबेगी भी नहीं। पर हम मानते हैं कि जिस तरह से राजाशाही, जागीरदारी और किसान और शासक के बीच की एजेन्सियां समाप्त हुईं उसी तरह से यह सवाल भी हल होना चाहिये। लेकिन इसमें माननीय विरोधी दल के नेता ने इन्टरप्ट करते हुए कहा कि 'तूंबी' दे दो। तो जहां वे बहुत नम्रतापूर्वक बोल रहे थे और एक सुझाव देने की बात थी, वहां उनके अन्दर की जो एक कोशिश थी वह इन शब्दों के साथ झलक आई और मुझे ऐसा लगा कि इसके समाप्त करने की बात से उनको बहुत बड़ा दुख है। और इसलिये यह जो रिमार्क्स दिये कि 'तूंबी दे दो', इससे ऐसी बात झलकी कि जो ट्रेन्ड आज चल रहा है उसको स्वस्थ ढंग से सोचने की परम्परा वे नहीं डालना चाहते।

उनकी पार्टी के दूसरे सज्जन बोले वे हमारे जाने-माने और सुपरिचित मित्र हैं। एक बात जरूर है। इस बार जो वे बोले तो उनका तरीका बदला है, लहजा बदला है पर वह ऐसा आइरोनिकल रहा है जो कुछ ऐसा लगा कुछ देर तक तो कि शायद हाउस के समय का मुझे तो ऐसा लगा दुरुपयोग सा ही कुछ पाया। जिस तरह से कि उन्होंने छोटी–छोटी बातों और व्यक्तिगत कॉन्स्टीट्यूएन्सी की बातों का जिक्र किया, ऐसी बातें तो शायद वे मन्त्री महोदय के अपने दफ्तर में जाकर कह सकते थे, उनसे बात कर सकते थे। पर कुछ इस ढंग से बातें कहीं कुछ अधिकारियों के बारे में, कुछ मन्त्रियों के बारे में और एकाध मित्र ने सूचना दे दी तो धन्यवाद भी उसी वक्त दे दिया। तो मैं तो कहता हूं कि उन्होंने इससे कोई स्वस्थ नहीं, अस्वस्थ परम्परा ही शुरू की है और इस अस्वस्थ परम्परा को डालने पर शायद वे खुश हों, पर मुझे इससे बहुत दुख हुआ है और जो मैं समझता था कि जो एक स्वस्थ विरोधी दल और स्वस्थ तरीके से प्रजातन्त्र में स्वस्थ विरोध अपेक्षित है, वह मेरी जो अपेक्षा थी वह बहुत कम हुई और इससे मुझे बहुत निराशा हुई।

इसके बाद एक नई पार्टी आज आई है इस सदन में; वह है कॉम्यूनिस्ट पार्टी। इसका प्रजातन्त्र से तो कोई मेल ही नहीं है। उसके लीडर जो बोले

(श्री अमृतलाल यादव)

उनके प्रगतिशील विचारों के तो मैं सराहना करता हूँ, पर इन विचारों के पीछे उनकी भावना क्या है, इसमें मुझे सन्देह है। मैं इस बात का तब विश्वास करता जब मैंने उनका रवैया नहीं देखा होता, जब मैं पुनर्वास मन्त्री था। वे इस बात को जानते हैं कि राजस्थान ने दो लाख मेव अलवर-भरतपुर के और चार लाख पुरुषार्थी जो बाहर से आये उनको अलवर, भरतपुर, गंगानगर और राजस्थान के दूसरे इलाकों में बसाया। यह राजस्थान ही पहला प्रदेश था जिसने गैर दावेदार, नोन क्लेमेन्ट पुरुषार्थियों को सबसे पहले अपने यहां जमीन (खेती) दी। इस बात की उन्होंने सराहना नहीं की। उनको रोजी–रोटी पर लगाया, इस बात को वे नजर अन्दाज कर गये। हालांकि यह सरकार का फर्ज मान कर सरकार ने किया, उनको बसाया, कर्ज दिया, साधन दिये और यह देकर सरकार ने कोई उनके साथ अहसान जरूर नहीं किया। कोई अहसान किया, यह मैं नहीं मानता; पर छोटी सी इस बात को लेकर उन्होंने सरकार के खिलाफ एजीटेशन किया और उस एजीटेशन को लेकर सरकार की आलोचना की।

(समय–समाप्ति–सूचक घन्टी)

तो जहां इस छोटे से मसले पर उन्होंने सरकार की आलोचना की वहीं सरकार ने दूसरी तरफ इतना महत्वपूर्ण काम उनको बसाने का किया सो उसकी प्रशंसा में उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। लगता है इससे कि दो चीजों को मिला कर तीसरी चीज, गड़बड़ पैदा कर देना, यह उनका लक्ष्य रहता है।

मैं आज भी उनके दूसरे लोग जो बैठे हैं उनकी बहुत इज्जत करता हूँ और उनके त्याग और बलिदान की सराहना करता हूँ, पर जो विचार आज उन्होंने प्रकट किये, यह जो मानी हुई बात है कि दुर्भाग्य से ऐसी स्थिति है जहां विदेशी शक्ति जिसके बारे में हम सब जानते हैं अगर हमारे देश पर आक्रमण करे और उस बारे में उन्होंने सदन के प्रांगण में यह कहा कि वे पहले व्यक्ति होंगे जो उनके मुकाबले के लिये जावेंगे तो शायद उस दिन कॉम्युनिस्ट पार्टी को सोचना पड़ेगा कि वे इस पार्टी में उनको रखे या नहीं। इस बात को हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा जानता है। कॉम्युनिस्ट पार्टी ने आज तक भी उस देश को एग्रेसर मन्जूर नहीं किया है और स्पष्ट शब्दों में नहीं कहा है। यही वजह है कि हिन्दुस्तान के मतदाताओं ने इस बात का ख्याल किया।

तो उनके प्रगतिशील विचारों की सराहना करते हुए भी उनकी भावना में मुझे सन्देह है और अपने शासन के १४ साल के बाद इस तरह का कोई सन्देह हम नहीं रखना चाहते हैं कि जिससे इस देश की आजादी को खतरा पहुंचे और प्रजातन्त्र की नींव कमजोर हो। तो यह बात जरूर मानता हूँ कि दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में आजादी को आये १८ साल हो गये; पर फ्यूडल वेल्यूज़ आज भी महत्वपूर्ण बल रखते हैं। आज भी कई राजा या रानी....

(अनवरत समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

माननीय अध्यक्ष, मैं तीन मिनट में खतम कर दूंगा। तीन मिनट।

श्री अध्यक्ष : एक मिनट केवल ।

श्री अमृतलाल यादव : मैं तीन मिनट में खत्म कर दूंगा अध्यक्ष महोदय, केवल तीन मिनट देने की कृपा और करें। तीन मिनट दिये जावें।

(विराम)

तो आज कोई राजा–रानी खड़े होते हैं तो बहुत लोग जमा हो जाते हैं । राजा–रानी अगर स्पीच देते हैं तो बहुत लोग सुनने आ जाते हैं । एक दूसरा वर्ग भी है सिनेमा एक्टर्स और एक्ट्रेसों का । अगर वह वर्ग भी आ जाता है तो लोग काफी खड़े हो जाते हैं । तो यह भी असल में हमारे प्रजातन्त्र की शक्ति को चुनौती है । आज भी फ्यूडल वेल्यूज महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, इसे हमें खत्म करना है और डेमोक्रेटिक वेल्यूज़ को बढ़ाना है । तो मैं समझता हूं कि विरोधी दल इस तरह इस प्रजातन्त्र को कायम रखने में हमारा साथ देगा ।

एक-दो सुझाव देकर क्योंकि तीन मिनट का समय मुझे मिला है और मैं बैठ जाना चाहूँगा । राजस्थान में शिक्षा की प्रगति हुई है और इसमें मुख्य मन्त्रीजी ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इसकी मैं प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता । पर मैं यह जरूर मानता हूं कि कम्पलसरी प्राइमरी एजुकेशन का लागू नहीं होना खटकने वाली बात है । इस तरफ सरकार को सोचना चाहिये ।

दूसरा सुझाव यह देना चाहता हूँ, हमारे निम्बाहेड़ा से आने वाले जनसंघी सदस्य ने मानवता के नारे लगाये और जब वे मानवता के ये नारे लगा रहे थे तो मुझे हंसी आ रही थी । जिस दिन राजस्थान के मुख्य मन्त्रीजी ने उमंग के साथ जगदीशजी का मन्दिर हरिजनों के लिये खुलवाया तो उस दिन मैं पूछना चाहता हूँ कितने जनसंघी थे जो जुलूस में शामिल हुए और दर्शन कराने की बात कही ?

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फोर्मेशन, सर, सारे कार्यक्रम कांग्रेस के बनाये गये थे, इसलिये शरीक नहीं हो पाये हम ।

श्री अमृतलाल यादव : यह बिल्कुल गलत बात है ।

श्री विजयसिंह झाला : बिल्कुल सही बात है ।

श्री अमृतलाल यादव : बिल्कुल गलत बात है ।

श्री विजयसिंह झाला : बिल्कुल सही बात है ।

श्री अमृतलाल यादव : मैं आपसे कहना चाहता हूँ । मन्दिर सरकार की तरफ से खोला गया था । मैं मौजूद था और किसी सरकारी कार्यक्रम में रोक-टोक का सवाल नहीं होता है । जब काशी में विश्वनाथ का मन्दिर हरिजनों के लिये खोला गया तो बाबा करपात्रीजी तब से लगे हुए हैं; एक नया विश्वनाथजी का मन्दिर बनाने के लिए और इसके लिये उनको चन्दे दिये जा रहे हैं बड़े बड़े जनसंघियों द्वारा । तो मैं पूछना चाहता हूं उनसे....

श्री विजयसिंह झाला : ओन ए पोइन्ट ऑफ क्लेरिफिकेशन, सर, वे पहले जनसंघ का कॉन्स्टीट्यूशन पढ़ लें तो उनको पता लग जाय कि हम क्या करना चाहते हैं। हम तो इसके लिये आन्दोलन करना चाहते हैं।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : करपात्रीजी किस पार्टी के हैं, यही उनको मालूम नहीं है। पहले वे मालूम करें।

श्री अमृतलाल यादव : राजस्थान का एक एक हरिजन जानता है कि कांग्रेस के मुकाबले में जनसंघ ने क्या किया है ?

श्री विजयसिंह झाला : बिल्कुल गलत है आपका यह कथन।

श्री अमृतलाल यादव : आप इस बात से निश्चिन्त रहिये। हरिजन उनकी बातों के मुगालते में नहीं आ सकते।

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : जनसंघ तो आन्दोलन शुरू कर रहा है, अस्पृश्यता निवारण का।

श्री कृष्णकुमार गोयल : कार्य आरम्भ करिये, आन्दोलन तैयार है।

श्री अमृतलाल यादव : आरम्भ करने की सलाह देने से पहले आन्दोलन चलाने से आपको कोई नहीं रोकता।

श्री कृष्णकुमार गोयल : आमन्त्रण आपकी ओर से होना है।

श्री अध्यक्ष : आप भाषण जल्दी समाप्त कर दीजिये।

श्री अमृतलाल यादव : श्रद्धालु भक्त जो ईश्वर का दर्शन करना चाहते हैं उनको दर्शन हेतु मन्दिर में ले जाने के काम की शुरुआत पहले इस ओर से हुई। इस ओर से फिर प्रारम्भ करने का प्रश्न नहीं है। यहां तो ईमानदारी का सवाल है। कौन ईमानदारी से विश्वास करता है और कौन इसका सुबूत देता है, इसके ऊपर विश्वास होगा।

अब इसके बाद मैं सहकारिता के बारे में अपना सुझाव देना चाहता हूं....

(समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

श्री अध्यक्ष : श्री नत्थीसिंह।

श्री अमृतलाल यादव: अध्यक्ष महोदय, एक-आध मिनट।

श्री अध्यक्ष: आपका समय समाप्त हुआ। श्री नत्थीसिंह, भरतपुर।

श्री अमृतलाल यादव : एक-आध मिनट।

श्री अध्यक्ष : श्री नत्थीसिंह।

श्री दुर्गालाल बाढदार (हवामहल, जयपुर) : It is requested that chance should be given to all the parties.

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के ३४ वें पैरा में एक बात यह कही गई है :—

"हम लोकतंत्रात्मक जीवन-क्रम अपनाने के लिये वचन बद्ध हैं और समाजवादी समाज

Page No 58

(श्री नत्थीसिंह)

रचना के ढांचे में अपने समाज को ढालने के लिए इस सदन के समस्त सदस्यगण के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता होगी।"

मुझे उनकी सहयोग की बात से कतई मतभेद नहीं। साथ ही उन्होंने ३४ वें पैरा के शुरू में यह भी कहा है—

"अतीत में अपनाई गई नीतियों तथा पिछले वर्षों में प्राप्त की गई सफलताओं, जिनमें राजस्थान के नागरिकों ने विशेष रूप से भाग लिया है, के कारण इस राज्य में लोकतन्त्र की जड़ें न केवल राजनैतिक बल्कि आर्थिक व सामाजिक रूप से भी मजबूत हुई हैं।"

मुझे इससे तीव्र मतभेद है। मैं यह बताना चाहूंगा कि पिछले वर्षों में जो नीतियां इस सरकार के द्वारा अपनाई गई हैं उनसे लोकतान्त्रिक परम्पराएं पड़ी हैं या नहीं पड़ी हैं और इस बात को हमें इस दृष्टि से देखना चाहिए कि हमारे पड़ोसी देशों में पाकिस्तान में क्या हुआ, लंका में क्या नौबत आई और वर्मा में अभी अभी क्या हो गया है ? इसलिए जरूरत इस बात की है कि जब राजकीय शासक दल इस बात का दावा करता है तो इसका विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि हम लोकतांत्रिक आचरण पर भी अमल करें और इसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी शासक दल पर होती है। उदाहरण से मैं एक बात साबित करना चाहूंगा कि जब जनतंत्र को मजबूत बनाना होता है तो सबसे बड़ी बात यह होती है कि संसदीय परम्परा में सिविल सर्विसेज़ बिल्कुल निष्पक्ष हों। मैं यह नहीं कहता कि हमारी सिविल सर्विसेज, पुलिस सर्विसेज़ या राजकीय सेवायें निष्पक्ष नहीं हैं, लेकिन इस बात की कोशिश जरूर की जाती है, उनको इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे निष्पक्ष न रह सकें और यह सब कांग्रेस दल अपने आचरण से करता है। उदाहरण के लिए मैं यह बताना चाहूंगा कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव के दौरान में नहीं, अपितु चुनाव के बहुत पहले जब मैं इसी दल में शामिल था-कांग्रेस दल में शामिल था–तब एक थानेदार महोदय ने हवालात में कत्ल किया और वह भी कुम्हेर के थाने में। उस समय जनता ने मांग की कि इसकी निष्पक्ष जांच की जाये। ३ महीने के निरन्तर आन्दोलन के बाद जिसमें कांग्रेस के कार्यकर्ता भी शामिल थे, जिसमें समस्त विरोधी दल के भी आदमी शामिल थे, ३ महीने के बाद हमारे राज्य के भूतपूर्व गृह मन्त्री ने हिम्मत की कि उस थाने को सस्पेण्ड किया। लेकिन केन्द्र के राज्य मन्त्री ने टेलीफोन पर ४८ घन्टे में उसके सस्पेन्शन को कैन्सिल इसलिए करवाया कि पंचायत समितियों के चुनावों में थानेदार ने उनको मदद दी थी और इस कारण उनको यह अपेक्षा थी कि आगे आने वाले चुनावों में भी मदद देगा। जब हम उच्च अधिकारियों से मिले तो उन्होंने कहा कि हम मजबूर हैं और कुछ नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि हमने इसके लिए एक्शन लेने की कोशिश की लेकिन नेताओं के हस्तक्षेप के कारण हम कुछ नहीं कर सकते। इस तरह का आचरण जब हम कांग्रेस दल का देखते हैं तो हम कहते हैं कि हम लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए खतरा पैदा करते हैं। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि

(श्री नत्थीसिंह)

इन थानेदार महोदय ने कांग्रेस की जीप में बैठ कर कांग्रेस का प्रचार किया।

इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, मैं आश्चर्य की बात बताऊं कि कांग्रेस का दफ्तर उनके घर के सामने खोला गया जिसमें सुबह से शाम तक वे वहीं रहते थे। वहां पर लोगों को पकड़ पकड़ कर हवालात में बन्द करते थे और लोगों को तब छोड़ा जाता था जब कि उनसे धर्म उठा लिया जाता था कि वे मत कांग्रेस को ही देंगे। इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, मैं दूसरी बात यह भी रखना चाहता हूं कि जहां तक स्वायत्त शासन संस्थाओं का सम्बन्ध है उनमें भी इसी प्रकार से हस्तक्षेप किया जाता है और इसी कारण स्वायत्त शासन संस्थायें अपना काम ठीक ढंग से नहीं कर सकतीं। भरतपुर की म्युनिसिपैलिटी के खिलाफ भ्रष्टाचार की कुछ शिकायतें थीं और उन शिकायतों के लिए यहां के स्वायत्त शासन मन्त्री ने आदेश दिये कि उनकी जांच की जाये। लेकिन केन्द्र के मन्त्री के हस्तक्षेप के कारण यहां के मुख्य मंत्री महोदय ने उस जांच को बन्द कर दिया और जिस दिन सिटी मजिस्ट्रेट जांच करने वाले थे उसी दिन टेलीफोन पर ऑर्डर्स पहुंचे कि इनके खिलाफ जांच नहीं की जाये। वहां के चेयरमैन को यहां बुला कर कहा गया कि या तो केन्द्र के मन्त्री के साथ जाईये, नहीं तो आपको सस्पेन्ड कर दिया जायेगा। इस प्रकार से हस्तक्षेप किया जाता है। मैं कहता हूं कि चाहे कोई भी हो, चाहे चेयरमैन हो, चाहे सदस्य हो अगर भ्रष्टाचार के आरोप किसी पर हों तो सही रूप से उनकी जांच की जानी चाहिये। इस प्रकार से लोकतांत्रिक परम्परा की हत्या करना है। यही नहीं, इससे आगे और अर्ज कर देना चाहता हूं कि जब इस प्रकार के लोगों को, जो चुनावों में भाग लेते हैं उनको हमारे मन्त्री महोदय कार में बैठा कर दौरा कराते हैं तो उसका क्या असर होता है, यह आप सब जानते ही हैं। वहां के एस० पी० ने थानेदार को डांटा तो उन्होंने कहा कि तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मेरी रक्षा करने वाला तो दिल्ली में है। इस प्रकार की कार्यवाहियां करके आप इस प्रकार की फिजां पैदा करते हैं कि जो निष्पक्षता से काम करना चाहें वह नहीं कर सकें। जब दूसरे लोग देखते हैं कि बेईमान आदमियों को प्रोत्साहन दिया जाये तो क्यों नहीं वह भी इस प्रकार के काम करें और इसी प्रकार की परम्परा को अपनायें।

पहले पंचायत समितियों के चुनावों में इस प्रकार से दो थानेदारों ने काम किया था तो इस बार ८ थानेदारों ने इस बात का काम किया। जब मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि हमारे सामने कुम्हेर का हवाला है तो हम क्यों नहीं करें ? मैं कहूंगा कि जनतंत्र के लिये सबसे बड़ा खतरा इस प्रकार के नमूनों से शासनारूढ़ दल देता है। यही नहीं, बल्कि मैं बहुत कुछ कह सकता हूं कि हमने देश के अन्दर लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के द्वारा जनतंत्रीय परम्परा को सुदृढ़ किया है, इसमें कोई शक नहीं। बहुत से माननीय सदस्य उसकी आलोचना कर सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से मैं मानता हूं कि लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का जो

(श्री नत्थीसिंह)

कदम उठाया गया है वह सराहनीय है। इस कदम के उठाये जाने से जो गांवों में रहने वाले हैं उनको एक प्रकार की हिम्मत प्रदान की है कि अपना काम स्वयं करें। लेकिन इस कदम को उठाने के लिये जहां शासनारूढ़ दल धन्यवाद का पात्र है वहां उसी दल ने और उसी कांग्रेस पार्टी ने ऐसा गलत कदम उठाया कि उसने उठाये हुए कदम को नेश्तनाबूद कर दिया। वह कदम यह था कि पंचायत समिति और जिला परिषदों के चुनाव पार्टी के आधार पर लड़े जायेंगे और जिस दिन कांग्रेस ने यह फैसला लिया उसी दिन लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की हत्या का फैसला कर दिया। उनके फैसले के साथ साथ समस्त पार्टियां मैदान में आईं और हम सोचते थे कि इस लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के द्वारा इस देश में इस प्रकार का समाज बन सकेगा कि जहां एक साथ बैठ कर गांव के आदमी यह सोचेंगे कि हम गांव का उद्धार कैसे करें वहां पर हम देखते हैं कि हर गांव में अखाड़ेबाजी तैयार हो गई है और इस सब की जिम्मेदारी कांग्रेस दल की है और हम चाहते हैं कि इस फिजा को बदला जाये। तो इसका तरीका यह है कि कांग्रेस यह सोचे कि राजनैतिक दलों को इस बात के लिए राजी करें कि पंचायत समितियों के चुनाव कभी भी राजनैतिक दल के आधार पर नहीं लड़े जायें और जब तक आप इस प्रकार का फैसला नहीं करेंगे तब तक लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को सफल नहीं बनाया जा सकता और लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एक गुटबाजी का नाम बन जायेगा। एक नहीं, बहुत सी बातें लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण के बारे में कही गई हैं; तकावी की और दूसरी बातों की भी चर्चा की गई है। मैं उन्हें छोटी बातें समझता हूं। हिम्मतवाले लोग पंचायत समितियों में हों तो उनको रोक सकते हैं। लेकिन मैं एक बात और रखना चाहता हूं और वह यह है कि इन पंचायत समितियों में इस तरह राजनैतिक आधार पर चुनाव लड़े गये हैं कि दो सदस्य जो कि कांग्रेस के कुम्हेर की पंचायत समिति में थे उनसे इस्तीफा दिलाया गया और एम० एल० ए० का चुनाव लड़ाने के लिए टिकट दिया गया और उनका नामांकन पत्र भेजने के लिए उन्होंने पंचायत समिति से इस्तीफा दिया। चुनाव में दोनों हार गए और वहां के प्रधान के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव आया। विकास अधिकारी पर दबाव आया कि उनके कागजात को नष्ट कर दिया जाय। प्रधान ने विकास अधिकारी पर जोर दिया और उनका इस्तीफा नष्ट कर दिया गया और जब उच्च अधिकारियों के ध्यान में यह बात लायी तो उन्होंने कहा कि क्या करें। कारण उसका और था। आज से सात-आठ रोज पहले भरतपुर में एक आम सभा हुई और उसमें प्रदेश-कांग्रेस के सदस्य और भारत सरकार के मंत्री ने कहा कि भरतपुर में, उनको नाज था कि जीत कर आ गये; उन्होंने वहां पर कहा कि १० में से ८ सदस्य हार गये हैं, लेकिन फिर भी कोई बात नहीं उन हारे हुए ८ आदमियों के क्षेत्र में जो भी चुन कर आये हैं उनकी कोई सुनवाई नहीं की जायेगी। अगर यही जनतंत्र देश में आप लाना चाहते हैं तो मैं कहूंगा कि जनतंत्र की सबसे शत्रु इस प्रकार की विचारधारा है। हमने जनतंत्र की परिभाषा सुनी थी कि जनता का राज्य

Page No 61

(श्री नत्थीसिंह)

होगा, जनता के द्वारा होगा और जनता के लिए होगा; लेकिन हमने वहां रह कर और यहां रह कर भी अनुभव किया है कि राजस्थान में इस प्रकार की परम्परा डाली गयी है कि जहां गुटों द्वारा राज्य किया जाता है और इस तरह से राजस्थान में जनतंत्र की परिभाषा को बदला गया है। अगर आप ईमानदारी के साथ यह चाहते हैं कि राजस्थान में जनतंत्र पनपे तो सबसे पहले इस बात का आपको प्रण करना पड़ेगा कि कोई भी क्षेत्र हो; चाहे वह पंचायत का क्षेत्र हो, चाहे पंचायत समिति का क्षेत्र हो, चाहे राजकीय क्षेत्र का स्तर हो उस में गुटबन्दी के हिसाब से नहीं बढ़ें, क्योंकि गुटवाद बढ़ता है तो व्यक्तिवाद बढ़ता है और जहां व्यक्तिवाद बढ़ता है वहां जनतन्त्र नहीं, फासिज़्म बढ़ता है। जनतन्त्र को पनपाने के लिये सामुहिक बातों की ओर बढ़ना पड़ेगा, सहयोग की भावना से बढ़ना पड़ेगा। उसका हम पूर्णतया अभाव पाते हैं आज के शासन के एप्रोच में।

इसलिए एक बात मैं और अर्ज कर देना चाहता हूं और वह यह है कि सही तौर पर यदि हम जनतन्त्र को लाना चाहते हैं तो शासक दल को परिचय देना पड़ेगा अपने कामों से। इन बातों का ध्यान नहीं रखेंगे कि शिकायत करनेवाला कौन है। शिकायत सुनने की हिम्मत होनी चाहिये।

मैं एक-दो और सुझाव आपके सामने रखूंगा। इधर से बोलने वाले एक दोस्त ने कहा था कि चुनाव के मामलों में शिकायत करने से कोई फायदा नहीं। चुनाव के वक्त सिद्धान्त की बातें पकड़ी जाती हैं कि वे उस पर टिक सकते हैं या नहीं। मिनिस्टर महोदय का चुनाव लड़ना एक परीक्षा-काल होता है कि उन्होंने सिद्धान्तों को कितना दूर रखा है और चुनावों में जीत होती है सिद्धान्तों की। इसलिए इलैक्शन पिटीशन की बात छोड़ दें। मैं राजस्थान सरकार से मांग करूंगा कि उनको इस प्रकार के निष्पक्ष आयोग की स्थापना करनी चाहिए जो यह जांच करे कि वास्तव में किन किन लोगों के चुनावों में सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। उनके खिलाफ सही तौर पर एक्शन लिया जाय। उसका नतीजा यह होगा कि एक तो गलत शिकायत करने वालों की हिम्मत कम होगी और दूसरी बात यह कि उन सरकारी कर्मचारियों की हिम्मत कम होगी जो इस तरह से चुनावों में भाग लेते हैं और दूसरे कर्मचारी जो ईमानदारी के साथ काम करते हैं उनकी हिम्मत बढ़ेगी कि वास्तव में गलती करनेवालों को दण्ड दिया जाता है और सही काम करने वालों को दाद दी जाती है।

चुनावों के बारे में यह कहा गया था कि १५ अक्टूबर के बाद कोई तबादले नहीं किये जायेंगे, लेकिन मेरे क्षेत्र में आपने १३ तारीख तक तबादले किये, चुनाव के १० दिन पहले तक किये। नायब तहसीलदार, कुम्हेर का इसीलिए ट्रान्सफर किया गया कि उसी थानेदार ने यह कहा था कि यह फिट नहीं है। इस तरह की भावना जहां है वहां कैसे काम किया जा सकता है ? कैसे प्रजातन्त्र मजबूत हो सकता है ?

दूसरी बात जो लोकतान्त्रिक

Page No 62

(श्री नत्थीसिंह)

विकेन्द्रीकरण की है वह मैं यह कहना चाहता हूं कि सही तौर पर अगर आप चाहते हैं कि लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण बढ़े तो मेरा दूसरा सुझाव यह है कि कांग्रेस दल के नेता, विरोधी पक्ष के नेता और दूसरे विरोधी पक्ष के लोगों को लेकर सदन में इस प्रकार की कमेटी बनानी चाहिए जो इस संभावना पर विचार करे कि पंचायत, पंचायत समितियां और जिला परिषदों के चुनाव निर्दलीय आधार पर किस तरह से लड़ सकते हैं। अगर इस संभावना पर विचार नहीं करेंगे तो निश्चय मानिये कि गांव पार्टीबाजी के अखाड़े होंगे, इसके अलावा कुछ नहीं। आपका लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण वहां फैल होगा।

सहकारी के विषय में कई बातें कही गई।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

सहकारी क्षेत्र में १० वर्ष तक हमको मौका मिला, लेकिन सहकारी क्षेत्र में जो काम किया उससे किसान को बल मिला है, इसमें दो राय नहीं है। अब तक साहूकार के कड़े शिकंजे में फंसे हुए थे, उनको खुली हवा में सांस लेने का मौका मिला है; लेकिन अन्य प्रकार की सहकारी समितियां बन जाती हैं, जैसा कि अभी कहा गया कि खान की एक श्रमिक सहकारी समिति बनी उसको राज्य की ओर से कोई सहायता नहीं मिली। वहां उन्हीं ठेकेदारों और पूंजीपतियों को मौका अधिक दिया जाता है और उनको नहीं दिया जाता है। अभी मेरे एक साथी ने आपको कहा था कि २० जून को एक नोटिफिकेशन निकला था कि अब की बार कुछ हिस्सा छोड़ा गया उसमें से सहकारी समितियों को दिया जायगा और उसके लिये ६ सहकारी समितियां बनीं। उनको काम नहीं दिया गया। इस प्रकार से हमारी निष्ठा में कमी है। वे कहने को तो कहते हैं कि प्रिफरेन्स देंगे, आगे बढ़ायेंगे, लेकिन वास्तव में नहीं होता है। इस वास्ते इस धन्यवाद के प्रस्ताव में जो कांग्रेस की ओर से रखा गया है मैं अपने आपको असमर्थ पाता हूं समर्थन करने के लिए। इसलिए उसका विरोध करते हुए मैं अपना आसन ग्रहण करता हूँ।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले जिस क्षेत्र में हमारे माननीय मुख्य मन्त्रीजी रहते हैं उसी क्षेत्र की एक–दो बातें ऐसी रखता हूं जिनसे यह साबित होता है कि उनके निवास-स्थान में प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की किस प्रकार से हत्या की गई।

माननीय मुख्य मंत्रीजी ने परसों कहा था कि हमने विकास के नाम से मत प्राप्त नहीं किया। यदि दरअसल में उदयपुर जिले में विकास के नाम पर हमारे माननीय मुख्य मंत्रीजी मत प्राप्त नहीं करते तो उदयपुर जिले में १३ में से ८ सीटें कांग्रेस ने खोई हैं और पांच सीटें जो प्राप्त की हैं वे पांच सीटें भी उनको प्राप्त नहीं होतीं और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आज मुख्य मंत्रीजी को इस आसन पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। मैं मुख्य मंत्रीजी से यह पूछना चाहता

Page No 63

(श्री विजयसिंह झाला)

हूं कि १३ या १४ दिनों में चुनाव के पूर्व कितने तालाबों का उद्घाटन किया गया, कितने स्कूलों का उद्घाटन किया गया और जहां स्कूलों का उद्घाटन किया गया उनमें गुना का जो मिडल स्कूल है उसका उद्घाटन किया क्या ? उस स्कूल के पास १०० कदम की दूरी पर क्या कांग्रेस किसान सम्मेलन नहीं रखा गया और उस किसान सम्मेलन में आपके द्वारा यह बात नहीं कही गई कि कांग्रेस ने विकास किया है। इसलिये आपको कांग्रेस को वोट देना चाहिए ? क्या लोसिंग गांव में जहां तालाब का शिलान्यास नहीं किया गया वहीं से ६ कदम की दूरी पर कांग्रेस की तरफ से किसान सम्मेलन करके यह बात नहीं कही गई कि कांग्रेस की तरफ से या कांग्रेस राज्य की तरफ से इस प्रकार के तालाब बंधाये जाते हैं, इसलिये आपको कांग्रेस को मत देना चाहिए ? क्या आपने २० तारीख को चुनाव से पहले नाथद्वारा जाकर कॉलेज का शिलान्यास करते हुए यह बात नहीं कही थी कि दरअसल में यदि कांग्रेस को मत दिया गया तो नाथद्वारे में डिग्री कॉलेज का निर्माण हो गया ? यदि ये सारी बातें आप नहीं कहते तो आपकी कांग्रेस प्रदेश कमेटी के जनरल सेक्रेटरी किशनलालजी मास्टर साहब की जमानत जब्त होती, लेकिन ये सारी बातें करके उनकी जमानत बचाई, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं । आपने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी की इज्जत बचाई, इसके लिये भी मैं आपको बधाई देता हूँ।

मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी का ध्यान नाथद्वारा नगरपालिका की ओर दिलाता हूँ, जहां जनसंघ का बहुमत है। क्या उस नगरपालिका के लिए ४३,०००) रु० की जो स्वीकृति थी और जो चुनावों के पूर्व मिल जाने चाहिए थे और जिस पर २-१२-६१ को यहां से सेंकशन राज्य सरकार द्वारा दे दी गई थी। कलेक्टर उदयपुर के ट्रेज़री ऑफिसर ने ४३,०००) रु० देने के लिए लिख दिया था और नगरपालिका के उपाध्यक्ष ने बोन्ड भर दिया था, उन रुपयों को केवल इसलिए नहीं दिया गया कि चूंकि चुनाव से पहले नाथद्वारा नगरपालिका को ४३,०००) रु० मिल जायेंगे तो चुनाव के अन्दर जनसंघ को ज्यादा मत प्राप्त होंगे। इसके बजाय, ४३,०००) रु० को रोक कर पी० डब्लू० डी० के मारफत उन्होंने चुनावों के दिनों में नाथद्वारा में ४०,०००) रु० सड़कों के निर्माण के लिए बजट से खर्च करवाये गये । क्या यह ठीक है कि यह ४०,०००) रु० नाथद्वारा नगर में केवल उन्हीं दो वार्डों में खर्च किये गये जहां कि कांग्रेसी सदस्य नगरपालिका में जीत कर आये थे और इनके सिवाय नगरपालिका की तरफ से जो कार्य चालू था और जो कार्य अधूरा पड़ा हुआ था वहां पर उन कार्यों को रोकने की कोशिश की गई क्योंकि जनसंघ के अध्यक्ष के द्वारा वह कार्य चालू किया गया था। इसलिए ४३,०००) रु० को रोक दिया गया और उसकी जगह ४०,०००) रु० पी० डब्लू० डी० के मार्फत उन दो वार्डों में खर्च कराया गया जहां पर कांग्रेसी सदस्य नगरपालिका में जीत कर आये। क्या यह ठीक है कि बड़ गाव पंचायत समिति के बी० डी० ओ० जो उसी क्षेत्र के रहने वाले हैं और जो एक गजटेड ऑफिसर हैं उस

(श्री विजयसिंह झाला)

क्षेत्र के वहीं रहने वाले थे, उनकी जगह उन बी० डी० ओ० को चुनाव प्रचार के लिये मावली से ट्रान्सफर करके बुलाया गया और उसमें २८,०००) रु० बिना उत्पादन समिति की सेन्क्शन के वितरण किया चुनावों के दिनों में ? क्या यह ठीक है कि उसी क्षेत्र में कविता बांध बनने का था। उस बांध को टैक्निकल सेन्क्शन नहीं होते हुए भी, उस बांध को इन्जीनियर साहब की सेन्क्शन नहीं होते हुए भी बी० डी० ओ० साहब ने जिला प्रमुख श्री रोशनलाल को वोट दिलाने के लिए कार्य चालू करा दिया और आज पैसा नहीं है। वहां के मजदूरों का अभी तक चुकारा नहीं हुआ, क्योंकि किसी रकम की स्वीकृति नहीं हुई थी। केवल वोट लेने के लिये कार्य चालू कर दिया गया था।

यदि ये सारी बातें लेते हैं तो मैं पूछना चाहता हूँ कि माननीय मुख्य मंत्रीजी तथा अन्य मंत्री उस पर क्या कदम उठाने वाले हैं। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या उदयपुर जिला परिषद के जिला प्रमुख श्री रोशनलाल शर्मा जो उदयपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष हैं उन्होंने कदमार पंचायत के दो पार्टियों के बीच में तालाब का झगड़ा था और पंचायत समिति ने तालाब के पानी को निकालने के लिये आपसी निर्णय लिया था उस निर्णय को ए. डी. एम. के हुक्म द्वारा नहीं रुकवा दिया जिससे किसानों को ५०,०००) रुपयों का नुकसान हुआ और वह नुकसान इसलिये हुआ कि जनसंघ के व्यक्ति आगे थे ? उन किसानों से कहा गया कि जनसंघ को छोड़ कर कांग्रेस में आ जावो तो पानी निकलवा दिया जायगा। लेकिन वे नहीं आये इसलिये उन किसानों को ५० हजार रुपयों का नुकसान दिया गया। क्या यह बात झूठी है ? इसके बाद भी आप कहते हैं कि हमें कोई उदाहरण दें ! मैं यातायात मंत्री, जिन्हें स्क्वायर राजा साहब कह सकता हूँ और इसलिये स्क्वायर राजा साहब कह सकता हूँ कि एक ओर वे मंत्री हैं और दूसरी ओर वे दरअसल में राजा हैं....

श्री निरंजननाथ आचार्य (राजसमन्द) : I think the Question Hour is over. It is not the Question Hour now.

श्री विजयसिंह झाला: I know this is not the Question Hour. I am giving examples.

क्योंकि आप एग्ज़ाम्पल मांगते हैं और आपके राज्य में किस प्रकार का पक्षपात होता है उसकी यदि एग्ज़ाम्पल रखते हैं तो आप कहते हैं कि एग्ज़ाम्पल मत रखिये और यदि एग्ज़ाम्पल नहीं रखते हैं तो कहते हैं कि रखिये। इसलिये मैं स्क्वायर राजा साहब से कहूँगा कि नाथद्वारा तहसील में जिन व्यक्तियों को मोटर परमिट मिले हैं उनको आप देखिये। उनमें से कितने ऐसे हैं जो खादी नहीं पहिनते या सफेद टोपी नहीं लगाते ? यदि आपके राज्य में इन व्यक्तियों को परमिट मिलते हैं जो खादी पहिनते हैं तो असेम्बली में प्रस्ताव रख कर मंजूर करवा लेना चाहिये और यदि दरअसल में ऐसा नहीं है तो चुनाव के दिनों में जितनी बसेज़ नाथद्वारा में थीं उन सब पर तिरंगे झंडे थे या नहीं ? 'कांग्रेस को वोट दो' लिखा हुआ था या नहीं ? सुखाड़िया साहब

(श्री विजयसिंह झाला)

की फोटो थी या नहीं ? मैं तो यह अच्छा समझता हूँ कि जो लोग उन बसेज़ में बैठे उनसे यह नहीं कहा गया कि पहले कांग्रेस को वोट दें या वादा करें तब बैठें । यह बात नहीं रखी, इसके लिये मैं अपनी खुशी मानता हूँ । तो क्या ये सारी बातें दरअसल में पक्षपात की नहीं हैं ? यदि नहीं हैं तो इस बात का सुबूत दें कि इनको परमिट नहीं दिये और यदि दिये हैं तो उनके खिलाफ आप क्या कदम उठाने वाले हैं ?

वे लोग जो कांग्रेस के हैं और चुनाव में हारे हैं उनको परमिट दिलाने की बात नहीं है क्या ? श्री मनोहर कोठारी जो कुंभलगढ़ से हारे हैं उनको मोटर परमिट नहीं दिया है क्या ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : This is a wrong statement, Sir.

श्री विजयसिंह झाला: This is correct, Sir.

श्री निरंजननाथ आचार्य : Shri Manohar Kothari did not stand from Kumbhalgarh.

श्री विजयसिंह झाला : मनोहर कोठारी कुंभलगढ़ से खड़े नहीं हुए थे; पहले देवगढ़ से थे, कुंभलगढ़ से हीरालालजी देवपुरा को परमिट अब भी दिलाने की योजना होगी । अच्छा है, आप जीत गये इसलिए आपको मोटर परमिट देने की नौबत नहीं आई, नहीं तो आपको भी देने की योजना होती........

श्री निरंजननाथ आचार्य : मेरे यहां तो आने की आपकी हिम्मत ही नहीं थी ।

श्री विजयसिंह झाला: अच्छा हुआ कि आप वहां से जीतकर आ गये, नहीं तो एक-दो परमिट आप भी लेते । इससे स्पष्ट होता है कि वहां किस तरह के कार्य हुए ।

जो विकास के कार्य हैं, जिन पर विरोधी पार्टी का बहुमत है उन नगरपालिकाओं और पंचायत समितियों के कार्य में राज्य की तरफ से अड़चन डाली जाती है और उनके रुपये रोके जाते हैं । तो मैं निवेदन करूंगा कि ऐसी कमेटी बनाई जाय जो जहां जहां विरोधी पार्टी की नगरपालिकाएं और पंचायत समितियां हैं उनके साथ सरकार द्वारा किस प्रकार का व्यवहार किया गया है और दूसरों के साथ किस प्रकार पक्षपात किया उसकी जांच होनी चाहिये । मैं यह नहीं मानता कि विकास कार्य वहीं पर हों जहां कांग्रेस का बहुमत हो । विकास कार्यों में यदि आप विरोधी पार्टी का सहयोग लेना चाहते हैं तो साथ ही साथ इस बात को भी सोचना पड़ेगा कि विरोधी पार्टी की नगरपालिकाएं हैं उनके साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है । कुछ ऐसे कार्य हैं जो पी० डब्ल्यू० डी० आदि के द्वारा कराये जाते हैं, उनमें किस तरह का व्यवहार किया जाता है, मैं आपका ध्यान इस ओर भी आकर्षित करना चाहता हूं । साथ ही मैं कुछ सहकारी समितियों का नमूना भी आपके सामने रखना चाहता हूं इसलिए कि १७,६६४ समितियों में से मैं नहीं समझता

(श्री विजयसिंह झाला)

कि १७ समितियां भी सही रूप से सफल हुई हों ।

मैं खमनोर और बड़गांव पंचायत समितियों का उदाहरण सामने रखता हूं । खमनोर और बड़गांव में गुड़ खंडसारी के लिए सहकारी समितियां बनी हैं । इनमें से एक पर ५०,०००) रु० का कर्जा है और दूसरी पर ७०,०००) रु० का कर्जा है और दोनों ही बन्द हैं । वहां पर कोई कार्य गुड़–खंडसारी का नहीं हो रहा है । मैं नहीं चाहता कि उनको बंद कर दिया जाय, लेकिन मैं मानता हूं कि जो कार्य नहीं हुआ है वहां बीच में ही पैसा खाया गया है । इसी प्रकार की बड़गांव की समिति है । हम केवल संख्या बढ़ाने की ओर ही ध्यान न दें लेकिन जो बनी हुई हैं उनको गाइडेन्स मिलती है या नहीं, उनको पैसे मिलते हैं या नहीं और जो पैसे मिलते हैं उनका युटिलाइजेशन भी होता है या नहीं, इस ओर भी ध्यान देना चाहिये ।

साथ ही साथ मैं विकास पंचायतों का भी जिक्र करना चाहता हूं । आज विकास पंचायतों के जितने पंच हैं, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उनमें से ७५ परसेन्ट घबरा गये हैं, वे अलग होना चाहते हैं । वे इसलिए घबरा गये हैं कि उनके पास साधन नहीं हैं, पैसे नहीं हैं । उधर जनता की मांग है और इधर पैसा नहीं है तो हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिये । विकास समितियां प्लानिंग कमीशन की कठपुतलियें बन गई हैं । देखते रहें, जो योजना आगे से आई उसके अनुसार काम होता रहे । दरअसल में उनकी मांग के अनुसार पैसा नहीं मिला है । मैं खमनोर का उदाहरण देना चाहता हूं । वहां पर ऐसा पैसा आ गया है जिसकी वहां पर आवश्यकता नहीं थी, ऐसा पैसा नहीं आया जिस कार्य को करने की पंचायत समिति को आवश्यकता थी । इसके अलावा फुट्स तकावी के लिये ३ हजार रुपये लैप्स हुए, घरों के लिए १० हजार रुपये लेप्स हो रहे हैं । मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि जो डिमान्ड नीचे से आती है उसकी पूर्ति नहीं होती । मंत्रीजी कहेंगे कि तीसरी योजना में डिमान्ड मांगी गई, लेकिन उस समय मांगी गई जब कि आधे से ऊपर प्लानिंग कमीशन की योजना के अनुसार बजट बन चुका था । इसलिये आज भी इस योजना के अन्तर्गत पंचायतों को जरूरत के माफिक पैसा नहीं मिला है । इसलिये इस ओर ध्यान दिलाना पड़ेगा, साथ ही विकास पंचायत समितियों के गठन की तरफ भी ध्यान देना पड़ेगा । मुझे मालूम है कि जिस समय प्रधान का चुनाव होता है उस समय शासक पार्टी तीन दिन पहले सरपंचों को गिरफ्तार करके रखती है, हजारों आदमी तमाशा देखने वाले इकट्ठे होते हैं और सरपंच ऊपर से झांकते थे । तो सरपंचों को गिरफ्तार करके प्रधान बनाने की जो योजना है उसको बदलना होगा । इससे पहले जितने पंचायतों के पंच हैं उनका मत लिया जाय और इसका विस्तृत रूप हो । लिमिटेड आदमियों को गिरफ्तार करके प्रधान का चुनाव नहीं किया जाय ।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

दो मिनट मुझे और दीजिये ।

श्री अध्यक्ष : समय समाप्त हो गया । मैंने दो–तीन दफा आगाह कर दिया था ।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार (हवामहल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, आज हमारे सदन के सामने केवल एक प्रश्न विचारणीय है। राज्यपाल महोदय ने जो भाषण दिया उस भाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव आया है उसे पारित किया जाय या उस पर किस प्रकार विचार किया जाय ? यह आप सब लोगों के विचार करने की बात है। यह ऐसा विषय है जिसे आप अच्छी तरह से जानते हैं कि धन्यवाद देने वाली जनता हृदय से धन्यवाद आप लोगों को दे चुकी है। अब एक परिपाटी मात्र है जिस पर विचार करते हैं तो एक-पुष्ट प्रमाण की जरुरत नहीं होती क्योंकि हाथ-कंगन को आरसी की जरूरत नहीं होती। आज सदन के सदस्य जानते हैं। ये सदस्य, जिन्हें जनता जनार्दन ने चुन कर भेजा है, अच्छी तरह से जानते हैं कि उस जनता ने, जिसने आपको चुन कर भेजा है, कुछ जिम्मेदारी के साथ आपको भेजा है। राज्य सरकार ने सुचारू रूप से प्रबन्ध किया या नहीं, यह प्रबन्ध सुव्यवस्थित रहा या अव्यवस्थित रहा, इस विषय पर राज्यपाल ने भाषण दिया। आपने उस भाषण को देखा। अगर जनता जनार्दन पांच वर्ष की हुकूमत, पांच वर्ष के राज्य से प्रसन्न होती तो पहले जो हुकूमत करने वाली पार्टी इतनी बड़ी थी, इतनी तादाद जिसका नमूना था, वह कम संख्या में उपस्थित नहीं होती। मैं आज सदन के प्रत्येक सदस्य को आगाह करता हूँ और इस बात को पुनः याद दिला देना चाहता हूँ कि यह धन्य-वाद का विषय है, यह वह विषय है जिस पर जनता अपना निर्णय दे चुकी है। आप लोगों को परिपाटी मात्र से निर्णय देना और खास तौर पर राज्य पक्ष के सदस्य हैं उन सदस्यों से निवेदन करूँगा कि हृदय से विचार कर लें। ऊपरी रूप से आज इस प्रस्ताव को पास कराने के लिए विचार प्रस्तुत करते रहें, लेकिन जो प्रजातन्त्र की स्वस्थ परम्परा है उसके आधार पर विचार–विनिमय नहीं हो रहा है। हम अपनी व्यक्तिगत बातों को लेकर आज सदन के अन्दर बढ़ते जा रहे हैं। मैं समझता हूँ कि यह प्रजातन्त्र की स्वस्थ परम्परा के प्रतिकूल है। हमें इन बातों में नहीं जाना चाहिये। आज आलोचनायें की जाती हैं चुनाव के विषय में, आलोचनायें की जाती हैं राजा-महाराजाओं के चुनाव में खड़े होने पर, आलोचनायें पेश की जाती हैं, नमूने पेश किए हैं कि सिनेमा के एक्टर प्लेटफॉर्म पर आ जाते हैं तो हजारों की तादाद में जनता इकट्ठी हो जाती है, आलोचनायें की जाती हैं कि अगर राजा–महाराजा प्लेट–फॉर्म पर खड़े हो जाते हैं तो हजारों की तादाद में जनता का उपस्थित होना बड़ी बात नहीं है। आपको देखना चाहिए कि जनता ने हुकूमत को पांच साल तक देखा, दस साल तक देखा और देखने के बाद इस नतीजे पर पहुंची कि आपने क्या कारनामें किए। उनका विचार करने के बाद उसने अपना निर्णय दिया। मैं इन जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों से प्रार्थना करता हूँ कि जो निर्णय जनता जनार्दन दे चुकी है उसके बाद हुकूमत पक्ष वाले हैं, विरोधी पक्ष वाले हैं, किसी भी पक्ष वाले आदमी हैं क्या उस निर्णय के बाद चुने हुए सदस्य कोई निर्णय लेने को तैयार हैं ?

हमें राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के ऊपर विचार करना चाहिए,. जो आंकड़े

(श्री दुर्गालाल बाड़दार)

आपको दिये गये हैं उन पर विचार कीजिए। ये आंकड़े कहां तक सही हैं? उनमें जो उत्थान और प्रगति बताई गई है उन पर विचार करना है। उदाहरण के रूप में आप प्रगति लीजिए। मैं धन्यवाद देता हूं कि आज तक जो शासक वर्ग कार्य करता रहा है प्रगति के, मैं बाधा नहीं करता, लेकिन वह प्रगति कहां हुई, किस प्रकार हुई, मैं ये कुछ शब्दों में कह सकता हूँ–प्रगति हो रही है, दिन प्रति दिन बाजार में भाव बढ़ रहे हैं। अगर आप प्रगति का अर्थ बढ़ोत्तरी समझते हैं तो बढ़ोत्तरी हुई है, जरूर हुई है। कहां हुई है? बढ़ोत्तरी हुई है दिन प्रति दिन भाव बढ़ रहे हैं, टैक्स बढ़ रहे है, फेशन बढ़ रहा है, नव-फेशन के चाव बढ़ रहे हैं, इस प्रकार की बढ़ोत्तरियों पर आप विचार कीजिये। आप किसी रास्ते पर चले जाइये। किसी शहर के चौराहे पर खड़े हो जाइये। आपको दस भिखारी एक साथ नजर आयेंगे। दस भिखारी मांगने आयेंगे, एक एक पैसे के लिए; बात करना मुश्किल हो जायगा। यह आप देखते हैं हर शहर में, हर गली में। इस प्रकार की प्रगति को प्रगति कहते हैं, इस प्रकार के राज्य में रहने को आराम का राज्य कहते हैं तो समझ लीजिए कि हुकूमत ने अवश्य अच्छा किया है, अगर इसको अच्छा मानते हैं। नहीं तो, मुझे एकमात्र सुझाव यह देना है कि ऐसा क्यों हुआ इसका एक मात्र मूल कारण यह है कि छोटी छोटी बातों में मंत्री महोदय हस्तक्षेप करने लग जाते हैं। आचार, विचार, नियम अगर शासन में हैं तो मंत्री वर्ग, शासक वर्ग हस्तक्षेप न करे। मैं उन बातों का पिष्ट-पेषण नहीं करना चाहता जो नमूने के रूप में पेश की गईं; खासतौर से बताइ गईं, दलीलें दी गई। मैं एक नहीं सैकड़ों दलीलें दे सकता हूं, जहां छोटे से चपरासी के तबादले के लिए मन्त्री महोदय चिट्ठियां लिख देते हैं। जुडिशियरी पर इन्फ्लुएन्स डालने के लिए मन्त्री महोदय द्वारा व्यक्तिगत रूप से पत्र लिखे जाते हैं और इन्फ्लुएन्स डालने की कोशिश की जाती है। अगर मंत्री महोदय को कोई भाग्य से या चान्स से पद मिला है तो वे अपने इस अधिकार का अधिकृत रूप से प्रयोग न करें। मैं समझता हूँ, अब भी हमारा शासक वर्ग है, या कहिये एड-मिनिस्ट्रेशन है, वह करप्ट नहीं है। अगर उन पर दबाव नहीं डाला जाय तो वे नियम के अनुसार काम करते रहें। लेकिन एकमात्र कारण है वह यह है कि भ्रष्टाचार फैलाने की सबसे बड़ी बात की जाती है, आलोचनायें की जाती हैं, एक पक्ष के बोलने वाले माननीय सदस्य की ओर कहा जाता है कि इस भ्रष्टाचार को बढ़ाने में सबसे बड़ा हाथ अब तक विरोधी दल का रहा है। उदाहरण के रूप में बताया कि सदन के अन्दर कागज लाकर माननीय सदस्य प्रस्तुत करते हैं, उसकी आलोचना की है कि चोरी अपनाने का प्रारम्भ है; उनके पास किसी महकमे के कागजात क्यों आ गये? उनके अनुसार यह चोरी की बुनियाद डालने वाली बात हो सकती है और चोरी की बुनियाद डालने वाले माननीय सदस्य हो सकते हैं। हम यह कहते हैं कि जिसका तर्क देकर आप प्रस्तुत करते हैं, उस पर आप क्यों नहीं विचार करते? हम इसको इनएफीशियेन्सी कहते हैं। हम यह बात कहने को तैयार हैं कि आप काबिल नहीं

(श्री दुर्गालाल बाड़दार)

कि हुकूमत कर सकें, आप काबिल नहीं कि कागजात को ठीक तरह रख सकें। आखिर कौन ले जाता है, कैसे ले जाता है, यह बताने में नाकाबिल हैं। मैं यह कहना चाहता हूं और बताना चाहता हूं, क्योंकि आपने कहा कि चोरी करने वाले विरोधी पक्ष के आदमी हो सकते हैं कि किस प्रकार हम सूचना प्राप्त कर सदन के सामने रखते हैं। अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा मैं मंत्री महोदय के सामने अपनी पुकार रखना चाहता हूं कि अगर हम पर चोरी का इल्जाम लगाया जाता है तो मैं निवेदन करूंगा कि सबसे बड़ी बात जो आज विचार करने की हैं, जो सोचने की है वह यह है कि क्या इस पांच वर्ष के राज्य में हमें इस प्रकार का आराम मिला, हमें इस प्रकार हक और सुख मिला कि जिससे हम बधाई की पात्र समझ ल सरकार को और जो धन्यवाद का प्रस्ताव हमारे सामने आ रहा है उसको हम उपयुक्त समझ सकें ?

दूसरा प्रश्न आपके सामने सिंचाई का है। आप देखियेगा, इसमें पेज चार पर कृषि के विषय में यह बताया गया है, जो आंकड़े इस अभिभाषण में प्रस्तुत किये गये हैं, उनको १९५१-५२ के बाद तुलना की जाती है, १९५८-५९ के आंकड़ों से और कहा जाता है कि पांच साल में ३२ पोइन्ट कुछ करोड़ भूमि और ३० पोइन्ट कुछ करोड़ भूमि की हमने इतनी प्रगति कर दी है, और तरक्की की है। आप विचार कीजियेगा कि दो करोड़ भूमि की प्रगति और सिंचाई के बारे में यह दावा रखा जाता है और आंकड़े दिये जाते हैं हमें सात, आठ साल के। हमें विचार करना है केवल इन पांच वर्षों में ठीक हुई हालत के बारे में; गुजिश्ता पांच सालों में कितनी भूमि कृषि योग्य बनाई गई, यह विषय विचार करने का है। राज्य सरकार ने क्या किया, एक शब्द भी इस बारे में नहीं बताया गया। केवल यह बताया गया है कि इतनी भूमी कृषि योग्य बना दी गई। लेकिन यह भूल जाते हैं कि राजस्थान इतना बड़ा है और इस विस्तृत भूमि के अन्दर कितने आदमी ऐसे हैं कि जिन्होंने अपने खुद के व्यय से, अपनी खुद की कीमत और पैसा लगा कर कुएं बनाये, कुओं का निर्माण किया और बहुत से प्राइवेट सिंचाई के साधनों को उपलब्ध किया। क्या इन सबके अन्दर राज्य सरकार का योग रहा ? क्या यह जो भूमि कृषि योग्य बनाई गई वह राज्य सरकार के द्वारा बनाई गई है और प्राइवेट आदमियों ने योग नहीं दिया है ? लेकिन श्रेय लेना चाहती है राज्य सरकार और उसके आधार पर धन्यवाद प्राप्त करना चाहती है और धन्यवाद प्रस्ताव को पास कराना चाहती है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर इन सारी बातों पर आप विचार करें तो निस्सन्देह इस नतीजे पर पहुंच जायंगे कि वास्तव में जिस प्रकार की कार्य-प्रणाली को लेकर यह राज्य सरकार गुजिश्ता पांच सालों में बढ़ती रही है वह राज्य प्रणाली इस आधार पर नहीं रही है कि जिसके आधार पर धन्यवाद दे सकें।

विकेन्द्रीकरण का प्रश्न ऐसा है जिस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है और इस विषय पर इतनी तादाद में कहा जासकता है किइसके लिए काफी समय की आवश्यकता होती है।

Page No 70

(श्री दुर्गालाल बाड़धार)

मैं तो केवल एक–दो बातें आपके सामने रख कर यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि जिन विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्तों को लेकर हमने राजस्थान में विकेन्द्रीकरण किया है वह यह है कि हम यह जो शक्ति है उसको एक जगह केन्द्रित न करके विभिन्न केन्द्रों में विभाजन करना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि इससे पीछे भी कोई न कोई राजनैतिक आशय होना चाहिये, और वह यह हो सकता है, जैसा हम देखते हैं और देखते आये हैं कि विकेन्द्रीकरण इस शक्ति का संचार विभिन्न केन्द्रों में इस प्रकार से प्रसारित करना चाहते हैं कि जिससे इन सारी शक्तियों को जब चाहें वे अपने हाथ में ले लें। यह दूसरी बात है कि उनको सफलता मिले या न मिले। लेकिन जिस भावना को लेकर यह विकेन्द्रीकरण की पॉलिसी चलेगी उसमें पंचायतों के पंच और सरपंच आते हैं। इनको सरकार द्वारा काफी अधिकार दिये गये हैं, जिनके द्वारा वे बहुत से फैसले करते हैं और एक तरह से वहां की जनता के लिए वे भाग्य विधाता ही हैं और उनको फैसले करने की सारी पावर मिली होती है।

वे किस प्रकार के फैसले करते है, इसका अनुभव मुझे भी अपनी वकालत के दौरान में काफी हुआ है और मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे अजीब तरह से मुकदमों के फैसले करते हैं जो मुझे देखने में मिले हैं। हमारी पंचायतों के न्याय आश्चर्यजनक हैं। मैं उदाहरण के तौर पर बताना चाहता हूं कि एक पंचायत में चोरी हुई चोर का पता नहीं लगा, उसकी शिकायत हुई। उस पर पंचायत के पंचों ने कहा कि भाई तुमको, किस पर शुबहा है ? उसने दो–तीन आदमियों के नाम बताये। उन तीनों आदमियों को बुलाया गया, मगर पता नहीं लगा। तब उन तीनों आदमियों के नाम की गोलियें डाल दी जावें, यह तय किया गया और जिस व्यक्ति का नाम गोली में आ जावे उसको सजा दी जावे। गोलियें तो तीन आदमियों के नाम की बनी ही थी, इसलिए किसी एक का नाम उसमें आना ही था। जिसके नाम की गोली आई उसको चोर मुकर्रर कर दिया। उसको सजा देने का सवाल था। उसको कहा कि तुम्हारे नाम की गोली आई है इसलिए तेरे ऊपर ५०) रु० जुर्माना किया जाता है, जुर्माना ले आओ। उसने कहा कि मेरे पास जुर्माना देने को नहीं है तो उसको कहा गया कि जमानत ले आओ। जमानत लेकर आया तो जामिन से जमानत नहीं ली। उसको कहा कि जामिन का जामिन ले आओ, उसकी जमानत ले ली। उसने रुपये नहीं दिये तो दावा किया गया और उसकी डिक्री हो गई। मगर पंचायतों के फैसले की निगरानी का प्रोविज़न है इसलिए उसकी निगरानी हुई। निगरानी में जिस समय अधिकारियों के सामने इस प्रकार के मसले आते हैं तो उन पर विचार करते हैं; क्योंकि वहां पर मुलझे हुए दिमाग के आदमी बैठते हैं। इस प्रकार की मिसाल आई। अगर आप चाहें तो मैं आप लोगों के सामने निगरानी आदि प्रस्तुत कर सकता हूँ। इस प्रकार के निर्णय पंचायतों में होते हैं। क्या आप यह समझते हैं कि इस प्रकार के निर्णयों से आपकी जनता सुखी होगी ? इस प्रकार की बातें जब आपके राज्य में हों तो क्या आप हमसे यह चाहते हैं कि हम आप लोगों को धन्यवाद देते रहें और

(श्री दुर्गालाल बाड़दार)

आपके कारनामों की सराहना करते रहें, यह संभव नहीं है ।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

थोड़ा समय और दें ।

दूसरी बात जो निहायत आवश्यक होती है वह है लॉ एण्ड ऑर्डर की । लॉ एण्ड ऑर्डर के बारे में हमारे राज्यपाल महोदय ने केवल दो या तीन पंक्तियों में ही अपने भाषण को समाप्त कर दिया । उन्होंने यह कहा कि देश में शांति रही, डाकुओं को मार डाला और कुछ को पकड़ लिया गया; देश में लॉ एण्ड ऑर्डर बराबर मेन्टेन किया जा रहा है ।

कानून का यह सिद्धान्त है कि जब किसी पर किसी प्रकार का आरोप लगाया जाता है तो उसको हिम्मत के साथ सिद्ध नहीं करें तो मान लिया जाता है कि यह सही है । यही अवस्था राज्यपाल महोदय के भाषण को पढ़ने के बाद कही जा सकती है । उनके भाषण में सिवाय इसके कि देश में शांति रही कुछ नहीं कहा गया है । केवल यह कहना कि डाकुओं को पकड़ा और बहुत सों को मार डाला, यह काफी नहीं है । उनको बताना चाहिये था कि पुलिस डिपार्टमेंट में इतनी चोरियें हुई, इतनी नकावजनी हुई, इतने मर्डर हुए, इतने अधिकारियों ने अनाधिकृत चेष्टा की । मैं आपसे यह बताना चाहता हूँ और मुझे इस बात का अनुभव है कि जयपुर में गुन्डागर्दी की इस तरह की हालत है कि भले घरों की औरतों के लिये और बहू-बेटियों के लिये घर से निकलना मुश्किल हो गया है।

(विराम)

हमने बहुत सी शिकायतें भी कीं मगर उसका कुछ असर नहीं हुआ । मैं किसी व्यक्ति विशेष की शिकायत करना नहीं चाहता, लेकिन यह बता देना चाहता हूँ कि इस प्रकार की हरकतें करने वाले लोगों पर बड़े अधिकारियों का हाथ रहा है और छोटे कर्मचारी उन व्यक्तियों के खिलाफ कुछ भी एक्शन नहीं ले सकते । जिस समय उन लोगों के खिलाफ शिकायतें आती हैं तो उनको पुलिन्दों में बांध कर डाल दिया जाता है ।

जहां लॉ एण्ड ऑर्डर की इस प्रकार की व्यवस्था रही हो उसको कैसे अच्छा कहा जा सकता है ?

मैं अभी भी आपको दावे के साथ कहना चाहता हूँ कि हमारे यहां जयपुर में शराब की दूकानें ऐसे स्थानों पर मिलेंगी जहां नहीं होनी चाहिये । शराब की दुकानें ऐसे रास्तों पर हैं जहां औरतें दर्शन के लिये मंदिरों में जाती हैं; तो वहां रास्ते में दूकानों पर लोग शराब पीते हैं और बदमाशियें करते रहते हैं । हो सकता है कि दो हाथियों पर सवार होने के कारण उनको किसी बात की चेतना न रहे, लेकिन उसकी व्यवस्था करना राजस्थान सरकार का कर्त्तव्य है । सरकार को चाहिये कि शराब की दूकानें ऐसे स्थानों पर रखे कि जहां पर किसी प्रकार का लांछन लगाने की आवश्यकता हो न हो ।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

(श्री दुर्गालाल बाड़दार)

यह बहुत छोटी सी बात है। अगर राज्य सरकार इस पर विचार करे तो यह प्रबन्ध हो सकता है।

इसके अलावा हमारी पार्टी के नेता ने जैसा निवेदन किया और मैंने भी पहले निवेदन किया कि हम विरोध इसलिये नहीं करना चाहते कि हमको विरोध करना है। हम आपके सामने सुझाव रखना चाहते हैं और जिस प्रकार हम सहयोग का हाथ सरकार की ओर बढ़ाते हैं उसी प्रकार राज्य सरकार का प्रथम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह हमारी बातों पर विचार करे और ध्यान दे। करना न करना उनके हाथ में है, लेकिन जो कुछ भी हम कहते हैं वह उनके हित में कहते हैं।

मैं यह कहना चाहता हूं कि राजस्थान में मौजूदा जो स्थिति है वह पहले की सी स्थिति नहीं है कि जैसा चाहा कर लिया। आज जो कुछ देखने को मिलता है वह पिछले १० साल की गल्तियों के कारण है। उनको इस पर विचार करना है कि पिछले १० वर्षों में जो किया उसका इल्जाम वे अब देख रहे हैं। अगर विरोधी दल की वाजिब बात भी सरकार न माने तो उससे जनता को नुकसान होता है। हुकूमत करने का चान्स घन्टों में नहीं मिनटों में भी जा सकता है। आप जनता की सेवा करके आगे बढ़ना चाहते हैं तो विरोधी दल आपको सहयोग करने के लिये तैयार है, लेकिन अगर हुकूमत करने वाला दल हुकूमत के जोम में आकर यह समझे कि विरोधी दल की सही बात भी न मानी जावे तो....

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

वह उसका विरोध करेगा और मुकाबला करेगा।

(विराम)

एक मिनट में समाप्त करता हूँ।

मैं सदन के सदस्यों से यह निवेदन करना चाहता हूँ और प्रार्थना करना चाहता हूँ कि जो धन्यवाद का प्रस्ताव आपके सामने पेश हुआ है वह राज्य सरकार ने जो पांच वर्षों में कार्य किया है उसको लेकर पेश हुआ है और

(३ म. प.)

मैं समझता हूँ कि मेरे खयाल से कोई भी माननीय सदस्य इसके लिये धन्यवाद पर मत देने को तैयार नहीं होगा। अगर सरकार ने काम किया होता तो जनता के केवल ४० प्रतिशत वोट ही मिले होते, ऐसी बात नहीं होती।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

यदि आप जनता की भावना की सच्चे रूप में रक्षा करना चाहते हैं तो मैं तो इसका विरोध करता हूं और विरोधी पक्ष के नेता और राज्य पक्ष के सदस्यों से भी प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इस पर विचार करें और फिर अपना मत देना चाहिये।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

(अनेक सदस्य बोलने के लिये खड़े हुए)

Page No 73

श्री अध्यक्ष : श्री मोहनलाल ।

श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ़) : इनको दे दीजिये साहब ।

श्री अध्यक्ष : क्या आप अपना चान्स छोड़ते हैं ?

श्री मोहनलाल सारस्वत : नहीं ।

श्री अध्यक्ष : तो फिर बोलिये ।

श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ़) : अध्यक्ष महोदय,....

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : ऑन ए पोइन्ट ऑफ प्रिविलेज, सर, अध्यक्ष महोदय, श्रीमान् राज्यपाल के अभिभाषण के पेज १३ कॉलम, ३० में सरकारी कर्मचारियों की वेतन श्रेणियों का उल्लेख किया है और इस उल्लेख में सरकारी कर्मचारियों की वेतन श्रेणियों की जांच के लिये समिति के गठन और उसके प्रतिवेदन का उल्लेख किया है । मैंने सुबह से चेष्टा की कि जिस समिति का और उसके प्रतिवेदन का उल्लेख है उस समिति का प्रतिवेदन जो कि पब्लिक डॉक्युमेंट है, वह न प्रेस से मिलता है और न और किसी जगह मिल पा रहा है । मैं कल से ही चाह रहा था इस सम्बन्ध में कहने के लिये, पर कल मुख्य मंत्री सदन में उपस्थित नहीं थे । इस सदन में अभिभाषण देने के साथ साथ जिन समितियों का उल्लेख किया जाय उनके प्रतिवेदन को सदन में प्रस्तुत किया जाय, यह इस सदन के सदस्यों का प्रिविलेज है । अतः उस प्रतिवेदन को सदन में तुरन्त प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जाय ।

श्री मथुरादास माथुर (गृह मंत्री) : माननीय अध्यक्ष, जिस कमेटी की रिपोर्ट का जिक्र किया गया है वह सदन की मेज पर रख दी जायगी ।

श्री अध्यक्ष : श्री मोहनलाल !

श्री मोहनलाल सारस्वत : अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के भाषण में जो बातें रखी गई हैं उन बातों को मैं राज्य की रिपोर्ट के रूप में समझते हुए उसका खण्डन करता हूं । अध्यक्ष महोदय, मैं जिस निर्वाचन क्षेत्र से चुन कर आया हूं वह बीकानेर डिवीज़न में है, जिस डिवीज़न के साथ जब से आजादी मिली, राजकीय नेताओं द्वारा, कांग्रेस द्वारा सौतेला व्यवहार किया गया । हमारे यहां अध्यक्ष महोदय, मैं अर्ज करूंगा कि हर एक काम में बीकानेर डिवीज़न को कोई भी मौका आगे बढ़ने का नहीं दिया गया । यहां तक कि कांग्रेस के जन नेता कहलाने वाले लोगों ने तथा सरकार चलाने वाले लोगों ने कभी भी बीकानेर की तरफ अपना ध्यान आकर्षित नहीं किया । आज बीकानेर डिवीज़न की स्थिति यह है कि बीकानेर डिवीज़न को मैं सबसे पिछड़ा हुआ डिवीज़न मानता हूं । वैसे बीकानेर डिवीज़न राजस्थान में अपना बहुत बड़ा महत्व रखता है, वहां सैकड़ों की तादाद में कोट्यधीश हैं, विद्वान्, दानदाता और जनसेवक हैं, पर दुर्भाग्यवश बीकानेर के सच्चे प्रतिनिधि नहीं होने की वजह से बीकानेर का नक्शा बहुत पीछे है । आपके समक्ष हमारे डिवीज़न की क्या २ बातें

(श्री मोहनलाल सारस्वत)

रखूं । हमारे डिवीज़न में वे अत्याचार हुए कि जिनका वर्णन करते हुए रोमांच हो उठता है । अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे विनम्र निवेदन करता हूं कि जो जो अन्याय हमारे साथ हुए हैं वे आगे भी होने वाले हैं । जन–नेता कहलाने वाले लोग जिन्होंने सरकार के साथ मिल कर हमारे साथ जुल्म और ज्याद–तियां कीं व जन–नेता के नाम पर जुल्म ज्यादतियां करते रहे, पर अब उनका जन-नेता पद खत्म हो गया है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं मारवाड़ी में बोलने वाला हूं यदि मुझे इजाजत दी जाय तो मैं मारवाड़ी में बोलूं ।

मैं आप सूं या केणी चाहूं हूं के म्हारै अठी को जीं प्रकार को संकट है वीं संकट ने मैं अठे रखूं, मैं बीस, पच्चीस वर्ष को कार्यकर्ता वीं के साथ जो बातां बीती है वे बातां आज बहुत दिनां बाद ईं सदन में रखण रो मौको मिलियो है सो मैं वे बातां कह सूं । म्हारो जन नेता जकी ने के गुट्ट बन्दी के कारण ईं राज में प्रतिनिधित्व मिलियो वीं बाद फेर कांई कांई अत्याचार कियो वो मैं आज सदन के सामने रख सूं । वो अन्याय ईं ढंग को है आज विसा खाली म्हारे साथ जकी के अन्याय हुआ मैं रख सूं । कोई भी कलेक्टर, म्हारे डिवीज़न में ३ कलेक्टर, ३ एस० पी० रेवे है । सुखाड़िया साहब को राज नाम मात्र को हैं सारी की सारी प्रेरणा वीं जन-नेता की चाले है । वीं जन-नेता का ढंग ये है कै आलिया डाकू काण्ड करायो, जन नेता कदेई सूरजभान काण्ड करवावे.......

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर ! ऑर्डर !! राज्यपाल महोदय के भाषण पर ही बोलें; नीति से सम्बन्धित मामले हैं उन्हीं पर बोलें ।

श्री मोहनलाल सारस्वत : मैं आपका सुशासन की बात कहूं हूं, मैं तो ठेठ् आदमी हूं, आप कहें तो बैठ जाऊं ।

श्री अध्यक्ष : बैठना चाहें तो आपकी मंशा; मैं तो शिष्टाचार और नियम की बात कह रहा हूं कि नीति से सम्बन्धित मामलों पर ही बोलें ।

श्री मोहनलाल सारस्वत : तो ये बड़ी बड़ी बातां है वे तो आपरे ध्यान में आयोड़ी है । जो विकेन्द्रीकरण दुनियां के सामने लाया वीं ढांचा में आप बिल्कुल असफल रया । वो ढांचो केवल कांग्रेस की दूकान चलाण के वास्ते जगह जगह है, वीं दूकान में के के काम होवे है वो पिकचर भी मैं थोड़ी रख देणी चाहूं हूं । सहकारिता का नाम पर जकी आपका लाडला बच्चा है वे कोटो ले जावे है और साधारण जनता के पास कोई चीज पहुंचे नहीं । न्याय को काम जकी न्याय पंचायतां नैं सौंप्यो है वां न्याय पंचायतां को रूप इस्यो है के जठे जठे न्याय पंचायतां में सरपंच जिं पार्टी का पूग गया तो दूसरी पार्टी का लोगों की कैदां करे है, झूंठा कागजात वपरावे है, आपका राज का चलाण वाला उप मंत्री वीं के मायने पूरो सहयोग देवे है ।

अब अनेक बातां चुणाव के सम्बन्ध की बताऊं के चुणाव की जाजम कियां रची गई और म्हां लोगों ने असफल करणां कीं कांई कांई कोशिशां की गईं । आप हाउस में या

Page No 75

(श्री मोहनलाल सारस्वत)

मत समझिया के कांग्रेस के खिलाफ बातां करे है, दुख पायोड़ो प्राणी हूं, राज को ढांचो बताऊं हूं चौथो बार शासन चुणार आयो है वां के कानां में आ बात पड़े, यूं तो केई बार या बात कानां में घाल चुको हूं । चुणाव चालिया, ६ सीटां है, सब में अलग अलग नक्शा गिया, कोई सिद्धान्त सूं चुणाव नहीं लड़ियो । कांग्रेस के अन्दर ही कांग्रेस का आदमी एक जगह कांग्रेस का नाम सूं वोट मांगिया, दूसरी जगह वे ही कांग्रेस पर कुठाराघात करियो, तीसरी जगह तीसरी तरह रीं नीति चलाई और चौथी जगह और ही दूसरी नीति चलाई । म्हारे जिला में लाख रुपयां रो करप्शन वियो, २१ तारीख ने उपमन्त्री म्हारा क्षेत्र में पहुंचिया और गरीब किसानां ने केयो के राज और राम एक सरीखा होवे है, या बागीया ने वोट दे दीयो तो राज रुल जासी ।

थैलियां की थैलियां खोल देवे । अब मैं आपने एक और बात बतावो चाहूँगो । जन नेता केवाण वाला लोग लोगों ने या बात कही के देखो यो राज म्हारो जमायोड़ो है, थां यदि स्वतन्त्र आदमी ने वोट देवो ला और बो जीत जावे लो तो मिलीटरी और पुलिस सूं थाने तबाहा कर देस्यूं । एक बात या भी कही गई कि मान लो डिप्टी मिनिस्टर म्हारे साथ है साथ लगायोड़ो है, इन व्हींन वोट देदेस्यो उन्हें अठे रेहवा नहीं देसी । हरिजनों ने, किसानों ने बरगलाया । आतंक फैलायो गयो । लेकिन म्युनिसिपेलिटी में बुआरो देवा ने डिप्टी मिनिस्टर और जनवादी नेता नहीं चाहता हा वो आज धारासभा में बैठ रहयो है । पांच छः आदमी कांग्रेस में हा, सारा का सारा थुप्योड़ा आदमी सारा का सारा चुनावों में आया और बीकानेर डिवीजन की जो स्थिति है वा आपके सामने है । चुनावों में कई कई हथकन्डा चलाया समाज विरोधी तत्व । मैं मान न चलूं हूं, वां की मीटिंग बुला कर ज्यादा से ज्यादा बदमाशी कराई जाय यो कह्यो गयो । रतनगढ क्षेत्र में आतंक फैलायो, मोहल्ला मोहल्ला मैं इंकदर आतंक फैलायो । म्हारी कॉन्स्टीट्युएन्सी में चार कस्बा है । बीदासर की या हालत, कई ? पिडासर, राजेलदेसर की या हालत आतंक फैलायो । डुंगरगढ में है जिकां आदमी कत्ल करया हा, वां डिप्टी मिनिस्टर साहब की जीप में घूम घूम कर प्रचार करयो । जीं तरह कांग्रेस रे ऊपर टूट पड़या, म्हारे ऊपर भी टूट पड़या । मैं देखियो, जनता को नुमाइन्दो हूं । सुणो तो सुणो नहीं तो मत सुणो । पुलिस की ज्यादतियां या ढंग की रही फिर भी म्हारे क्षेत्र मां डिप्टी मिनिस्टर साहब ने और जन नेता ने खतरो हो गयो जिसूं १४४ धारा लगाई ।

श्री दौलतराम सारण (उप-मन्त्री, स्वायत्त शासन) : अध्यक्ष महोदय, ये सब बातें झूठ और अनर्गल कह रहे हैं ।

राजा श्री मानसिंह (डीग) : You reply at your time.

श्री मोहनलाल सारस्वत : या आपके सम्बन्ध की हो रही है । धीरज रखो । सहकारिता के वास्ते बड़ी २ बातां हुई । व्हीं को कई वर्णन करूं । डिप्टी मिनिस्टर बड़ो नाराज हो रह्या है । सहकारिता को नमूनो रखवो चाऊं । म्हारा अठे डिप्टी मिनिस्टर कोऑपरेटिव सोसाइटी बणा रखी है । हूं दावे के साथ कऊं

(श्री मोहनलाल सारस्वत)

हूं कि व्हीं में दस हजार रुपयां रो गबन है। एक जाजम उठे बिछायोड़ी है। पांच, सात आदमी है। शहरमें आतंक फैला रख्या है मैं मान नचलूं कि 'सैंया भये कोतवाल तो डर काहेका।' डूंगरगढ़ के वोटों को सवाल हो। जमा कर राख्या। सहकारिता को बताऊं। व्यौपारी होबा के नाते मनैं ज्ञान है। शक्कर पर, खांड पर कोटो हुवो। जो कोटो होतो वो गिणती में आतो। यो मान्यो जावे कि पांच, सात रुपया ऊपर प्रोफिट लेकर बजार में बिकतो। मन्त्री महोदय बतावै म्हारे शहर में जो गई व्हीं को हिसाब नहीं। ई के सिवाय यो भी मंत्री महोदय ने बताय देवो चाहूं हूं, अध्यक्ष महोदय, टाइम तो हो जावेगो। तो बात या रही कि ई तरह को झूंठो शासन रह्यो, जन प्रतिनिधियां की मान न सके, सुणे नहीं, गुटबाजी सूं प्रतिनिधि लाय बैठाय राख्या वीं डिवीजन को कांई हाल होवै या सोच सके। हूँ राजस्थान सरकार ने विनम्र प्रार्थना करूं। म्हारे डिवीजन में अन्याय हो रह्यो है। न जाणे कद किती बड़ीक्रान्ति हो जावेली सच्चाजका प्रतिनिधि है, जन प्रतिनिधियां री बात मानणी चावे। बहुत बड़ो खतरो बीकानेर डिवीजन में उठ रह्यो है। आज राज्य की जाजम बिछी है वीं में जन-प्रतिनिधियां री बात सुणी नहीं जावे तो कई हाल होवेला? जनता का झूंठा जन प्रतिनिधि बण्या बैठा है, जन नेता कहलावे है अर एक गुटबन्दी बणाय राखी है।

(समय-समाप्ति-सूचक-घंटी)

तो अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय का अभिभाषण दो तीन-दिन पहले म्हारै कनैं आयो थो। उण भाषण को राजकीय जूंठण समझ कर और उणमें जो चीज़ आई है उणको म्हे लोग स्वागत नहीं करता हुया मैं इण रो विरोध करूं हूं।

(कई माननीय सदस्य बोलने के लिए प्रस्तुत)

श्री अध्यक्ष : श्रीमती नगेन्द्रबाला।

श्री नगेन्द्रबाला (छबड़ा) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभि-भाषण पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव सदन के समक्ष आया उस पर कुछ निवेदन कर मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। अभि-भाषण में पैरा नं० ८ पर बताया गया कि बड़ी, मध्यम और लघु सिंचाई योजना द्वारा सिंचाई की सुविधाएं बढ़ायी गईं। उसमें आंकड़े भी हैं। "शुद्ध सिंचित क्षेत्र १९५१–५२ में ३३.३५ लाख एकड़ था जो कि बढ़ कर १९५८–५९ में ३५.७१ लाख एकड़ हो गया"। मुमकिन है इसके बाद और भी बढ़ा हो और विशेष तौर पर चम्बल क्षेत्र में। चम्बल के पानी से वर्षा ऋतु के पश्चात् जो भूमि प्यासी रह जाती है वह परिप्लावित हुई है और इसमें संदेह नहीं कि किसानों के भविष्य को मधुर आशा में बांधने की चेष्टा की है। लेकिन सरकार ने जहां ग्रामीण जनता के उज्जवल भविष्य के लिए करोड़ों रुपयों की योजनाएं बनाई हैं वहां दूसरी ओर हजारों रुपयों की बचत के लिए किसानों को उस गड्ढे में धकेल दिया है जिसका अनुमान लगाने की कोशिश नहीं की गई। मेरी खुद की देखी हुई चीजें हैं जो कि सदन के सामने रख रही हूं

(श्रीमती नगेन्द्रबाला)

और सदन उन पर विचार करेगा। नहरें जो बनी हैं उन पर पुलियों का अभाव है। जब नहरों ने गांव और खेत के बीच की दूरी के अन्तर को इतना बड़ा दिया कि किसान अपनी पैदावार को खलिहान से घर तक लाने में कितनी कठिनाई अनुभव करता है, उसको अपना माल लाने में अधिक समय देना पड़ता है इस प्रकार की पुलियों के अभाव के कारण। जहां सरकार से निवेदन करते हैं तो कहा जाता है कि अभी कार्ट ब्रिजेज़ आदि बनाने को संभावना नहीं; लेकिन अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण जनता की सुविधा के लिये यह परम आवश्यक है। कई जगह तो ऐसी भी हैं जहां अनावश्यक पुलियां बन गई हैं लेकिन आवश्यक पुलियों का निर्माण नहीं हुआ है।

अध्यक्ष महोदय, कई गांव ऐसे हैं कि नहरों के लीकेज होने के कारण टापु हो गये हैं और वहां इतने गहरे कीचड़ में होकर जाना पड़ता है कि गांवों में रहने वाले लोगों और मवेशियों तक को उनमें से होकर जाना मुश्किल हो गया है। नहरों के लीकेज के कारण कई जगहों पर ऐसी सेंध आ गई है जहां पर लोगों का रहना दुश्वार हो गया है। आर्थिक खुशहाली के स्वप्न तो कब पूरे होंगे, आज उन लोगों के सामने रहने की समस्या मुख्य रूप से आ गई है। इससे वर्तमान किसान का जीवन नर्क होता जा रहा है। अगर इसको देखा जाय तो प्रत्यक्ष नजर आयेगा उस इलाके में जहां से चम्बल की नहर निकली है। ग्रामीण जनता की शिकायत करने के बावजूद भी सम्बन्धित अधिकारी वर्ग उनको टालने की कोशिश करता है। वे कहते हैं कि शुरू में ऐसा होता ही है और होता होगा। अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संबंधित अधिकारियों द्वारा इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया कि किसानों को किस प्रकार की सुख-सुविधाओं की आवश्यकता है, उनके व्यवहारिक जीवन की आवश्यकता परिश्रम व सुविधाओं पर ध्यान रखने का कष्ट अधिकारी वर्ग ने नहीं किया है। ग्रामीण जनता के महत्व को गौण समझना प्रजातन्त्र की प्रणाली के प्रतिकूल है। मैं सरकार से पूछना चाहती हूं कि जहां एक ओर राष्ट्र के कृषि जीवन को उन्नत बनाने के लिए करोड़ों रुपयों की योजना बनाई जावे और कार्यान्वित की जावे वहां हजारों की बचत को विशेष महत्व देते हुये क्या किसान के वर्तमान सुख और स्वास्थ्य को उससे छीन लिया जाय? इसमें कोई सन्देह नहीं कि जहां आज का ग्रामीण वर्ग योजनाओं की पूर्ति में सहयोग देने के लिए तैयार है लेकिन वर्तमान में जो कठिनाई उसको हो रही है उसकी ओर भी निगाह डाली जानी चाहिये। इसमें सवाल मानवीय दृष्टिकोण का है। केवल प्रोजेक्ट सस्ता बने या मंहगा बने, इसमें यह कोई मायने नहीं रखता। मैं सरकार से निवेदन करती हूँ कि वर्तमान में जो ग्रामीण जनता इस प्रकार से पीड़ित है उससे उसको मुक्त किया जाय। उसके लिए मेरा सुझाव है कि जिला स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी व्यक्तियों की ऐसी कमेटी गठित की जाय जो इस विषय की जानकारी रखते हों जिनको इस विषय में रुचि हो वे समस्त जिले की कठिनाइयों को छानबीन कर उसके निराकरण के लिए सरकार को सुझाव दें। केवल इन्जीनियरों के भरोसे छोड़ा गया तो यह संभव नहीं होगा कि वे इस समस्या

(श्रीमती नगेन्द्रबाला)

का हल निकाल सकें ।

दूसरी बात अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में पैरा नं० २० में शिक्षा के बारे में है । इसको देखने से यह तो पता चलता है कि स्कूलों में बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई, लेकिन जहां बच्चियों की संख्या का सवाल है वह इसमें नहीं बताया गया है । अच्छा यह होता कि सदन के सम्मुख बच्चियों की संख्या भी बताई जाती ताकि हम अपने पिछड़ेपन के बारे में जान पाते और इसका सही स्वरूप हमको दृष्टिगत होता । बदकिस्मती है राजस्थान में कि लड़कों की संख्या के मुकाबले लड़कियों की संख्या कम है । मैं यह निवेदन करूं तो शायद अनुचित नहीं होगा जैसा कि सदन में १७६ के इस हाउस में केवल महिलाओं की संख्या आठ है और शायद यही अनुमान स्कूलों में भी होगा क्योंकि यहां की संख्या से जनता का वास्तविक स्वरूप प्रतिबिम्बित हो जाता है । अध्यक्ष महोदय, सरकार का यह दृष्टिकोण है कि लोग पुराने विचारों के काफी हैं, अतः माता–पिता लड़कियों की शिक्षा को ठीक नहीं समझते हैं । अध्यक्ष महोदय, ये बातें ग्रामीण क्षेत्र के लिये सही हो सकती हैं लेकिन जहां कस्बे और नगरों का सवाल है इस बारे में सरकार की ओर से कमी है न कि जनता के उत्साह की । आज हम देखते हैं लड़कों के लिये अच्छे स्कूल भी बनाये जाते हैं लेकिन जहां लड़कियों की स्कूलों की हालत हम देखते हैं तो मिडल स्कूल और प्राइमरी स्कूल अन्धेरी गलियों में और ऐसी टूटी-फूटी जगहों में पायेंगे जहां न रोशनी का प्रबन्ध है और न सेनीटेशन का प्रबन्ध है । अगर इन सब बातों का प्रबन्ध कर दिया जाता है तो कौन ऐसा माता-पिता होगा जो अपनी बच्चियों को पढ़ाना नहीं चाहेगा ? लेकिन अध्यक्ष महोदय, आज जिस प्रकार कन्या-शालाओं की हालत है उनको देखते हुए कौन ऐसा माता-पिता होगा जो अपनी बच्चियों को पांच घंटे के लिये प्रतिदिन 'कारावास में भेजना पसन्द करेगा ?

माननीय अध्यक्ष, मैं वयोवृद्ध शिक्षा मंत्रीजी से प्रार्थना करूंगी क्योंकि आप महिला शिक्षा में विशेष रुचि लेते हैं इसलिये लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान देकर उसकी प्रगति के लिये पूर्ण प्रयास करें । अध्यक्ष महोदय, 'स्कूल चलो' अभियान के सिलसिले में गांवों और नगरों में कुछ समितियां बनाई गई थीं । उन समितियों का सही उपयोग नहीं हो रहा है । उनके सुझावों की अवहेलना हो रही है । मैं वयोवृद्ध शिक्षा मंत्रीजी से अध्यक्ष महोदय, आपकी मार्फत प्रार्थना करूंगी कि उन समितियों का सही उपयोग होना चाहिये । इसके साथ साथ मैं विरोधी दल में विराजमान माननीय सदस्यों का आभार प्रगट करना चाहती हूं कि हमें उन्होंने जहां सुझाव दिये उसके साथ साथ उन्होंने चेतावनी भी दी है कि कांग्रेस पार्टी के गलत कामों और भ्रष्टाचार के कारण इतनी संख्या में वे आ सके हैं । इस चेतावनी के सम्बन्ध में मैं निवेदन करूं कि यह मानी हुई बात है, इसमें दो राय नहीं हो सकती; जब भूकम्प आता है तो उस समय जमीन चारों तरफ से हिलती है और यह ख्याल रहता है कि सामने वाला मकान या उसकी दीवार गिरनेवाली है । हो सकता है, उस समय लोग चिल्लाते हैं और

(श्रीमती नगेन्द्रबाला)

कहते हैं कि दीवारें गिरने वाली हैं लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि हमारे पैरों के नीचे की जमीन भी हिल रही है। माननीय सदस्यों ने गलतियों की तरफ ध्यान आकर्षित किया, उसके लिये हम बहुत आभारी हैं और हम आइन्दा उन चीजों का ध्यान रखेंगे। आज हम विधान सभा में आये हैं तो हमें जनता के हित की दृष्टि से सोचना है। अगर हम इस दिशा में सक्रिय कदम उठा सके तो जनता का और हमारे प्रान्त का हित होगा।

(३. ३० म. प.)

(श्री नारायणसिंह, सभापति पदासीन)

श्री हरिश्चन्द्र (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में जो बातें रखी हैं उन पर दो दिनों से सदन में चर्चा हो रही है।

मैं आशा तो यह करता था कि इन चर्चाओं के दौरान में सदन के सामने राजस्थान की तरक्की, राजस्थान की उन्नति, राजस्थान की बहबूदी के कोई सुझाव आते। लेकिन इस दो दिन के वातावरण में मुझे यह महसूस हुआ कि हम लोग जो कि यहां पर जनता से चुनकर आये हैं उनमें आपस में कई शंकाएं चलती हैं। मैं समझता हूं कि इस सदन में इस तरह की शंकाएं नहीं रहनी चाहिये और अगर इस तरह की शंकाएं रहती हैं तो आगे का जो काम हम करने को अग्रसर हो रहे हैं राजस्थान की जनता का उसमें हमें थोड़ा बहुत नुकसान भी हो सकता है और हम पीछे भी पड़ सकते हैं। यहां जितने माननीय सदस्य आये हैं वे सब जनता के सामने खड़े हुए थे और अपनी अपनी पार्टियों का उन्होंने प्रचार किया। तो ऐसी कोई बात नहीं कहनी चाहिये या होनी चाहिये कि आज मैं किसी एक कुल में जन्मा हुआ हूँ या मैं कहीं का एक राजा-महाराजा था, इस वास्ते यहां के माननीय सदस्यों के दिलों में या दिमागों में किसी तरह की शंकाएं पैदा होने लगे। अभी तो जो अलवर से आने वाले माननीय सदस्य हैं उनके लिये शंकाएं की जाती हैं कि पता नहीं उनका जोड़ कहां से कहां होगा। कहीं इस बात की शंका की जाती है कि हमारा क्या, हम जो जागीरदार हैं या भूतपूर्व राजा और महाराजा हैं या रूलर्स हैं क्या जनतन्त्र में विश्वास करते हैं या नहीं? यह एक ऐसी शंका है जो जनता के सामने नहीं आनी चाहिये। हमको ठोस कदम उठाने की जरूरत है और इस बात को सदन के सामने हिम्मत के साथ रखने की जरूरत है कि यहां जितने भी सदस्य हैं, १७६, वे सभी जनतन्त्र में विश्वास करते हैं और जनतन्त्र की रक्षा करने के लिये मौजूद हैं। अगर हम इस तरीके से चलेंगे तो मैं समझता हूं कि हमारे बहुत से काम जो हैं, सुचारू रूप से चल सकेंगे।

मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि इस तरह की भी शंकाएं यहां रखी गई हैं प्रिवी पर्स के बारे में। जहां तक प्रिवी पर्स का सवाल है वह इस असेम्बली के दायरे के बाहर की चीज है और वह अगर यहां डिस्कस नहीं होती तो अच्छी बात थी, लेकिन क्योंकि यहां डिस्कस हुई है और उसके ऊपर कई चर्चाएं

(श्री हरिश्चन्द्र)

हुई हैं, इस वास्ते मैं भी इसके बारे में आपके सामने कुछ कहना चाहूँगा और वह यह है कि जब सन् १९४७ में देश आजाद हुआ तो उस वक्त हिन्दुस्तान की सरकार ने कई कमिटमेन्ट्स किये, कांग्रेस सरकार ने कई कमिटमेन्ट्स किये और जो रियासतें एकीकरण में आईं और जिन रियासतों में भूतपूर्व राजाओं के पास से शासन ले लिया गया, उनको उनके परिवार के लिये पेंशन के रूप में ये प्रिवी पर्स दी गईं।

आज इन प्रिवी पर्स पर कोई टैक्स नहीं है, यह आपकी गलतफहमी है। प्रिवी पर्सों पर एक्सपेन्डीचर टैक्स, केपिटल गेन्स टैक्स, एस्टेट ड्यूटी और प्रिवीपर्सों के अलावा जो इन्कम होती है उस पर इन्कम टैक्स भी लगता है। प्रिवी पर्स पर सिर्फ इन्कम टैक्स नहीं लगता, बाकी और जितने टैक्सेज़ हैं वे सारे रूलर्स को देने पड़ते हैं।

तो मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि आज अगर राजस्थान के हित के लिये और हिन्दुस्तान के हित के लिये, देश की जनता के हित के लिये अगर यह महसूस होता है आप लोगों को, हिन्दुस्तान की जनता को यह महसूस होता है कि राजस्थान की या देश की अन्य रियासतों में जो भूतपूर्व नरेश हैं उनको अपनी अपनी प्रिवीपर्सें देश के हित में छोड़ने की जरूरत है तो मैं आपको दावे के साथ कह सकता हूँ कि हरएक नरेश, हरएक भूतपूर्व राजा इस बात को तस्लीम करेगा और छोड़ने के लिये तैयार हो जावेगा। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि समाजवाद की जो बातें कही जाती हैं उनको आपने अगर सिर्फ प्रिवीपर्स से जोड़ दिया तो वह कोई समाजवाद सही समाजवाद नहीं होगा। आज हम समाजवाद की बात करते हैं तो इसके साथ प्रिवीपर्स की बात कही जाती है। समाजवाद के लिये यह निहायत जरूरी चीज होती है कि जो गरीब तबका होता है उसको उठाया जाय और मैं गर्व के साथ यह कह सकता हूं कि इन विगत १४ सालों के अन्दर राजस्थान की गरीब जनता ऊपर उठी है। राजस्थान जब बना तब राजस्थान के पास बुनियादी काम नहीं थे, राजस्थान के पास कोई ऐसा काम नहीं था कि जिससे जनता की तरक्की की जा सकती हो, उसकी बेकारी और गरीबी दूर की जा सकती हो। आज १४ वर्षों के कांग्रेस के शासन काल के बाद राजस्थान गर्व के साथ कह सकता है कि आज जो डैम्स बने हैं वे ऐसे बने हैं कि जिनसे आज नहीं पर दस साल बाद जो आपकी अगली सन्तान आने वाली है वह उनसे काफी लाभ उठावेगी और यह कहेगी कि राजस्थान के जो प्लानर थे, निर्माता थे वे राजस्थान के गौरव थे जिन्होंने हमारे लिये ये काम किये।

आज इन कामों का नतीजा हम नहीं देख सकते। आप जितने सदस्य महानुभव यहां पधारे हैं वे जानते हैं कि कोई इमारत एक दिन में नहीं बन सकती। आज अगर इमारत बनाई जाती है तो उसमें भी साल-छः महीने लग जाते हैं; छोटी से छोटी इमारतों को बनाने में भी इनको बनाने में भी, ठीक करने में भी, और प्लान करने में भी समय लगता है। इसी तरह जब हम सारे देश का

(श्री हरिश्चन्द्र)

निर्माण करने जाते हैं अपने एक राजस्थान का निर्माण करने जाते हैं तो उसके अनुरूप ही इसमें समय लगना अपेक्षित है। यह एक दिन का काम नहीं है । आखिर राजस्थान जब बना तो एक माननीय सदस्य जो अलवर से आये हैं उन्होंने प्रश्न रखा बिजली के लिये कि पहले कितनी थी और राजस्थान बनने के बाद हमने कितनी तरक्की की इसमें। मैं निवेदन करूं राजस्थान जब बना तो उस समय सिर्फ १५ हजार किलोवाट बिजली थी, पर आज दूसरी योजना के अन्त तक राजस्थान की फर्म कैपेसिटी ६४ हजार किलोवाट के करीब हमारी है। आप यह कहेंगे कि सारी की सारी खर्च नहीं होती या इसमें यह है कि यह सारी की सारी ली नहीं जाती है तो मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां तक कि चम्बल का प्रश्न है इसमें हम जरूर पिछड़े हैं और इसके भी कारण हैं।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फोर्मेशन, सर, नैट जेनरेटिंग कैपेसिटी हमारी कितनी है ?

श्री हरिश्चन्द्र : दूसरी योजना के अन्त तक १,०८,६६२ किलोवाट इन्स्टाल्ड कैपेसिटी हमारी है।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : We want net generating capacity.

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : नैट जेनरेटिंग कैपेसिटी का फर्क बता दीजिये। बात यह थी कि श्री नाथूरामजी ने साथी रामानन्द के द्वारा रखे गये आंकड़ों को चैलेन्ज किया था और उनके आंकड़ों को झुठलाया गया था फर्म कैपेसिटी के आंकड़े बता कर।

श्री हरिश्चन्द्र : मैं नहीं समझा आपकी बात को। जो भी फिगर्स हैं वे स्पष्ट हैं और रेकॉर्ड में हैं । वे सारे आंकड़े मैं आपको दूंगा। इन्स्टाल्ड कैपेसिटी का मतलब यह है कि मान लीजिये तीन जेनरेटिंग सैट्स हमने लगा दिये। अब तीन जेनरेटिंग सैट्स जितना उत्पादन कर सकते हैं तो उतनी कैपेसिटी तो इन्स्टाल्ड हो गई, पर यह फर्म कैपेसिटी नहीं हुई क्योंकि उनमें से दो चलेंगे तो एक बन्द रहेगा।

तो मैं अर्ज यह कर रहा था कि राजस्थान के अन्दर जब तक कि इन्डस्ट्रियलाइज़ेशन नहीं होगा तब तक हमारी तरक्की नहीं हो सकती। इन्डस्ट्री तब हो सकती है जब कि हमारे पास पॉवर हो। जहां तक चम्बल का सवाल है मैं अभी आपसे कह रहा था कि इसमें हम जरूर पिछड़े हैं और इसका भी कारण कोई हमारी ढिलाई या गफलत नहीं है न राजस्थान सरकार की ही कोई ढिलाई रही है। हमारे देश में अभी ऐसे उद्योग-धन्धे नहीं पनपे हैं कि जिनके कारखानों में से हमारी इस सम्बन्धी सारी आवश्यक वस्तुएं हमें देश में ही उपलब्ध हो सकें। बहुत सी इस सम्बन्धी हमारी आवश्यक चीजें बाहर से हमें इम्पोर्ट करनी होती हैं जो कई कारणों से समय पर यहां नहीं पहुँच पातीं। फिर बीच में देश में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिनके कारण रेल के कई रास्ते भी बन्द हो गये क्योंकि वह जरूरी काम था।

(श्री हरिश्चन्द्र)

क्योंकि वह जरूरी काम था इसलिए उसको प्रायोरिटी दी गई और इस काम में डिले हुई और इससे हम तीन चार महीने पिछड़ गए। यह हम नहीं कहते, हम इस बात की कोशिश करते हैं कि सारे काम टाइम से हों, लेकिन कई ऐसी बातें होती हैं जो कि राजस्थान सरकार के कन्ट्रोल के बाहर की होती हैं, उसमें हम भी कुछ नहीं कर सकते हैं। रहा सवाल भाखरा नांगल का, तो वहां से जितनी पॉवर हमारे पास आ रही है उसको हम कन्ज्यूम कर रहे हैं। तो यह मैं आपके सामने रखना चाहता था कि हमारा राजस्थान प्रगति के मार्ग पर चल रहा है। हम यह चाहते हैं कि जितने माननीय सदस्य यहां आये हैं वे हमारे सामने ऐसे सुझाव पेश करें जिससे राजस्थान की जनता का हित हो सके।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : ओन ए पोइन्ट ऑफ क्लेरीफिकेशन, सर, भाखरा-नांगल से जितनी बिजली मिलनी चाहिए सैकण्ड फाइव इयर प्लान तक क्या उस सारी पॉवर को हम ले सके हैं ?

श्री हरिश्चन्द्र : ६ हजार किलोवाट है उसमें से ४ हजार तो ले ही रहे हैं और जब लेफ्ट प्लान्ट चालू होगा तो और मिलेगी, फिर जब पॉवर का बजट आयेगा उस समय डिस्कस कर सकते हैं। तो मैं सदन के सामने यह निवेदन कर रहा था कि राजस्थान उन्नति के मार्ग पर चल रहा है। राजस्थान ने करवट बदली है। मैं खुद मानता हूं, जहां से मैं आया हूँ वहां मैंने देखा है कि कितनी तरक्की हुई है। यह बात नहीं है कि मैं मिनिस्टर हूँ इसलिए वहां तरक्की हुई है। ऐसी बात नहीं है। अगर आप गांवों में जायें तो आपको दीखेगा कि वहां पर नये नये मकानात बने हैं, यह क्यों ? मैं कई एक गांवों में चुनाव के दौरान में गया हूँ और वहां जाकर मैंने वहां के काश्तकारों से पूछा है कि इन दो साल के अर्से में आपके यहां पर कितने नये मकानात बने हैं तो मैंने देखा है कि जहां जिस गांव में २५–३० आदमी रहते हैं वहां पर ५–७ नये मकानात बने हैं और यह मैंने स्वयं ने देखा है....

श्री हरदत्तसिंह (नोहर) : क्या आपने उन नये मकानों में यह देखने की कोशिश की है कि उन मकानों में जो सीमेन्ट लगी है वह ब्लैक से लगी है ?

श्री हरिश्चन्द्र : इन्हीं चुनावों के दौरान में जब मुझे गांवों में जाने का मौका मिला तो वहां के काश्तकार, पटेल और उनके रिश्तेदार साइकिल पर बैठे हुए जा रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या आप बता सकते हैं कि दो–तीन वर्ष पहले यह साइकिलें थीं ? उन्होंने कहा कि नहीं थीं। मैंने फिर उनसे पूछा कि फिर यह कहां से आ गयीं, तो उन्होंने कहा कि हमारी तरक्की हो रही है, हम उन्नति के मार्ग पर हैं। इसलिए गांवों के अन्दर जहां तीन–चार साल पहले आपको साइकलें नजर नहीं आती वहां आज साइकलें नजर आती हैं। हम चाहे गवर्नमेंट को क्रिटिसाइज़ करें, लेकिन आप जनता के अन्दर देखेंगे तो वहां उन्नति जरूर दीखेगी और वही रियल उन्नति है गांवों की जिसको आप चाहते हैं। मैं एक गांव में गया, वहां पर एक कुम्हार था। वहां पर मुझे चाय

(श्री हरिश्चन्द्र)

पर बुलाया तो मैं वहां चाय पीने गया। मैंने वहां पर दो मकान बने हुए देखे। अगर आज कोई सदस्य वहां पर जाना चाहे तो मैं ले जाने के लिए तैयार हूं। मैं उस गांव में गया तो वहां मैंने कुम्हार से पूछा तो उसने कहा कि यह मकान मैंने इसी साल बनवाया है और अभी ही पूरा हुआ है और मेरे यह पूछने पर कि इसमें कितना पैसा लगा होगा तो उसने कहा कि ६–७ हजार लगे होंगे। मैंने कहा कि तुम्हारा पुराना मकान कहां है तो उसने मुझे एक झोंपड़ा बताया....

श्री कुमारानन्द (ब्यावर) : ओन ए पोइन्ट ऑफ क्लेरिफिकेशन, सर, क्या आप बतला सकते हैं कि अजमेर जिले में किसी गांव में ऐसे मकान बने या नहीं ?

श्री हरिश्चन्द्र : मैं खुद गांव में गया। मैं ले जाने के लिए तैयार हूं, अगर आप तैयार हैं तो।

श्री कुमारानन्द : अजमेर जिले के किसी गांव में ऐसे मकान बने हैं क्या ?

श्री हरिश्चन्द्र : मैं झालावाड़ जिले की बात कर रहा हूं, अजमेर की नहीं।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : ओन ए पोइन्ट ऑफ इनफोर्मेशन, सर, उस गांव का नाम बताया जाये।

श्री सभापति (श्री नारायणसिंह) : I would like to remind the Hon'ble Members that useless interruptions just prolong.....,

श्री हरिश्चन्द्र : मैंने आपको इन्वाइट किया है। आपमें से कोई सदस्य चलना चाहें तो मैं उनको ले जा सकता हूं।....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : ओन ए पोइन्ट ऑफ इनफोर्मेशन, सर, क्या आप इसको एक बड़ी ऐतिहासिक घटना समझते हैं कि एक गांव में एक मकान पक्का बन जाये ?

श्री सभापति : Hon'ble Members will please listen to what the Hon'ble Minister is saying. This is not a Question Hour and he should not be interrupted as far as possible. Please continue.

श्री हरिश्चन्द्र : तो चेयरमैन महोदय, मैं यह अर्ज कर रहा था कि राजस्थान में कई बड़े बड़े काम हुए हैं और उन कामों की चर्चा यहां करनी चाहिए थी लेकिन हम छोटे छोटे मामलों में उलझ गये। वाजिब है, छोटी छोटी डिटेल्स में भी जाने की जरुरत पड़ती है और हो सकता है कि उन डिटेल्स में कोई इग्नोर करे तो अच्छी बात नहीं होती है और हम आशा करते हैं कि ये छोटी छोटी बातें माननीय सदस्यों ने जो रखी हैं उनके ऊपर सरकार विचार करेगी और उसके लिए आगे कदम बढ़ायेंगे।

जहां तक ट्रान्सपोर्ट के नेशनलाइज़ेशन का सवाल है मैं माननीय सदस्यों के सामने यह रखना चाहूंगा कि ट्रान्सपोर्ट का जो नेशनलाइज़ेशन है यह होगा और हम इस बात का प्रयास करेंगे कि तेजी के साथ होगा। हम चाहते हैं कि राजस्थान सरकार इस नेशनलाइज़ेशन के द्वारा राजस्थान की जनता को

(श्री हरिश्चन्द्र)

एफीशियेन्ट ट्रान्सपोर्ट सर्विस प्रोवाइड करे। हम यह भी चाहते हैं कि जनता को जो फैसिलिटीज़ दूसरी बसेज़ में नहीं मिलती हैं वह भी हम उसके द्वारा प्रोवाइड कर सकें और तीसरी बात जो सबसे बड़ी बात है वह यह है कि जो वर्कर्स उस नेशनलाइज़ेशन के अन्दर काम करते हैं उनका स्तर भी दूसरे वर्कर्स से कुछ ऊंचा हो। अगर हम इस प्रकार से काम नहीं कर सकते हैं तो समाजवाद की बात करना बिल्कुल बेकार है और हम यह करना चाहते हैं और हम यह प्रूव करना चाहते हैं और सदन के सामने प्रूव करके बतायेंगे कि जो ट्रान्सपोर्ट का नेशनलाइज़ेशन हो रहा है इसके अन्दर हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि इस सदन के सामने जो भी महत्वपूर्ण सुझाव आयेंगे उनका हम हमेशा आदर करेंगे और हम कोशिश करेंगे कि उन सुझावों के द्वारा हम अपनी ट्रान्सपोर्ट सर्विस को ठीक चला सकें।

रावत श्री मानसिंह महार (आमेर) : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फोर्मेशन, सर, जिस तरह आप उनका स्तर ऊंचा करेंगे उसी तरह किराये में भी कमी की जायेगी क्या ?

श्री **हरिश्चन्द्र** : यह मैटर ऑफ डिटेल्स इसके ऊपर अभी मैं कुछ नहीं कह सकता; लेकिन यह जरूर कहूंगा कि इतना ऊंचा नहीं हो जायेगा कि उन बसेज़ में कोई बैठेगा नहीं। उसमें जरूर बैठेंगे।

श्री **रामानन्द अग्रवाल** : मंत्री महोदय को मैं बताऊं कि इस समय तो यह स्थिति है कि जो प्राइवेट बसेज़ चलती हैं उनके मुकाबले में नेशनलाइज़्ड बसेज़ में ज्यादा किराया है। मंत्री महोदय को जरूर उत्तर देना चाहिए कि गवर्नमेंट की इस बारे में क्या पॉलिसी है।

श्री हरिश्चन्द्र : इसके स्ट्रक्चर के बारे में जब बजट प्रस्तुत हो तो उस समय मैं बता सकूंगा।

(४.० म. प.)

भरतपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने दो-तीन बातें सड़कों के बारे में कही थीं....

राजा श्री मानसिंह (डीग) : I do not represent Bharatpur.

श्री हरिश्चन्द्र : भरतपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने नहीं कहा होगा, लेकिन जो डिप्टी लीडर हैं ऑपोज़ीशन के उन्होंने कहा था। आपने नगर और पहाड़ी की सड़कों के बारे में कुछ कहा था। यह २३ मील लम्बी है जिसमें से १२ मील बन चुकी है और बाकी का जो काम है वह तीसरी पंचवर्षीय योजना में लिया जायगा और हम उम्मीद करते हैं कि वह ६३-६४ में पूरी हो जायगी।

राजा श्री मानसिंह : When was the work started on this road ?

श्री हरिश्चन्द्र : मैं माननीय सदस्य से निवेदन करना चाहूंगा कि एक तरफ तो यह मांग होती है कि सड़कें बननी चाहिए, एक तरफ मांग होती है कि बिजली लगानी चाहिए दूसरी तरफ से मांग होती है कि सिविल वर्क्स बनने चाहिए, चौथी तरफ से मांग होती

(श्री हरिश्चन्द्र)

है कि हमारे यहां पर और कुछ काम होने चाहिए लेकिन जो माननीय सदस्य इस बात को कहते हैं वे उसी सांस में वहीं यह भी कहना चाहते हैं कि टैक्स नहीं लगने चाहिए। क्योंकि अगर टैक्स जो लगाया जाता है तो जनता उससे परेशान है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं माननीय सदस्यों से बड़े अदब के साथ कि अगर आप यह चाहते हैं कि राजस्थान में प्रगति हो तो जितने भी माननीय सदस्य हैं वे इस बात के लिए सहमत हों कि हमारे राजस्थान का जो प्लान है उस प्लान को फुलफिल करें और उसमें आपका वह योग भी होना चाहिए तो हम आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन एक तरफ तो आप यह चाहें कि आपके यहां सड़कें बनें दूसरी तरफ जहां सड़कों की बात करते हैं वहीं के वहीं यह भी कहते हैं कि टैक्स नहीं लगने चाहिए। इस वास्ते मैं निवेदन करना चाहता हूँ अदब के साथ कि अगर आप यह चाहते हों कि राजस्थान की उन्नति हो और राजस्थान की उन्नति वेरियस स्फियर्स में हो....

श्री मानसिंह महार : किन लोगों पर टैक्स लगना चाहिए, अगर आप हम से मदद चाहते हैं तो हम बता सकतें है कि उससे योजनाएं चलाई जायं।

श्री हरिश्चन्द्र : मैं अर्ज कर रहा था........

श्री निरंजननाथ आचार्य (राजसमन्द) : point of order, sir....

श्री सभापति : What is the point of order ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : My point of order is that whenever any Hon member is speaking he should not be disturbed. If there are some points of information and if the need arises and if the Chair allows them....

श्री रामानन्द अग्रवाल : सभापति महोदय, यह परम्परा तो माननीय सदस्य ने ही डाली सदन में।

श्री निरंजननाथ आचार्य : This is a reflection over the Chair. We are fortified by so many observations that if there were any points of clarification, there may be asked after the Hon. Minister has concluded.

श्री मानसिंह महार : This is no reflection on the Chair. This is a reflection on the member himself.

श्री हरिश्चन्द्र : मैं यह अर्ज कर रहा था कि माननीय सदस्यों के सामने जो सवाल है यह बड़ा अहम सवाल है। वह यह है कि जितने भी माननीय सदस्य हैं वे इस बात को तसलीम करें कि हमारा जो प्लान है, राजस्थान का जो प्लान है और जो प्लानिंग कमीशन से पास होकर आ गया है उसमें हर एक माननीय सदस्य का सहयोग होता है तो वह प्लान सक्सैसफुल होता है। अगर यह नहीं किया जाता है तो मैं माननीय सदस्यों से यह निवेदन करूंगा कि यह जो मांग है कि सड़कें बननी चाहिये, पुलियां बननी चाहिए, हमारे यहां ट्रांसमिशन लाइन आनी चाहिये और काम

(श्री हरिश्चन्द्र)

होने चाहिए, बांध बन जाने चाहिए, इसको भूल जायं।

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, यह बड़ा गंभीर मामला है कि बार'बार यह कहा जाता है कि हमारा कोआॅपरेशन होना चाहिए। इसका मतलब यह होता है कि सदस्यों का कोआॅपरेशन नहीं होता है। यह बिल्कुल गलत बात है। क्या कोआॅपरेशन मंत्री महोदय चाहते हैं ?

श्री हरिश्चन्द्र: मैं यह अर्ज कर रहा था कि जो माननीय सदस्य उधर बैठे हुए हैं वहां से यह आवाज एमर्ज हुई कि हमारे यहां टैक्स ज्यादा लग रहे हैं और हमारे यहां टैक्स नहीं लगने चाहिये और यहां तक कि लैण्ड रेवेन्यू भी माफ हो जाने चाहिये ....

श्री मानसिंह महार : बिल्कुल।

श्री हरिश्चन्द्र : अगर हम इस पॉलिसी पर चलते हैं तो मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा क्योंकि मेरे पास ऐसे महकमे हैं जिन में लोग सड़कों की मांग करते हैं, पुलियों की मांग करते हैं, बिजली की भी मांग करते हैं तो मैं आपसे कहूँगा कि नहीं कर सकता, क्योंकि आपका सहयोग नहीं है। आप कहेंगे कि क्या हो रहा है, मन्त्री महोदय कुछ काम नहीं कर रहे हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल: ओन ए पोइन्ट आॅफ आॅर्डर, सर, यह जो टैक्स बढ़ाने और घटाने का संबंध योजनाओं से जोड़ा जा रहा है अच्छा होता कि ये सारी बातें बजट के समय कही जातीं।

श्री सभापति : This is no point of order.

श्री हरिश्चन्द्र : मैं टैक्स पॉलिसी डिस्कस नहीं कर रहा हूं। ....

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, यह बड़ा अहम मसला है। यह हमारी पार्टी पर डाइरेक्ट एटेक है कि हमने कहा है कि लैण्ड रेवेन्यू नहीं वसूल किया जाय।

श्री सभापति : Hon. Member will kindly take his seat.

श्री मानसिंह महार : मैं इसके मुताल्लिक दो शब्द अर्ज करना चाहता हूं, for the information of the Hon. Minister.

श्री सभापति : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि यह बन्द होना चाहिये।

(अनेक सदस्यों के खड़े होने पर)

श्री हरिश्चन्द्र : माननीय नेता महोदय जो कि आॅपोज़िशन के हैं उन्होंने यह बात कही है कि टैक्सेज़ में लैण्ड रेवेन्यू तक माफ कर देनी चाहिए।

श्री मानसिंह महार : I have said it.

श्री हरिश्चन्द्र : एक तरफ तो वे मांग करते हैं कि टैक्स और लैण्ड रेवेन्यू नहीं लेना चाहिए और दूसरी तरफ से मांग आती है कि

(श्री हरिश्चन्द्र)

नई पुलिया बनाई जायं, नये बांध बनवाये जायं ।

श्री मानसिंह महार : तरीकों में फर्क है । आप जिस तरीके से जितना पैसा वसूल करते हैं, अगर हमारी राय लें तो डबल पैसा पैदा कर देंगे और लोगों के पेट का पानी भी नहीं हिलेगा ।

श्री हरिश्चन्द्र : तो मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि माननीय सदस्यों को यह देखना पड़ेगा कि जो तरक्की चल रही है, राजस्थान का जो प्लान है अलग पंचवर्षीय योजनाएं हैं उन पंचवर्षीय योजनाओं को सफल बनाना चाहते हैं या नहीं ? मेरी मान्यता यह है और मैं समझता हूँ कि जितने भी इधर बैठे हैं उन सब की मान्यता यह है कि राजस्थान की तरक्की तभी हो सकती है जब कि तीसरी पंचवर्षीय योजना सफलतापूर्वक निकल जाय ।

(विराम)

उसके बाद में हमें यह पता होगा कि राजस्थान की जनता के लिए कुछ न कुछ काम हुआ है, जिससे आगे आने वाली सन्तान हमें याद करेगी और कहेगी कि हमने कुछ काम किया है ।

अगर हम किसी पशोपेश में पड़ गये और एक दूसरे से अलग होकर विश्वास से नहीं चल सके तो मैं समझता हूं कि कई कठिनाइयां बढ़ जायेंगी और जो उन्नति के रास्ते पर राजस्थान चल रहा है यह बन्द हो जायगा और हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे ।

इस बात को कहने के लिए मैं खडा हुआ था और दो–तीन बातें माननीय सदस्य जो कि बाड़ी से आये हैं या पहाड़ी से आये हैं या नगर से आये हैं........

राजा श्री मानसिंह (डीग) : डीग से ।

श्री हरिश्चन्द्र : उन्होंने रखी थी कि धौलपुर से आगरा जाने के लिए या धौलपुर से भरतपुर वाया आगरा जाने के लिए यह बहुत लम्बी है और छोटे रूप में बननी चाहिए........

राजा श्री मानसिंह : Road is being constructed between Bari and Karauli.

श्री हरिश्चन्द्र : यह करोली और सरमथुरा के बीच में है । यह २७ मील लम्बी सड़क है, उसमें से २४॥ मील कम्प्लीट हो गई है ।

एक पोइन्ट यह रखा था पी० डब्ल्यू डी० के बारे में कि पुलिस की बिल्डिंग टूट गई है या कोई ऐसी बात रखी थी । उसके लिए मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि पी० डब्लू०-डी० ने बिल्डिंग नहीं बनाई है ।

राजा श्री मानसिंह : डेवलपमेंट डिपार्टमेंट....

श्री हरिश्चन्द्र : पी० डब्ल्यू० डी० ने नहीं बनाई है ।

राजा श्री मानसिंह : Development Department, not the P. W. D.

श्री हरिश्चन्द्र : बाड़ी और सरमथुरा की बात माननीय सदस्य ने रखी थी कि कल्-वर्ट्स नहीं बने हैं। उसके लिये निवेदन यह करना है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में उन कलवर्ट्स को रखा है वे कम्पलीट हो जायेंगे !

निम्बाहेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने निम्बाहेड़ा के हाई स्कूल के लिए कहा था कि शायद वहां मकान नहीं बना है। उसमें जहां तक पी० डब्ल्यू० डी० के मारफत की बात है १५,०००) रु० की मन्जूरी हुई थी। एडीशन्स और ऑल्टरेशन्स के लिए १५,०००) रु० खर्च कर दिया गया है। इसमें और कोई बात हो तो माननीय सदस्य खुद बता सकते हैं और मैं उनके लिए और पूछताछ कर सकता हूँ।

एक माननीय सदस्य जो कि निम्बाहेड़ा से आये हैं उन्होंने कहा था कॉज़वे के बारे में। उसके लिए क्योंकि एक गम्भीरी डेम बना है। डेम बनने से कॉज़वे के ऊपर पानी ज्यादा रहता है। उसके लिए चूंकि इर्रिगेशन डिपा-मेंट से बातचीत चल रही है और चूंकि इर्रिगेशन डिपार्टमेंट का ऐसा व्यू है कि वह डेम को और ऊंचा करेंगे, अगर वह डेम को ऊंचा करते हैं तो पानी का लेवल और ऊंचा होगा और अब लेवल्स लिये जा रहे हैं। इस बात का प्रयास किया जायेगा कि यह पुलिया तीसरी पंचवर्षीय योजना में रखी जाय और इसको बनाया जाय।

अंत में फिर सदन के माननीय सदस्यों से यह निवेदन करूंगा कि एक दूसरे के प्रति जो शंकाएं हैं निरंतर उनके ऊपर नहीं चलना चाहिये। साफ दिल से और साफ दिमाग से चलने की जरूरत है। हम जो इधर बैठे हैं, मैं उनकी तरफ से आप लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम जनतंत्र में विश्वास करते हैं, हम समाजवाद में विश्वास करते हैं और इन दोनों चीजों के लिये हम लोग पूरा प्रयास करेंगे कि राजस्थान में जिस तरह भी जनता के सामने समाजवाद को ला सकें लाने का प्रयास करें।

श्री सभापति : माननीय गृह मन्त्री।

श्री हरिराम (सिवाना) : मेरा नाम आप जानते हैं या नहीं, मुझे भी बोलने का मौका देंगे या नहीं ?

श्री सभापति : आपका शुभ नाम ?

श्री हरिराम : हरिराम।

श्री सभापति : आप को भी मौका दिया जायेगा।

श्री मथुरादास माथुर (गृह मन्त्री) : अध्यक्ष महोदय, श्रीमन् राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर इस सदन में तीन दिन से चर्चा हो रही है। चर्चा के दौरान में इस बात की कोशिश की गई है कि माननीय सदस्य अपना अपना विचार रखते हुए बहुत सों ने इस बात को प्रगट किया है कि राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद देने में हिस्सा नहीं ले सकते। बहुत से साथियों ने शंकाएं प्रकट प्रकट की हैं और बहुत से साथियों ने पुरजोर आवाज से अभिभाषण की सराहना की है।

राज्यपाल के अभिभाषण में राज्य सरकार

(श्री मथुरादास माथुर)

की नीति, राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष में होने वाले कार्यक्रम की नीति पर विचार रखे गये हैं। राज्यपाल महोदय ने इन दस वर्षों में दो पंचशाला योजनाओं में जो राजस्थान में कार्य हुए हैं और जिनसे राजस्थान की तरक्की, राजस्थान की जनता की तरक्की और विकास हुआ है उसको मद्देनजर रखते हुए सदन के सामने सरकार की नई नीति की घोषणा की है।

मुझे इस बात का खेद है कि हमारे कुछ साथियों ने राजस्थान में जो बहुत बड़े बड़े विकास कार्य हुए हैं उनकी तरफ से आंख मींच कर चंद बातों की ओर इस सदन का ध्यान खींचने की कोशिश की है। मुझे इस बात का खेद है कि हमारे विरोधी पक्ष के नेता ने अपने जिले में और उनके विकास क्षेत्र में एक खड्डे की तरफ, स्कूल के पांच में से चार कमरों की तरफ ही ध्यान खींचा है और चंद बातों को कह कर वे इस बात को सदन के सामने पेश करना चाहते हैं कि राजस्थान में इन १० वर्षों में विकास कार्य नहीं हुआ। मुझे बहुत खुशी होती यदि विरोधी दल के नेता भी इस वक्त सदन में मौजूद होते जैसा कि उनके भाषण के समय हम सब यहां मौजूद थे।

राज्यपाल महोदय के भाषण पर धन्यवाद देना चाहिये या नहीं; इसका फैसला करने से पहले इस सदन में बैठने वाले इस ओर और उस ओर के सभी साथियों को राजस्थान के ऑवर ऑल विकास पर चर्चा करनी पड़ेगी। हो सकता है किसी पंचायत क्षेत्र में, हो सकता है किसी सहकारी समिति में या किसी विभाग में छोटा बड़ा काम अनुचित या गैर वाजिब हो गया हो। हो सकता है, सरकार की इतनी बड़ी मशीनरी काम करती है तो सरकार के किसी अफसर से कोई काम गलती से या जान बूझ कर बुरा हो जाता है। ये सब बातें होते हुए भी आप यदि यह आशा रखते हैं कि राजस्थान में कोई ऐसा काम नहीं हो योजना को पूरा करने के लिये जो सरकारी मशीनरी से या आप और हम सब मिल कर जिसको चलाना चाहते हैं उनसे कोई त्रुटि नहीं होगी; यदि इस प्रकार का विचार रख कर चलते हैं तो मुझे खेद है कि आपको सन्तोष नहीं दिला सकेंगे। लेकिन यदि आप इस बात को लेकर चलते हैं कि दो योजनाओं में २ अरब से अधिक रुपये खर्च किये हैं उसमें ७५ या ८० प्रतिशित रुपये ठीक खर्च किये हैं, यदि आप देखते हैं कि राजस्थान नहर बन रही है, यदि आप देखते हैं कि भाखरा और चम्बल की नहरों से सिंचाई में तरक्की हो रही है, यदि आप देखते हैं कि छोटे–बड़े बांध हर जगह बने हैं, आबपाशी में तरक्की हुई है तो आप कृपा करके उसकी सराहना कीजिये। यदि किसी गांव में कुंआ नहीं खुदवाया गया है तो मुझे खेद है। मैंने उस समय विरोधी दल के नेता से अर्ज किया था कि उस गांव का नाम बता देते तो कुछ जानकारी शुरू कर देते। कुछ खड्डा रह गया हो, जहां लघुशंका करते हैं तो उसको खोद कर पानी निकाल देते। उनका काम लघु शंका का है, लेकिन हम पानी निकाल सकते हैं।

सभापति महोदय, आज आपको कई स्कूलें ऐसी मिल जायेंगी जहां सरकार और

Page No 90

(श्री मथुरादास माथुर)

पंचायत समिति की तरफ से हजार रुपये दिये जाते हैं और गांववालों को मिल कर ३ हजार रुपये जुटाने पड़ते हैं तब जाकर नक्शा बनता है और स्कूल भवन बनता है। कभी कभी गांववाले रुपये न होने से मदद न कर सकें या श्रमदान नहीं दे सकें तो बजाय ५ कमरों के ४ कमरे ही बन कर रह जाते हैं। विरोधी दल के नेता ने नियम पढ़े होंगे तो वे जान सकेंगे कि प्राथमिक पाठशाला का काम पंचायत के नीचे है। विकेन्द्रीकरण की तारीफ या आलोचना करना सहज बात है, लेकिन उसको एकोमोडेट करना मुश्किल कार्य है। यदि कहीं एक कमरा रह गया है तो यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। मेरे पास ऐसी कई मिसालें हैं जहां रुपयों की कमी के कारण किंवाड़ नहीं बन पाये हैं। ऐसी कई मिसालें देखने को मिलती हैं। सब जगह एक साथ काम पूरा हो, यह जरूरी नहीं है। राजस्थान के गांवों में पाठशालाएं बन गई, यदि उनमें कुछ त्रुटि रह जाती है तो त्रुटि को लेकर यह कहें कि ५ कमरों की जगह ४ कमरे ही बने हैं इसलिए राज्यपाल को धन्यवाद नहीं दिया जा सकता, यह कहां तक उचित है ?

कस्ट्रक्टिव क्रिटिसिज्म की तरफ ध्यान दिया जा सकता है....

एक माननीय सदस्य : ओन ए पॉइन्ट ऑफ आर्डर, सर, आप छोटी छोटी बात तो जाने दीजिये, ३४, ४२० रु० का गबन है पंचायत की किताबों से सिद्ध होता है, उसका क्या होगा ?

श्री मथुरादास माथुर : आप अपने भाषण में जरूर कहिये, पहले कहते तो मैं उसका जवाब देता; लेकिन जब मैं बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं तो उस समय इन्टप्ट करना कहां तक उचित है ?

श्री मानसिंह महार (आमेर) : यदि आप हमारा कोऑपरेशन नहीं चाहते हैं तो नहीं देंगे, घबराते क्यों हैं ?

श्री सभापति (श्री नारायणसिंह) : मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि भाषण चालू हो तो सदन की परम्परा और प्रतिष्ठा के प्रतिकूल ऐसी स्थिति नहीं पैदा करनी चाहिये कि जिससे यह पाटण की पोल बन जाय।

रावत श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, ऐसी बात नहीं है। मैं निवेदन करूंगा कि जिस तरीके से बात कही जाती है, विरोधी दल के नेता ने जिस तरीके से बात कही थी उसके बदले में लपेट कर बात कही जाती है तो गलत है। एक तरफ कोऑपरेशन का हाथ बढ़ाते हैं, उसमें इस तरह की बात कही जाय कि चार कमरे बन गये हैं, एक नहीं बना है, हमने तो.... ....

श्री सभापति : मैं इतना ही निवेदन करूंगा कि यदि कोई शंका की बात है तो कल फिर भी समय है।

श्री मानसिंह महार : हमारे तो चार आदमियों को ही समय दिया है।

श्री मथुरादास माथुर : सुझाव के लिए धन्यवाद माननीय सदस्य को। श्रीमान्, मैं निवेदन कर देना चाहता हूँ कि आपके सहयोग

(श्री मथुरादास माथुर)

का हाथ नहीं, आपके सहयोग की एक अंगुली भी आगे आयेगी तो इस ओर से हाथ बढ़ाया जायेगा। मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूँ....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : यह अंगुली खतरनाक है।

श्री मथुरादास माथुर : उसको हम थाम लेंगे। आप घबरायें नहीं।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : वह आपके हाथ को खींच लेगी।

श्री मथुरादास माथुर : मैं निवेदन करना चाहता हूं कि विरोधी दल के नेता ने यह भी सदन के सामने पेश किया : "Power corrupts and absolute power corrupts absolutely."

बहुत पुराना यह नारा है और यह नारा मेरा ख्याल है कि किसी भी प्रजातन्त्रीय देश के अन्दर कोई दल, जिसके पास मेजोरिटी होगी, वह दल सत्ता में जरूर आयेगा : हम सत्ता में हैं तो इसके लिए विरोधी दल की महरबानी से क्या सत्ता में नहीं हैं ? हम सत्ता में हैं। विरोधी दल की हरचन्द कोशिश करने पर भी आज कांग्रेस मेजोरिटी में है। चालीस परसेंट वोट हमें मिले, इसको अगर यह सोचते हैं कि चालीस परसेंट वोट कांग्रेस को मिले और स्वतंत्र पार्टी के नेता यह सोचते हैं कि उनको वोट ज्यादा मिले तो उसके लिए आंकड़े देख लें। विरोधी दल में भी कई दल हैं। विरोधी दल में स्वतन्त्र पार्टी है, विरोधी दल में जनसंघ है, कॉम्युनिस्ट्स हैं, सोश्यलिस्ट्स हैं, इन्डिपेन्डेन्ट्स हैं। इनके अलग अलग पर्सेंटेज देख लीजिए और आप चाहें तो मैं सदन की मेज पर अपने महकमे की तरफ से आंकड़े रख सकता हूँ। राजस्थान में चालीस पर्सेंट कांग्रेस विचारधारा को ठीक समझते हैं। चालीस परसेंट के मुकाबले में स्वतंत्र पार्टी की विचारधारा को सत्रह पर्सेंट ठीक समझते हैं और फिर स्वतंत्र पार्टी के अन्दर इस तरह के आदमी बैठे हुए हैं जो कांग्रेस विचारधारा के हैं, यह महसूस करना चाहिये। इसलिए देश ने कांग्रेस की विचारधारा को ठीक नहीं समझा है, यह मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं यह मानने के लिए तैयार हूं कि राजस्थान के लोगों ने, जो राजस्थान सरकार ने पहली पंचवर्षीय योजना और दूसरी पंचवर्षीय योजना के द्वारा जनता के लिए कार्यक्रम के अनुसार कार्य किए हैं, जिसे ठीक माना है। मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि जनता ने उन कार्यक्रमों को ठीक नहीं माना है। मैं यह मानने के लिए तैयार हूं कि हममें से कुछ साथी नाराज होकर, जो कांग्रेसी विचारधारा लिए हुए थे वे आज उधर बैठे हुए हैं। यह घर का झगड़ा हो सकता है, इसमें आपको खुशी मनाने की जरूरत नहीं है।

श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ़) : जी, बहुत से कुछ ऐसे हैं कि जो पहले चुनाव में इधर थे अब उधर हो गए हैं।

श्री मथुरादास माथुर : मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि विरोधी दल के नेता ने सदन के सामने जो सहयोग देने की भावना दोहराई तो उसके लिए तो मैं उनको मुबारक-

(श्री मथुरादास माथुर)

वाद देता हूँ और मैं अपनी तरफ से कहना चाहता हूँ कि विरोधी पार्टी की तरफ से हमें सहयोग दिया जायेगा तो हम भी सहयोग देंगे; लेकिन हम अपनी नीति पर कायम रहेंगे। मैं स्वामीजी से भी निवेदन कर देना चाहता हूं, चेयरमैन महोदय, वे इस बात का खतरा नहीं रखें कि हमारे अपने विचार हैं या हमारे अपने नियम हैं या कार्यक्रम हैं वे या हमारी कांग्रेस पार्टी को राजा-महाराजाओं के गिरवी रख दिया हो। मैंने उनके भाषण को, विचारों को और उनको अभिभाषण कहूँ तो गलत नहीं होगा, जो सदन के सामने रखे वे कीमत रखते हैं। वे बहुत बड़े क्रांतिकारी रहे हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि आज आपके विचारों से आप कांग्रेस की बैंच पर नहीं हो, फिर भी जहां आप हैं, जो देश की सेवा करने के लिए आपको अहसास है तो हम भी कुछ करना चाहते हैं। मैं वह तसल्ली देना चाहता हूँ। मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूँ सदन के सभी सदस्यों को कि हमने अपने कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस का जो घोषणा—पत्र है उसको पूरा करने की कोशिश की है। मैं जानता हूँ कि चुनाव के अन्दर वोट कार्यक्रम पर नहीं पड़ते हैं, विचारधारा पर नहीं पड़ते हैं, कई तरीकों पर पड़ जाते हैं और यह शिशु प्रजातंत्र का गुनाह है लेकिन हल्के हल्के जैसे प्रजातंत्र बढ़ता जायगा ये चीजें निकल जायंगी और चुनावों में मतदाता सभी मुद्दों पर, विचारधारा पर वोट देंगे और जनतंत्र को, प्रजातंत्र को सुदृढ़ करेंगे। हमारी पार्टी के नेता, मुख्य मन्त्री बाकी मुद्दों पर कहेंगे उन चीजों की ओर मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ; जो सदन में कही गई हैं और जिनका मेरे महकमों से सम्बन्ध है।

मैं निवेदन करूंगा कि मैं यह मानने के लिये तयार नहीं, मैं अदब से नम्र निवेदन करना चाहता हूँ, सदन के सभी साथियों को निवेदन करना चाहता हूँ, श्रीमान्, कि हमारे यहां के कानून और व्यवस्था और लॉ एण्ड ऑर्डर की जो पोज़ीशन है, सिचुएशन है उसके बारे में कहा जा सकता है। कुछ मित्रों ने कहने की कोशिश की है कि बहुत ढीली है, मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं यह कहना चाहता हूँ, हमारेय हां इतना बड़ा पुलिस विभाग कार्य करता है और यहां पर हजारों की तादाद में अफसरान और मातहत हैं जो इस विभाग का संचालन करते हैं; मगर जब हमारे राजस्थान का निर्माण हुआ उस समय मैंने और खास तौर से जो सदस्य १९५२ में सदस्य थे और १९५७ तक सदस्य रहे और उसके बाद १९५७ से १९६२ तक सदस्य रहे, उन्होंने देखा है कि १९५२ से १९६२ तक जो लॉ एण्ड ऑर्डर की सिचुएशन राजस्थान में थी उसमें कितनी तरक्की हुई है। मैं वे आंकड़े पेश नहीं करना चाहता हूं। उनको आप अनुभव करते हैं। मुझे मालूम है कि १९५२ में जब मिले थे तब राजस्थान में डकैतियों का बोलबाला था। उस समय पैसे के लिए डाके नहीं पड़ते थे, १९५२ में वोट के लिए डकैतियां हुई थीं; इसको हम नहीं भूल सकते। १९५२ से लेकर १९६२ तक डकैतियों का जोर था, उससे बड़ी परेशानी थी लेकिन दस साल के अन्दर डकैतों को साफ कर दिया गया। उसके लिए हमारी पुलिस को काफी कुर्बानी करनी पड़ी है। हमारे पुलिस विभाग के कई बड़े अफसर सुपरिंटेंडेंट से लेकर कॉन्सटेबल

(श्री मथुरादास माथुर)

तक मारे गए। मैं उनको श्रद्धांजलि देता हूं और साथ ही साथ आप लोग हैं उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि पुलिस विभाग में कितनी ही त्रुटियां हैं क्योंकि बहुत बड़ा विभाग है, लेकिन राजस्थान की पुलिस ने कोशिश की है कि दस वर्ष के अन्दर राजस्थान में कानून और व्यवस्था हो। मैं राजस्थान की बात नहीं कहता, मुझे १९५२–६२ का मुकाबला करके संतोष नहीं होता। मैं कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान के जो मुख्तलिफ प्रान्त हैं उनके अन्दर जो लॉ एण्ड आर्डर की पोज़ीशन है उसका....

श्री मोहनलाल सारस्वत : जो पोज़ीशन दस साल से चली आ रही है वैसी ही जब नये होम मिनिस्टर साहब आ गए हैं, पोज़ीशन रहेगी ?

श्री मथुरादास माथुर : आप तसल्ली रखिये, आपको शांति होगी।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : परम शांति तो नहीं हो जायगी ?

श्री मोहनलाल सारस्वत : ऐसी पोज़ीशन नहीं चाहते हैं। बहुत सुन्दर व्यवस्था हो होम की।

श्री मथुरादास माथुर : मैं इस सुझाव के लिए आभारी हूं। मैं प्रयत्न करूंगा और आपका सहयोग और कानून–व्यवस्था रहे, इसकी पूरी कोशिश की जायगी। मैं निवेदन कर रहा था सदन के सामने, मैं नहीं कहता हमारे यहां सेन्ट परसेन्ट लॉ एण्ड ऑर्डर हुआ है। पोज़ीशन को काबू कर लिया है, राजस्थान में जुर्म नहीं होता है, यह नहीं कहता। मैं नहीं कहता कि राजस्थान में लॉ एण्ड ऑर्डर की सिचुएशन ने तरक्की की है। आगे बढ़ने की बात की है, मैं यह नहीं कहता। मैं कहना चाहता हूं कि स्थिति बिगड़ी नहीं है; दिन ब दिन बिगड़ी नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि शांति और व्यवस्था के दस वर्ष के आंकड़े देख लीजिये, मैं उनको सदन की मेज पर रखना चाहता हूं, रख दूंगा। आप उसमें डेकोइटी, बर्गलरी, थैफ्ट आदि के आंकड़े देख लीजिये....

श्री मोहनलाल सारस्वत : बीकानेर डिवीज़न के आंकड़े मैं रख सकता हूं, अगर होम मिनिस्टर चाहें तो।

श्री मथुरादास माथुर : मैं समझता हूं आपके आंकड़े आपके अनुभव पर होंगे, लेकिन मेरे पास जो जिलों से आंकड़े आते हैं उनको कम्पाइल किया गया है, उनको मैं रखता हूं और मैं अनुभव करता हूं, चेयरमैन साहब, कि कई बातें कहने की हैं लेकिन मैं तो अपनी बात कह रहा हूं और मैं कहता हूं, मैं आपको सच्चाई के साथ कह रहा हूं, जो आंकड़े वेरीफाइड हो गये हैं, जो सदन में दोहराये जा चुके हैं। १९५२ से १९६२ के अन्दर बराबर लॉ एण्ड ऑर्डर में प्रगति हुई है और प्रगति होने की गुंजाइश है और होती रहेगी। आप लोगों का सहयोग है तो सरकार भी कटिबद्ध है लॉ एण्ड ऑर्डर पर कब्जा करने को।

जयपुर से लौटने वाले महानुभाव हैं, उन्होंने जयपुर के बारे में कुछ बातें कहीं।

(श्री मथुरादास माथुर)

उन्होंने कहा कि जयपुर में बहिन–बेटी बाहर नहीं निकल सकती। जब बोलने के लिए खड़े होते हैं तो कुछ एग्ज़ेज़रेशन आ ही जाता है। मैं कहना चाहता हूं, इसके लिए इन्तजाम किया गया है और मैं यह बता दूं हमारे मित्रों को कि तीन–चार दिन से रामनिवास बाग, गर्ल्स कॉलेजेज़ और अस्पताल की सड़क पर और जो जो पोइन्ट्स हैं जहां पर आदमियों और औरतों का गुजरना होता है वहां पूरा इन्तजाम किया गया है कि कोई हरकत नहीं हो, जिससे परेशानी न हो और इज्जत न जाय।

साथ ही मैं अर्ज करूंगा कि लॉ एण्ड ऑर्डर के इन्तजाम की होम मिनिस्टर पर ही जवाबदारी नहीं है, पुलिस पर ही नहीं है, शहर के नागरिकों पर भी है। जयपुर के चुने हुए साथी हैं, नया नया जोश हैं वे सहयोग देंगे और नाम बतायेंगे कि फलां ने लॉ एण्ड ऑर्डर बिगाड़ा है तो दोषी को सजा दी जायेगी। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि कुछ बातें और कही गईं। मैं आपसे निवेदन यह कर दूं कि राजस्थान की अजीब हालत है। इधर आठ सौ मील का बोर्डर है, इधर चम्बल की रेविन्स हैं, इधर बहुत बड़ा रेगिस्तान है, अरावली का पहाड़ है उसकी परिस्थिति ऐसी है कि कई बोर्डर इन्सीडेन्ट्स होते हैं। बोर्डर पर डाकू–डकैती करके पाकिस्तान की सरहद में घुस जाते हैं और हमारी पुलिस उनका पीछा करते समय कहीं रह जाती है। मध्य प्रदेश में अभी भी डाकुओं की स्थिति सुधरी नहीं है।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : Excuse me, on a point of information, Sir, क्या माननीय मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जैसा उन्होंने अभी बताया कि राजस्थान से डाकू बोर्डर से भाग कर पाकिस्तान को चले जाते हैं इस सम्बन्ध में क्या आपने भारत सरकार को कभी पाकिस्तान सरकार को लिखने के लिये लिखा है कि डाकू लोग बोर्डर पर से भाग कर पाकिस्तान में शरण लेते हैं? क्या इस प्रकार की घटना राजस्थान में हुई है?

श्री मथुरादास माथुर : मैं इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान ने इतना ही नहीं किया कि भारत सरकार को लिखा, बल्कि इस बात को हमारे अधिकारियों की कॉन्फरेंस में बहुत दफा दोहराया है।

श्री भैरोंसिंह : Is it for smuggling or dacoities?

श्री मथुरादास माथुर : बोर्डर इन्सिडेन्ट्स होते हैं उनको रोकने के लिये कोशिश की गई है और आज भी कोशिश करते हैं।

श्रीमन्, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि विरोधी दल के नेता ने एक बात अर्ज की, सदन के सामने कही कि हमारे यहां जहां तक एन्टीकरप्शन डिपार्टमेंट का सम्बन्ध है, विभाग तो अच्छी तरह से काम करता है, ठीक तरह से काम करता है; लेकिन जब फाइलें मिनिस्टरों के पास चली जाती हैं तो वहां से वापिस आने में बहुत काफी समय लग जाता है। मैंने उनके भाषण के बाद में जांच करने की कोशिश की और इन्क्वायरी के बाद में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इसके लिये

(श्री मथुरादास माथुर)

सबसे बड़ा बोर्ड बना हुआ है । एन्टीकरप्शन बोर्ड के पास लिस्ट जाती है। डिपार्टमेंटल इन्क्वायरी के लिये मिनिस्टर के पास जाते हैं। मैं यह कहूँगा कि दो-चार फाइलों के, हो सकता है, छोड़ कर कोई ऐसी फाइल नहीं है कि मिनिस्टर ने उसको रोक लिया हो।

श्री मोहनलाल सारस्वत : फाइलों के आंकड़े बताये जावें ?

श्री मथुरादास माथुर : मैं समझता हूं कि इस बात से नेता और उप-नेता और उनके सभी साथियों को संतोष होगा कि इस तरह की बात जो उन्होंने अनुभव की है वह ठीक नहीं है।

हमारे यहां बीकानेर से आने वाले साथी ने कुछ बातें रखीं। उन्होंने शंकरलाल मोदी का केस हमारे सामने रखा। वे वहां के एक नागरिक हैं। उनके खिलाफ मन्दिर की गुमटियों के बारे में मुकदमा दर्ज हुआ। उनको पुलिस में बुलवाया गया और उनका रिमान्ड मजिस्ट्रेट से लिया गया। वे पुलिस कस्टडी में थे। उनको पहले हार्ट एटेक हो गया था। उनका लड़का उनके साथ जेल में था। वह हार्ट एटेक सब्साइड हो गया। उनको शाम को पसीना होने लगा और उनको हॉस्पिटल भेज दिया गया। वे रास्ते में ही गुजर गये। फिर जब हॉस्पिटल में पहुँचे और उनको उतार कर रखा गया तो डॉक्टर ने उनका मुआयना किया। उस वक्त तक उनकी डेथ हो चुकी थी। इसकी इत्तिला मजिस्ट्रेट को दी गई और मजिस्ट्रेट ने इन्क्वायरी करके फैसला किया कि यह केस हार्ट फैल्योर का है। उसके बाद मजिस्ट्रेट से रिपोर्ट आई और जब मजिस्ट्रेट से रिपोर्ट आई है तो फिर संदेह की कोई जरूरत नहीं रहती।

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : मैं भी कोलायत तहसील से आया हूँ। आपने फरमाया कि शंकरलाल को पुलिस कस्टडी में लिया गया। क्या उनको एक चाभी को स्नेच करने के बारे में ३६२, डेकोइटी के केस में फंसाया गया और उनके खिलाफ ३६२ का केस बनाया ? क्या इस तरह से ३६२ का केस बन सकता है, यह तो आप भी जानते हैं। इस तरह से गलत मुकदमा बनाया जाता है।

(विराम)

आपको मालूम था कि ३६२ में शंकरलाल की डेथ हुई ?....

श्री सभापति : मैं माननीय सदस्यों से इतना सहयोग चाहूंगा कि इसको डिस्कशन में नहीं लावें। माननीय गृह मंत्री को इसके बारे में कहने दें।

श्री मथुरादास माथुर : मजिस्ट्रेट की इन्क्वायरी के बाद भी अगर सदन के किसी साथी को संतोष न हो तो इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं। डॉक्टर की रिक्वेस्ट पर जुडिशियल इन्क्वायरी की गई। मैं समझता हूं कि इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

श्री मानिकचन्द सुराणा : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फॉर्मेशन, सर, पुलिस को उनको पकड़ना ही गलत था।

(श्री मथुरादास माथुर)

(दो-तीन माननीय सदस्य एक साथ बोलने के लिये खड़े हुए)

श्री सभापति : One at a time please ! जब एक माननीय सदस्य बोल रहे हैं तो दूसरे माननीय सदस्य को बैठ जाना चाहिये।

श्री मानिकचन्द सुराणा : उनके प्रथम बार जब हार्ट एटेक हुआ तब उनको हॉस्पिटल भेजा या नहीं ?

श्री मथुरादास माथुर : जब पसीना आया, आप संतोष रखिये, उनको हॉस्पिटल में दवाई दी गई। उनका लड़का उनके पास था। रात को फिर हार्ट एटेक का दौरा हुआ....

(एक माननीय सदस्य के बोलने के लिये खड़े होने पर)

श्री सभापति : आपको जो भी कहना हो जब माननीय मंत्री अपना भाषण समाप्त कर लें और आपका अवसर आवे तब कह दें।

श्री मथुरादास माथुर : सुजानगढ़ के पोस्ट मास्टर का कत्ल हुआ। इसके लिये इन्वेस्टीगेशन किया। मुल्जिम नहीं मिल पाया, उसकी तलाश जारी है। यह मामला सी. आई. डी. को दे दिया गया है। हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। मुल्जिम का ज्योंही पता चलेगा इन्फोरमेशन रख देंगे।

इसके बाद जिस ठेलेवाले की घटना की बात कही गई उसकी मैंने जांच कराई है। मगर मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जांच होने के बाद भी वहां से उस अधिकारी का तबादला कर दिया गया है और जांच चालू है। सुमेर के थानेदार के बारे में कहा गया, उसके बारे में भी जांच चल रही है।

श्री मोहनलाल सारस्वत : उसकी जांच ड्रॉप कर दी गई है।

श्री मथुरादास माथुर : मैं यह निवेदन करूंगा कि जांच चल रही है। जब तक पता नहीं चलेगा जांच चालू रहेगी।

श्री मोहनलाल सारस्वत : बीकानेर डिवीज़न में २० केसेज़ हो चुके हैं।

श्री मथुरादास माथुर : मेरा ख्याल है कि आप हमारे और कांग्रेस के पुराने साथी हैं।

वे मेरे से आकर चेम्बर में मिल लें और बता दें। अगर आपको पता हो कि कौन कौन हैं तो मैं उनको गिरफ्तार करा दूंगा।

श्रीमान्, मैं यह निवेदन कर रहा था कि लॉ एण्ड ऑर्डर के बारे में आपके सहयोग से, पुलिस विभाग के कर्मचारियों के सहयोग से इस आशा और विश्वास को लेकर चलें और आपका सहयोग बराबर मिलता रहेगा तो हम जो कुछ कर पाये हैं उससे ज्यादा कर पावेंगे।

(श्री अभयसिंह के बोलने के लिये खड़े हुए)

श्री अभयसिंहजी : साहब जो

(श्री मथुरादास माथुर)

कहना चाहते हैं उनका आशय मैं समझ गया। गंगानगर के लिये, मैं समझता हूं कि उनका सहयोग मिला तो बहुत खुशी होगी।

अब मेरे पास में दूसरे विभाग हैं; जैसे डाइरेक्टर पब्लिक रिलेशन्स; उसके बारे में बहुत कुछ कहा गया है और बहुत कुछ इसके बारे में कहने की तत्परता रखते हैं, परन्तु मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जयपुर से आने वाले हमारे माननीय सदस्य ने जो पहले श्रीमाधोपुर से आने वाले थे गत सालों में बहुत सी बातें सदन के सामने रखीं। दिसम्बर, जनवरी के महीने चुनावों के महीने थे और उन्होंने इस बात का प्रयत्न किया कि राज्य सरकार की ओर से बहुत से एडवर्टाइज़मेंट्स दिये गये और इसलिये कि चुनावों में उनका प्रचार हो। उन्होंने सुबूत भी सदन के सामने पेश किये। ठीक है जो कुछ हुआ है कहीं नहीं जाने का। अखबारों में उन्होंने एडवर्टाइज़मेंट देने की बात कही वह ठीक है। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि दिसम्बर से फरवरी १९६२ के महीनों में जो कुछ पब्लिसिटी में खर्च किया उसको देखने के लिये मैंने पिछले तीन वर्षों पहले इन महीनों में कितना खर्चा हुआ उसको जानने की कोशिश की। १९५९-६०, १९६०-६१ में क्या खर्चा किया गया? यह दिसम्बर से फरवरी का खर्चा था जो चुनावों की वजह से बताया गया कि ज्यादा खर्च किया गया। मैंने पिछले सालों के खर्चे को देखा कि इन तीन महीनों का क्या खर्चा होता था....

श्री मोहनलाल सारस्वत : अभी बहुत से बिल आपके सामने नहीं आये हैं।

(४.३० म. प.)

श्री मथुरादास माथुर : मैं आपसे यह निवेदन करूं कि मैं बिलों के आंकड़े नहीं रख रहा हूँ, जो ऑर्डर दिये उनके आंकड़े रख रहा हूं। १९५९-६० में ६२ पेपर्स को एडवर्टाइज़मेन्ट दिया गया और वह कुल ५९,२०७ रुपये का एडवर्टाइजमेंट दिया गया।

श्री मानिकचन्द सुराणा : महीना बताइये।

श्री मथुरादास माथुर : दिसम्बर, जनवरी व फरवरी, ५९-६०। यह मैंने पहले ही निवेदन कर दिया कि इन तीन महीनों के पिछले आंकड़े मैं सदन के सामने रख रहा हूँ। ५९-६० में जिस समय ये एडवरटाइज़मेंट्स दिये उस समय पंचायतों के चुनाव नहीं थे। ६०-६१ में ४७,४२२ रुपयों के एडवर्टाइज़मेंट्स दिये।

एक माननीय सदस्य : पंचायतों में वोट लेने होंगे, इसलिये दिये उस समय।

श्री मथुरादास माथुर : ६१-६२ में हमारे यहां से ६०,६७४ रुपये के एडवरटाइज़मेंट्स दिये गये। श्रीमान्, मैं यह निवेदन कर रहा था कि इन तीन वर्षों के इन तीन महीनों के आंकड़े मुलाहिजा फरमायें। मैंने इन तीन वर्षों के इन तीन महीनों के आंकड़े रखने की कोशिश की है। अब मैं यह बताऊंगा कि इन तीन वर्षों में कितने कितने अखबारों को एडवर्टाइज़मेंट दिया गया। ५९–६० में ६२ अखबारों को एडवार्टाइज़मेंट दिया गया, ६०-६१ में ५८ अखबारों को दिया गया और ६१-६२ में ६६ अखबारों को एडवर्टाइज़मेंट दिया

Page No 98

(श्री मथुरादास माथुर)

गया । ये आंकड़े आपके सामने रख देता हूँ और निर्णय आप पर ही छोड़ देता हूँ ।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : क्या मंत्री महोदय यह बताने कि कृपा करेंगे....

श्री मथुरादास माथुर : Just wait; you will have time.

एडवर्टाइज़मेंट राजस्थान सरकार केवल उन्ही पत्रों को नहीं देती जो कि राजस्थान सरकार की स्तुति करते हैं, बल्कि राजस्थान सरकार को श्राप देते हैं उन अखबारों को भी राजस्थान सरकार एडवर्टाइज़मेंट देती है; इसका मैं एक नमूना पेश करता हूँ । लोकवाणी यहां का बड़ा इम्पोंटेन्ट अखबार है, उसमें यह खबर छपी है ११-२-६२ को बोर्डर लाइन्स में "उदयपुर में भैंसे और गायों को काटने की मशीन लगाई गई", यह न्यूज़ लोकवाणी में छपी है........

श्री जोधसिंह (गिरवां) : यह तो हीरा-लाल शास्त्री का अखबार है क्या ?

श्री मथुरादास माथुर : यह तो मैं नहीं कह सकता पर इसको आज-कल प्रेरणा कहां से मिलती है, यह सब जानते हैं ।

श्री मानसिंह महार : यह तो कांग्रेस का ही अखबार है ।

श्री मथुरादास माथुर : यह कांग्रेस का अखबार है और इसकी पॉलिसी आजकल कहां से डिसाइड होती है, यह आप जानते हैं ।

तो मैं निवेदन कर रहा था कि जोनल लाइन्स में यह खबर इस अखबार में छपी है कि उदयपुर में भैंसें और गायें काटने की मशीन लगाई गई और उसके बीच में सरकार का यह एडवर्टाइज़मेंट छपा हुआ है ।

श्री मानसिंह महार : हीरालालजी का डर लगता है तभी देते हो । क्या दिखाओगे ?

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : ये राष्ट्रदूत की फाइलें दिखाते हैं, आप लोक-वाणी की फाइलें दिखाते हो ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : ये आपस की घरेलू लड़ाई में क्यों सदन का टाइम लेते हैं ?

श्री मानसिंह महार : बस रहने दीजिये, क्या सफाई देते हैं; सभी जानते हैं ।

श्री मथुरादास माथुर : मैंने तो इस-लिये सदन के सामने ये सब चीजें रखने की कोशिश की कि यह कहा गया कि अपने ही अखबारों को एडवर्टाइज़मेंट देते हैं, इसलिये इस अखबार का नमूना पेश किया ।

श्री भैरोंसिंह : विशाल राजस्थान और न्यूज़ क्रोनिकल में इस इयर में कितने एडवर्टाइज़मेंट दिये ? इन दोनों पत्रों को कितना कितना दिया; इसका कम्पेरेटिव स्टेटमेंट बता दीजिये और यह भी बता दें कि ये निकलते कहां से हैं ?

श्री मथुरादास माथुर : विशाल राज-स्थान में बता दूं, इसमें छिपाने की बात नहीं । विशाल राजस्थान को इन तीन महीनों में ६,३ ६२ रुपयों के एडवर्टाइज़मेंटस दिये ।

श्री भैरोसिंह : कम्पेरेटिव स्टेटमेंट पिछले तीन सालों का बता दें।

श्री मथुरादास माथुर : पीछले तीन सालों का मेरे पास नहीं है....

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : डेली में किसको दिये, आप तो फिगर्स बता दीजिये।

श्री मथुरादास माथुर : मैं तो कन्वलूज़न नहीं निकाल रहा हूं, आंकड़े दे रहा हूं। डेली को और तरह से दिये जाते हैं।

श्री मानसिंह : सदन को धोखे में मत रखिये।

श्री मथुरादास माथुर : बिलकुल नहीं। मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि यहां और भी डेली अखबार हैं, उनको भी एडवर्टाइज़मेंट दिये हैं जो हमारे सामने हैं।

श्री मानसिंह महार : पढ़कर सुना दें।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : ६ हजार या ६ हजार से ऊपर मिले हैं उनका बता दें।

श्री मथुरादास माथुर : ६ हजार से ऊपर नहीं हैं।

आपने जो बातें कहीं, जो बातें मेरे पास हैं, बजट पर भाषण होगा उस समय पूरा स्टेटमेंट हाउस की टेबल पर रखने को तैयार हूं। एक बात कही गई थी कि दिसम्बर, जनवरी और फरवरी में चुनावों के कारण अखबारों को एडवर्टाइज़मेंट ज्यादा दिये और जो कांग्रेस की तारीफ करते हैं उन अखबारों को ही देते हैं, इसके लिए मैंने ये फीगर्स रखे। मैं उन आंकड़ों को दिखाकर हाउस को संतोष दिलाने की कोशिश करता हूं, मैं तो फैसला आप पर छोड़ता हूं और यह आशा करता हूं कि आने वाले समय में मैंने और मेरी सरकार ने फैसला किया है कि इन सभी मुद्दों पर एडवाइज़ करने के लिये मैंने एक बोर्ड बनाने का फैसला किया है, जिसमें जरनलिस्ट्स और दूसरे सभी लोग होंगे जो वक्तन-फ वक्तन एडवर्टाइज़मेंट देने आदि, इस तरह के मामलों में एडवाइज़ करते रहेंगे।

श्री मानसिंह महार : माननीय मन्त्री महोदय बैठ गये। मालपुरा के बारे में क्या फरमा रहे हैं ?

श्री **मथुरादास माथुर** : मैं बैठा नहीं था। माननीय सदस्य खड़े हुए, इसलिये मैं बैठ गया। मैं अभी दूसरे विभागों के बारे में बातें कह दूं, फिर मैं मालपुरा के बारे में पूरे आंकड़े रखना चाहता हूं। और अगर माननीय सदस्यों को कुछ असंतोष हो, परेशानी हो और समता न हो तो पहले उनकी बात कह दूं........

श्री मानसिंह महार : धीरे २ कहिये, पूरी तसल्ली के साथ कहिये, लेकिन कहिये जरूर।

श्री भैरोंसिंह : यह बात तो कांकरोली से आने वाले माननीय सदस्य से पूछिये कि उनको आनन्द आयेगा या नहीं।

(शोरगुल)

श्री मथुरादास माथुर : मेरे पास इलेक्शन विभाग भी है। विरोधी दल के नेता ने मालपुरा के सिलसिले में एक बात कही थी और वह यह थी कि रिटर्निंग ऑफिसर ने डिपोज़िट दो घण्टे तक नहीं ली; उसके ऊपर भी उनका एक टेलीग्राम सरकार के पास आया था, उस पर फौरन कलेक्टर को हुक्म दिया कि वे इसकी जांच करें। उसकी कलेक्टर ने जांच की और यह रिपोर्ट दी है कि दूसरे लोग जमा करा रहे थे। ३५–४० मिनट जरूर लगे होंगे, अधिक नहीं लगे होंगे और दो घंटे तक इन्तजार करना पड़ा, जैसी कि विरोधी दल के नेता ने इन्फोर्मेशन दी है, मैं नहीं कहता कि उन्होंने गलत कहा है, मैं यह भी नहीं कहता कि उन्होंने गलत सूचना दी है, लेकिन उनके पास इत्तला आयी है वह दुरुस्त नहीं है........

राजा श्री मानसिंह (डीग) : Many othercandidates have made dep osits. Can you give us information how maney more candidate have made deposits ?

श्री मथुरादास माथुर : यह सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री मानसिंह महार : कलेक्टर ने जांच करके भेजा, तो किसकी मौजूदगी में जांच की या केवल बैठे २ ही आपको टेलीग्राम कर दिया। कलेक्टर के जांच की क्या इत्तिला है ? शिकायत की उसको पूछा नहीं, पता नहीं, कैसे जांच करली ? क्या यह किया कि बैठे २ लिख दी या मर्जी से रिपोर्ट लिखवा दी ?

श्री मथुरादास माथुर : मर्जी से रिपोर्ट लिखवा देना, यह हमारे इन्तजाम में नहीं होगा। पहले से रिपोर्ट आयी होगी।

श्री मानसिंह महार : मैं स्पेसिफिक जबाब पूछ रहा हूं; नहीं है आपके पास तो नट जाइये।

श्री मथुरादास माथुर : कलेक्टर ने जांच की और रिपोर्ट में कहा है कि ३५-४० मिनट लगे।

श्री मानसिंह महार : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फोर्मेशन, सर, गृह मन्त्रीजी ने कहा कि कलेक्टर ने जांच की, रिपोर्ट पेश की। शिकायत करने वाले को मालूम नहीं, शिकायत करने वाले से पूछा नहीं गया, उनको बुलाया नहीं गया। हम जानना चाहते हैं कि क्या जांच की ?

श्री मथुरादास माथुर : शिकायत इस बातकी की थी कि दो घंटे तक इन्तजार करना पड़ा या नहीं, कलेक्टर ने जांच के बाद कहा कि २ घंटे तक इन्तजार नहीं करना पड़ा, ३५-४० मिनट जरूर लगे, दूसरों की जमा हो रही थी।

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, मैं कलेक्टर की रिपोर्ट को चैलेन्ज करता हूँ, वह गलत रिपोर्ट है। क्या सरकार एक्शन लेगी और हमारी मौजूदगी में जाँच करायेगी ? इस प्रकार की झूंठी रिपोर्ट देते हैं। कह दिया कि जांच कर ली, क्या खाक जांच करली। कलेक्टर दामोदरजी का खुद का आदमी है, वह उनके पैर पकड़ता है, जब भी जाता है आज भी उनके पैर पकड़ता है। मैं उसकी रिपोर्ट की कोई कद्र नहीं करता। मैं चैलेन्ज

(श्री मानसिंह महार)

के साथ कहता हूँ। अगर नहीं मानते हैं तो एक हजार लोगों की गवाही पेश हो सकती है। जो रिपोर्ट कलेक्टर ने दी है तो वह गलत है और झूठी है और इस प्रकार की झूठी बातें गृहमन्त्रीजी को सदन में नहीं कहनी चाहिये।

श्री भैरोंसिंह : सभापति महोदय, मैं एक बात कहूंगा कि जांच करायी, जैसा कि माननीय गृह मन्त्रीजी ने अभी कहा। तो जिस आदमी ने कम्प्लेन्ट की उसको बुला कर पूछा भी गया या नहीं ? यदि इसकी जांच करें तो पता चलेगा।

श्री मथुरादास माथुर : मैंने कलेक्टर की रिपोर्ट को देखा है। डिटेल्ड इन्क्वायरी की तरह की गई है, यह विस्तृत सूचना मैं अभी नहीं दे सकता। मैं यह आश्वासन दिलाना चाहता हूँ कि इसकी बारीकी में मैं जाने की कोशिश करूंगा।

विरोधी दल के नेता ने यह भी कहा कि डूंगरपुर को रिज़र्व कॉन्स्टिट्युएन्सी बना दिया गया। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि १९५६ से ही यह रिज़र्व कॉन्स्टिट्युएन्सी है और ६२ के चुनावों के वक्त उसमें कोई चेन्जेज़ नहीं हुईं। सन् ५६ में ही रिज़र्व सीट बन गयी थी, शिड्यूल्ड ट्राइब्स की आबादी को देखते हुए........

श्री मानसिंह महार : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फोर्मेशन, सर, फैक्ट्स को तोड़-मरोड़ कर नहीं कहें। मैं इसको गलत परम्परा मानता हूँ। मैं उनको बताऊं कि विरोधी पक्ष के माननीय नेता महोदय ने यह कहा था कि डूंगरपुर को रिज़र्व सीट में दे दिया और आस-पास का जो भील एरिया था उसको नहीं दिया। यही है। तसल्ली के लिए रिपोर्ट मंगा कर देख लीजिये।

श्री मथुरादास माथुर : सन् १९५२ के चुनाव में यह डबल मेम्बर कॉन्स्टिट्युएन्सी थी। सन् १९५६ में सिंगल रिज़र्व्ड कॉन्स्टिट्युएन्सी हो गई। पहले से ही रिज़र्व्ड कोन्स्टिट्युएन्सी थी इसलिए रह गई। इलेक्शन कमिशन का यह हुक्म है, हमारा नहीं, हमने नहीं किया है; सूचना के लिए मैं यह कहना चाहता हूँ। हमने नहीं की है, न कराई है। आमेर से आये माननीय सदस्य को कहना चाहता हूँ कि मैं उनकी आदत को खूब जानता हूँ और दूसरे आदमी को कोई पोइंट कहना हो तो किस प्रकार से कहते हैं, वे बड़े पटु हैं........

श्री मानसिंह महार : मैं झूठ बोलना बर्दाश्त नहीं करता हूं। मैं स्वयम् सच बोलता हूं, और दूसरे झूठ बोलें तो मैं बर्दाश्त नहीं करता हूं।

श्री मथुरादास माथुर : खुद बोलते हो तो परेशानी नहीं, लेकिन दूसरा को वर्दाश्त नहीं कर सकते।

(शोरगुल)

श्री मानसिंह महार : मालपुरा में चार लाख की जमानतें ली गईं, उसके बारे में न भूलें, मैं फिर याद दिला देता हूँ।

श्री मथुरादास माथुर : लॉ डिपार्टमेंट भी मेरे पास है और उसकी बात भी कहूँ।

(श्री मथुरादास माथुर)

जयपुर से आये माननीय सदस्य ने कहा कि ज्युडिशियरी को और एक्ज़ीक्युटिव को सेपरेट किया जाय, दोनों के सेपरेशन की उन्होंने बात कही। मैं यह दोहराना चाहता हूँ कि सरकार की यह नीति है कि ज्युडिशियरी को और एक्ज़ीक्युटिव को सेपरेट कर दिया जाय। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि बापना कमेटी की रिपोर्ट सरकार के सामने पेश हो चुकी थी, उसके बड़े बड़े मुद्दे सरकार ने स्वीकार कर लिये हैं। जो कदम उठाया है वह यह है कि राजस्थान में ८८ मुन्सिफ कोर्ट्स हैं, उनमें से ४४ मुन्सिफ कोर्ट्स को मुन्सिफ मजिस्ट्रेटी में कन्वर्ट कर दिया है। मैं इस विषय में बजट के समय में अधिक रोशनी डाल सकूंगा कि कितने समय में राजस्थान में इन कोर्ट्स को भी, जो बाकी रही हैं मुन्सिफ मजिस्ट्रेटी में कन्वर्ट कर देगी और ज्युडिशियरी को एक्ज़ी-क्युटिव से सेपरेट कर देगी। जयपुर से आये माननीय सदस्य को तसल्ली हुई होगी।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : एक पोइन्ट मेरा रह गया है। अपने कुछ ज्युडिशियल ऑफिसर्स का रीएम्प्लोयमेंट किया है। उसके लिए आपकी नीति क्या है? क्या आप रिटायर्ड अफसरों को रीएम्प्लोयमेंट देना चाहते हैं? यदि हां, तो सर्विसेज़ के लिए टेम्प्टेशन का कारण बनाते हैं या नहीं?

श्री मथुरादास माथुर : न्याय पंचायतों की बात इसलिए कह दूँ कि राजस्थान के पंचों को ट्रेनिंग देने के लिए ट्रेनिंग सेन्टर बनाया गया है और सूचना के लिए यह भी कह दूँ कि १ हजार पंचों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

श्री मानसिंह महार : क्या न्याय पंचायतें आपका महकमा है?

(घंटी)

श्री सभापति : सदन का समय समाप्त हो रहा है। यदि सदन को आगे चलाना है तो समय बढ़ाया जाय।

श्री मानसिंह महार : गृह मन्त्रीजी से बहुत बातें पूछनी हैं, इसलिए समय बढ़ा दिया जाय।

श्री सभापति : क्या सदन की यह स्वीकृति है कि सदन का समय पांच मिनिट....

श्री मानसिंह महार : बहुत बातें पूछनी है, दस मिनिट के लिए बढ़ाया जाय।

श्री सभापति : पांच मिनिट के लिए सदन का समय बढ़ाया गया।

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : माननीय गृह मंत्रीजी ने बारबार दोहराया। दो वर्ष के पहले मैं भी उनके साथ था। जो स्वीट विशेज़ आज दिखा रहे हैं, मीठी निगाह से देख रहे हैं वे स्वीट विशेज़ टिकट देते समय नहीं थीं। कहीं उन बातों की ओर उनका दिमाग तो नहीं है। Need I presume that I will have the honour to participate in the debate tomorrow?

श्री मानसिंह महार : मैंने डिप्टी एस० पी० के बारे में और एस०डी० ओ माल-पुरा के बारे में और चार लाख की जमानतों के बारे में कहा था, भूल न जांय उनके बारे में।

श्री मथुरादास माथुर : माननीय सदस्य आतुर हैं तो मैं बैठने के लिए तैयार हूं।

श्री मानसिंह महार : पांच मिनटका समय लिया जा चुका है। चेयर की घोषणा हो चुकी है। क्या आप चैलेन्ज करना चाहते हैं?

श्री मथुरादास माथुर : माननीय श्री भैरोंसिंहजी ने जिस बारे में पूछा है उसके लिये मैं निवेदन करूं, हमारे यहां पर सात सेशन्स जजेज़ रिटायर हुए हैं। उन लोगों को राज्य सरकार ने रीएम्प्लोय किया है। राजस्थान सरकार ही ऐसी सरकार है कि इसने रिटायर्ड सेशन्स जजेज को रीएम्प्लोयमेन्ट किया हो यह बात नहीं, अन्य स्टेट्स में भी इस प्रकार के लोगों को रीएम्लॉयमैन्ट दिया जाता है। जिन लोगों की अच्छी रेपुटेशन होती है उनको रीएम्प्लॉय किया जाता है तो कोई बात नहीं। किसी को लॉ कोडिफाई करने के लिये रखा है, किसी को लॉ सम्बन्धी किसी कार्य के लिये नियुक्त किया है....

श्री भैरोंसिंह : लेकिन लॉकमीशन ने इसको बुरी तरह से क्रिटिसाइज़ किया है। आप अगर लॉ कमीशन की रिपोर्ट को मानते हैं तो यह ठीक नहीं है। अगर आप रीएम्पलॉय करते हैं तो उसके मायने यह हुए कि लॉ कमीशन की सिफारिशें नहीं मानते हैं।

श्री निरंजननाथ आचार्य (राजसमन्द) : इसका जिक्र पत्रिका में आ चुका है?

श्री भैरोंसिंह : इनको मालपुरा की बात कह दीजिये, जल्दी सन्तोष होगा।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह तो मजाक पुराना हो चुका है।

श्री मानसिंह महार : मालपुरा के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बारे में आपने कुछ नहीं कहा और दो चार लाख की जमानत ली गई वह तो बता दीजिये ईमानदारी से, टालमटोल मत करना।

श्री मथुरादास माथुर : सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्य से जिन्होंने लॉ कमीशन की पूरी रिपोर्ट का जिक्र किया है उनको बता दूं। अभी तक न तो लॉ कमीशन की पूरी रिकमन्डेशन्स को भारत सरकार ने ही मान्य किया है और न किसी राज्य सरकार ने। लॉ कमीशन की इस सिफारिश को कि जुडिशियरी से एक्ज़ीक्युटिव को सेपरेट किया जाय इसको मन्जूर करते हुए हमने अपना कमेटी की नियुक्ति की थी और लॉ कमीशन की रिपोर्ट राज्य सरकार के विचाराधीन है।

सभापति महोदय, आमेर से आने वाले साथी मालपुरा के बारे में सुनने को बड़े उत्सुक हैं। एक तरफ उनकी राय थी कि इस मालपुरा के चेप्टर को क्लोज़ कर दिया जाय....

श्री भैरोंसिंह : लेकिन इसे कांकरोली से आने वाले माननीय सदस्य ने खोल दिया है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : कोऑपरेशन देने के लिए बड़े आतुर हैं, इसके लिए बड़ा जोश है।

एक माननीय सदस्य : Co-operation means 'marriage of conveniences.

श्री मथुरादास माथुर : It is a marriage of diverse conveniences.

मालपुरा के बारे में बहुत सी बातें कही गई। अच्छा होता उस प्रश्न को अब नहीं उठाया जाता। मुझे बार बार कहा जा रहा है कि मैं इन बातों पर प्रकाश डालूं। आमेर से आनेवाले माननीय सदस्य अगर इस प्रश्न को नहीं उठाते तो ठीक रहता; लेकिन जब वे जोर डाल रहे हैं तो मुझे भी मजबूर होकर वहां के सही हालत को कहना पड़ेगा। इस दौरान मुझे खेद है कि ऐसी बातें भी कहनी पड़ें जो हमारे विरोधी दल के साथियों को अच्छी न लगें।

रावत श्री मानसिंह महार : हम सुनने के लिए तैयार हैं।

श्री मथुरादास माथुर : मालपुरा का मामला एक तरफा सदन में रखा गया है और उसके द्वारा सदन को यह बताने की कोशिश की गई कि सरकारी अफसरों ने मिल कर और पुलिस विभाग के कर्मचारियों ने और राजस्व विभाग के कर्मचारियों ने मिल कर कांग्रेस के केन्डीडेट को मदद दी और चुनावों में हस्तक्षेप किया। अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य को इसको दूसरी तस्वीर की ओर भी ध्यान देना चाहिये था। मालपुरा में चुनावों के दौरान में लॉ एण्ड ऑर्डर की सिचुएशन ऐसी बन गई थी कि मुख्य मंत्री महोदय की सभा में पत्थर और रोड़े फेंके गये। केवल मुख्य मंत्री पर ही नहीं; बल्कि जयपुर के अच्छे अच्छे वकील चुनावों के दौरान में वहां गये, उनकी मोटरों पर भी पत्थर फेंके गये। इतना ही नहीं, श्रीमान्, हमारे तिरंगे झंडे को स्वतन्त्र पार्टी के लोगों ने कांग्रेस के दफ्तर से उखाड़ कर जला दिया। इस तरह की हरकतें स्वतन्त्र पार्टी के लोगों ने वहां कीं। इसके अलावा ये लोग सशस्त्र होकर घूमते थे और उनको दिखाने के लिये बाहर के अमेरिकन कॉरेस्पोन्डेन्ट्स को भी इनके द्वारा निमन्त्रण दिया गया....

श्री हरिदेव जोशी (घाटोल) : Here you are ! Here you are !!

रावत श्री मानसिंह महार : वाहरे भान्डों ! वाहरे भान्डों !!

श्री मथुरादास माथुर : सभापति महोदय, राज्य सरकार के अधिकारियों ने इतना होते हुए भी शान्ति व्यवस्था को कायम रखा। मैं तो यहां तक कहूँगा कि चार लाख की जो स्वतंत्र पार्टी के लोगों से जमानत ली गई वहां की हालत को देखते हुए १० लाख की भी जमानत ली जाय तो थोड़ी है। मैं नहीं चाहता, यह पुराना चैप्टर हो गया है, इसे फिर से खोला जाय। आज उनके पुराने साथी नहीं, उनके बारे में उनकी अदम मौजूदगी में कहा गया, यह उचित नहीं। मैं इस चैप्टर में और ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। पुलिस के अन्दर बीस मुकदमे दर्ज हुए हैं। उन मुकदमों के बारे में कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि वे सबजुडिस हैं। उनका फैसला होने पर पता लग जायगा कि किस पार्टी के लोगों ने क्या-क्या हरकतें कीं। परेशानी तो आज इस बात की है कि इस प्रकार की हरकतें करने वाली पार्टी के लोग कहते हैं कि हमें पुलिस ने चुनाव में मदद दी।

श्री मानसिंह महार : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं आया। वहां जो पुलिस के अधिकारियों ने सख्तियां कीं उनके बारे में तो कुछ निवेदन कर दीजिये।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया (बनेड़ा) : ओन ए पोइन्ट ऑफ इन्फॉर्मेशन, सर, सभापति महोदय माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में यह कहा गया कि चुनावों के दौरान में कोई खतरनाक बात नहीं हुई और उसके विपरीत गृह मन्त्रीजी कह रहे हैं कि इतनी बड़ी–बड़ी बातें हुई हैं। आखिर कौन सही है, कौन सी चीज सही मानी जाय ?

श्री मथुरादास माथुर : सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय ने चुनावों का जिक्र करते हुए यह कहा है कि चुनावों के अन्दर सरकार की तरफ से इन्टरफियरन्स नहीं हुआ है।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : सभापति महोदय, गृह मन्त्रीजी मालपुरा की बातें कह रहे हैं। अगर वे मेरे रायला के अन्दर जिस प्रकार के हथकन्डे हुए वे सुनेंगे तो उसके सामने मालपुरा कुछ नहीं है।

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, माननीय गृह मंत्री इधर उधर फिरने की कोशिश कर रहे हैं। मैं स्पेसिफिकली यह जानना चाहता हूं कि आप एस० डी० ओ० को यू० पी० गवर्नमेन्ट को कब हैन्ड ओवर कर रहे हैं और डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस जिसको डाइरेक्ट रिक्रूट किया गया है उसके बारे में जवाब दीजिये ?

श्री मथुरादास माथुर : सभापति महोदय, आमेर से आने वाले माननीय सदस्य बहुत चर्चा करते हैं मालपुरा के एस० डी० ओ० के बारे में। एस० डी० ओ० के खिलाफ क्या कार्यवाही की जायगी, यू० पी० सरकार ने उनको मांगा है या नहीं, इस बारे में सदन के नेता, मुख्य मंत्री महोदय, जिनके पास राजस्व विभाग है वे प्रकाश डालेंगे। वे इसके लिए पूरी तरह से कॉम्पीटेन्ट हैं ....

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, माननीय गृह मंत्री ने पब्लिक रिलेशन्स विभाग के बारे में इतने लम्बे-चौड़े आंकड़े प्रस्तुत कर दिये। एक बात जो बहुत छोटी थी वह यह कि एस० डी० ओ० के खिलाफ यू० पी० गवर्नमेन्ट का वारन्ट है या नहीं, यह तो बता दीजिये।

श्री मथुरादास माथुर : एस० डी०-ओ० मुख्य मंत्री से संबन्ध रखता है, वे इसके बारे में कल बता देंगे।

श्री मानसिंह महार : तो आप डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बारे में ही बता दीजिये ?

श्री सभापति : अगर आप इस विषय में ज्यादा वाद-विवाद करना चाहते हैं तो अलग से प्रश्न पूछ सकते हैं।

श्री मानसिंह महार : मैं तो सिर्फ डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के बारे में जानना चाहता हूं ....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : माननीय चेयरमैन, वाद–विवाद का टर्न जिस प्रकार बनता जा रहा है वह उचित

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

नहीं है। इस समय कोई प्रश्नोत्तर का सवाल नहीं है। एक माननीय सदस्य जो बोलें, अपनी बात कहें उसके बीच बीच में दूसरी बातें पैदा करना, इससे जो बातें कहनी होती हैं वे भी पूरी तरह से नहीं कह पाते।

श्री मानसिंह महार : मैं तो स्पेसिफिक बात पूछ रहा हूं

श्री सभापति : आज का समय समाप्त हो गया। क्या सदन की अनुमति है कि फिर पांच मिनट और बढ़ाये जांय ?

(स्वीकृत)

पांच मिनट का समय बढ़ाया गया।

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, या तो इनको कल बोलने दिया जाय, नहीं तो वे मेरे प्रश्नों का जबाब दें।

श्री सभापति : सदन की मर्जी से पांच मिनट का समय और एक्सटेन्ड किया गया है, इसमें वे समाप्त कर देंगे।

श्री मथुरादास माथुर : सभापति महोदय, मैंने अपने भाषण के दौरान में मुख्तलिफ मुद्दों पर जो भी बातें कही गई उनका जवाब देने की कोशिश की है। अन्त में मैं सदन के माननीय सदस्यों से यह निवेदन करना चाहता हूँ : राज्यपाल महोदय के भाषण में जो भी मुद्दे उठाये गए हैं; जैसे कि विकास के बारे में इन दस वर्षों में राजस्थान में विकास की स्थिति सुदृढ़ हुई है और प्रगति की ओर राजस्थान ने कदम उठाये हैं और आने वाले पांच वर्षों में हम यदि चाहे इधर बैठने वाले माननीय सदस्य हों या उधर बैठने वाले माननीय सदस्य हों जो जनता से चुन कर आये हैं वे अपने आपको एक परिवार का अंग मान कर चलेंगे और विकास कार्यों में बराबर सहयोग देते रहें तो हम राजस्थान को सही मायने में समाजवाद की ओर अग्रसर होंगे और राजस्थान में ऐसी फिजां पैदा करेंगे जिससे हमारा जो समाजवाद का ध्येय है उसको आगे बढ़ा सकेंगे। विरोधी दल के कुछ साथी समाजवाद में विश्वास न भी करते हों, फिर भी मैं उनसे आशा करूंगा कि वे देश और प्रान्त की भलाई के लिए हमारे इस ध्येय की पूर्ति में सहयोग देंगे। इसके साथ ही साथ सदन के माननीय सदस्यों का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे ध्यानपूर्वक सुनने की कोशिश की। इन शब्दों के साथ मैं राज्यपाल महोदय को उनके अभिभाषण के लिए धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री मानसिंह महार : सभापति महोदय, यह मंत्रीजी ने मेरे प्रश्नों का जवाब नहीं दिया।

श्री सभापति : सभा की कार्यवाही कल दिनांक १८ मार्च के प्रातः १० बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म० पू० ५ बजकर १२ मिनट पर १८ मार्च, १९६२ के १० बजे तक के लिए स्थगित हुई।)

संक्षिप्त–विवरण

(शनिवार, १७ मार्च, १९६२)

	स्कम्भ
तारांकित प्रश्नों के शीर्षक	
नगरपालिका, गंगापुर द्वारा लगाया जाने वाला चुंगीकर।	२४१
लिफ्ट इर्रिगेशन स्कीम-राजस्थान नहर।	
नगरपालिका, गंगापुर द्वारा नल लगाने के लिए मांगा गया ऋण।	
स्थगित प्रश्न	
अभावग्रस्त क्षेत्र में राहत कार्य, बीकानेर।	
कार्य सलाहकार समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन एवं सदन द्वारा उस पर विचार	२४६

श्री मथुरादास माथुर ने कार्य सलाहकार समिति के प्रथम प्रतिवेदन का उपस्थापन किया। तत्पश्चात् उनके प्रस्ताव पर सदन द्वारा समिति के प्रतिवेदन पर सहमति भी प्रगट की गई।

	स्कम्भ
राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर वाद-विवाद	२४६

श्री नारायणसिंह मसूदा, सदस्य, विधान सभा, द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव पर आज भी वाद-विवाद जारी रहा जिसमें निम्नांकित सदस्यों ने भाग लिया :–

१. श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा
२. श्री मानसिंह महार
३. श्री कुमारानन्द
४. श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
५. श्री अमृतलाल यादव
६. श्री नत्थीसिंह
७. श्री विजयसिंह झाला
८. श्री दुर्गालाल बादूदार
९. श्री मोहनलाल सारस्वत
१०. श्रीमती नगेन्द्रबाला
११. श्री हरिश्चन्द्र
१२. श्री मथुरादास माथुर

सदन की बैठक ५ बज कर १० मिनट पर, रविवार दिनांक १८ मार्च, १९६२ को प्रात १० बजे तक के लिये स्थगित की गई।

रविवार दिनांक १८ मार्च, १९६२ की कार्य-सूची

(१) अनपूरक अनुदानों की मांगें, १९६१-६२ (द्वितीय खण्ड के विवरण का उपस्थापन)

(२) राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर अग्रेतर वाद-विवाद।

परिशिष्ट १

(कृपया स्थगित प्रश्न संख्या ३ का उत्तर देखिए)

सूची उन गांवों की जो सम्वत् २०१८ खरीफ की फसल में हानि होने के फलस्वरूप अभावग्रस्त घोषित किये गए हैं :

नाम तहसील	क्रम संख्या	नाम ग्राम
१	२	३
१ बीकानेर	१	सरूपदेसर
	२	नरसिंगसर
	३	महरासर
	४	जयमलसर
	५	लालमदेसर
	६	करनीसर-भाटियान
	७	रामसर
	८	जोधासर
	९	अमरपुरा
	१०	भागीपुरा
	११	करमवाला
	१२	बेरियावली
२ कोलायत	१	गुड़ा
	२	चक शालिया
	३	शरह थुमली
	४	चांदी
	५	किशनायत बुधान
	६	डेह
	७	चक चांदी

Page No 109

१	२	३
	८	अंगनेऊ
	९	कोड़मदेसर
	१०	इन्दाकावाला
	११	ग्रान्धी
	१२	शहर गगेरी
	१३	डेहरिया
	१४	भुसेबाला
	१५	भीरनवाला
	१६	करनीसर
	१७	बरसलपुर
	१८	चक खुड़ी
	१९	नोखा उर्फ दया
	२०	कोटड़ी
	२१	शरह किशनायत-खालसा
	२२	रेख रानासर
	२३	आराजी नाला
	२४	गोयलरी
	२५	आराजी जीतसिंह उर्फ खेत चान्डासर
	२६	भोम-हेमसिंह
	२७	भोम नाहर की
	२८	चारनांवाला
	२९	मानकासर
	३०	मोड़ायत
	३१	पंवारवाला
	३२	पूर्णवाला
	३३	रणजीतपुरा
	३४	मुलेरी

१	२	३
	३५	सेरूवाला
	३६	घगासर
	३७	गुलामवाला
	३८	विकेन्द्री
	३९	अखुसर
	४०	गोडू
	४१	फूलासर
	४२	देरासर
	४३	मज्जू
	४४	मिठड़िया
	४५	बागड़सर
	४६	बीठनोक
	४७	गोविन्दसर
	४८	कोलायत
	४९	चक मुलाजमान
३ लूणकरणसर	१	लक्ष्मीनारायणसर
	२	उछरंगदेसर
	३	जोगीयासर
	४	ढाणी टेलवा
	५	लखासर
	६	मनरा
	७	कुम्भासर
	८	साबनियां
	९	शेरपुरा
	१०	राबासर
	११	नकोदेसर

Page No 111

१	२	३
	१२	दुदेर
	१३	देवासर
	१४	आगोर
	१५	देख सुड़ान
	१६	काकड़ इच्छा
	१७	कालकल मुकलेरा
	१८	मोटासर
	१९	सीलेरिया
	२०	ढोइयां
	२१	नाथुसर
	२२	गारबदेसर
	२३	नाकरासर
	२४	कुम्भाना
	२५	नेकरसर
	२६	जैतपुरा
	२७	रामबाग
	२८	श्योदानपुरा
	२९	धांदसर
	३०	बीरमाना
	३१	मोटलाई
	३२	जैसा
	३३	लासोर-बड़ी
	३४	दुदेरिया
	३५	खारबाड़ा
	३६	करनासी
	३७	गोरीसर

१	२	३
	३८	हिन्दोर
	३९	मनेरिया
	४०	महाजन
	४१	गोपालान
	४२	मनाकसर
	४३	कुंडा
	४४	बामनवाली
	४५	सुलेरा
	४६	रानीसर
	४७	सोम मलकीसर
	४८	कागनीसर
	४९	छुटासर
	५०	मोजरासर
	५१	मोकमपुरा
	५२	खियाना
	५३	किंकरालिया
	५४	पचारा उर्फ अमरपुरा
	५५	पीपेरा
	५६	शेखसर
	५७	ढांणी पाडूंसर
	५८	करनीसर
	५९	बीरदान
	६०	दुलवासर
	६१	सुई
	६२	गुसाईंयान
	६३	सोदोलाई

१	२	३
	६४	बसूसर
	६५	चक बीड़ सगरेऊ
	६६	कपूरीसर
	६७	मलकीसर

बीकानेर जिले के उन गांवो के नामो की सूचि जो पिछले वर्ष और इस वर्ष अभावग्रस्त घोषित किये गये:—

नाम तहसील	क्रम संख्या	नाम गांव
१	२	३
१ बीकानेर	१	सरूपदेसर
	२	बरसिंगसर
	३	जयमलसर
	४	लालमदेसर
	५	करनीसरभाटियान
	६	रामसर
	७	अमरपुरा
	८	करमवाला
	९	वेरियावली
२ कोलायत	१	कोड़मदेसर
	२	मान्धी
	३	नौरवा उर्फ दया
	४	आराजी जीतसिंह उर्फ खेत चान्डासर
	५	मौड़ायत
	६	पंवारवाला
	७	पूर्णवाला
	८	रणजीतपुरा
	९	सेरूवाला
	१०	बीठनोक
	११	गोविन्दसर
३ लूणकरणसर	१	उछरंगदेसर
	२	कुमासर

१	२	३
	३	साबनिया
	४	शेरपुरा
	५	रायासर
	६	नकोदेसर
	७	दुदेर
	८	देवासर
	९	जागौर
	१०	काकड़इच्छा
	११	कलकमुकलेरा
	१२	मोटासर
	१३	नाथुसर
	१४	गारबदेसर
	१५	कुम्भाना
	१६	नेऊसर
	१७	जैतसर
	१८	चांदकसर
	१९	दुवेरिया
	२०	गौरीसर
	२१	हिन्दौर
	२२	महाजन
	२३	गौपालन
	२४	कुडा
	२५	भौम मलकीसर
	२६	किकरालिया
	२७	पी पेरा
	२८	शेखसर

१	२	३
	२६	ढाणी पांडूंसर
	३०	करनीसर
	३१	पीरदान
	३२	सीदौलाई
	३३	बसूसर
	३४	कपूरीसर
	३५	मलकीसर

शुद्धि-पत्र

(शनीवार, दिनांक १७ मार्च, १९६२)

स्तम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
१	२	३	४
४४५	२	वैठक	बैठक
,,	१४ के नीचे	——————	लिफ्ट इरगेशन स्कीम-राजस्थान नहर
४४६	८	कोलोनाइज़शन	कोलोनाइज़ेशन
,,	२०	नहों	नहीं,
,,	२१	श्री गोविन्दसहाय	११. श्री गोविन्दसहाय
४५०	६	न गरपालिका	नगरपालिका
,,	२४	वहा	वहां।
,,	२६	स्वीकाॅर	स्वीकार
४५१	१४	जगो	जगहों
,,	१८	श्री गेविन्दसहाय	श्री गोविन्दसहाय
,,	१८	दसरी	दूसरी
४५२	१९	स्कीग्स	स्कीम्स
४५४	५	वनकर	बन कर
,,	१५	जावेंग	जावेंगी,
,,	१६	पुगनी	पुरानी
४५६	२१	(अनेक मानसीय कई सदस्यों	(अनेक माननीय सदस्यों
,,	२५	गंमानगर	गंगानगर
,,	२६	है वहां	है, वहां
४५७	१३	वह है	वह रही है
४५९	९	श्री दौलतरम सारण :	श्री दौलतराम सारण :
,,	१५	श्री दौलतराम सार:ण:	श्री दौलतराम सारण :

१	२	३	४
४६०	१६	अभाव ग्रत	अभाव ग्रस्त
४६१	शीर्षक	–१७ मार्च, ३२–	–१७ मार्च, ६२–
,,	२४	महोदय	महोदया
४६४	७	मी	भी
४६६	१४	फो	को
४६७	१	(श्री ज्वालाप्रस द शर्मा)	(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)
,,	अंतिम से ३	हुए है	हुए हैं
४६८	१५	आपके सबके–विचार	आपके–सबके विचार
,,	अंतिम से ४	इन	इस
४६६	८	जो : कुछ भी	जो कुछ भी
४७६	अंतिम से २	नहों	नहीं
४७७	३	श्री नाथीसिंह	श्री नत्थीसिंह
४७८	२३	तुम्हारे	तुम्हारे
४८२	२६	रर्विसेज़	सर्विसेज़
,,	२८	फला	फलां
४८३	२५	श्री हरिदत्तसिंह (नोहर) :	श्री हरदत्तसिंह (नोहर) :
४८६	१	श्री ज्वालाप्रसाद शर्ला :	श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा :
,,	५	सके ।	सकें ।
४८८	७	अक्छे	अच्छे
४८८	१६	शध्दों	शब्दों
,,	२५	पब्लिक	पब्लिक
,,	अंतिम	उड़ाया	उड़ाया
४८६	३	श्री अध्यक्ष :	—
,,	६	पार्टी	पार्टी
,,	१०	त्रिधान सभा	विधान सभा

१	२	३	४
४६०	२२	मी	भी
४६२	शीर्षक	वाद-विवाद	वाद–विवाद
,,	१४	सैकड़ों	सैकड़ों
,,	२७	सविधान	संविधान
४६३	२५	दिमग।	दिमाग
५००	८	of the	of
,,	२४	श्र	श्र
५०३	१३	आपाइन्टमेन्ट्स	अपोइन्टमेन्ट्स
५०४	१०	भली पकार, जान	भली प्रकार जान
५०७	शीर्षक	–१७ मार्चं,	–१७ मार्च,
,,	२६	करंगे,	करेंगे,
५१०	१	थोढ़ा	थोड़ा
,,	२४	दीनिये। पर हम	दीजिये, पर हम
५११	अंतिम पंक्ति	सकता हूं। पर	सकता हूँ, पर
५१२	३	कगइये।	कराइये।
५१४	१५	ब्लैकमा र्केट	ब्लैकमार्केट
५१५	शीर्षक	अमिभाषण	अभिभाषण
५१७	२४	goto	go to
५१६	१६	दुनिय	दुनिया
५१६	२०	नहीं, होती।	नहीं होती।
५२५	शीर्षक	राज्यपाल महोदय। के	राज्यपाल महोदय के
५२६	२	कौनमास्टर था	कौन मास्टर था
५२७	२७	क्वालिटो	क्वालिटी
५३१	शीर्षक	–१७ खार्च, ६२–	–१७ मार्च, ६२–
,,	२२,२३,२४	कॉरेस्पोन्डेट्स	कॉरेस्पोन्डेन्टस

१	२	३	४
५३२	२२	दुर	दूर
५३४	१७	सेर ाजा	से राजा
५४०	११	थां।	थी।
,,	२३	मजदरों	मजदूरों
५४१	५	भिनठ	मिनट
,,	७	वारे	बारे
५४३	६	की	को
५४६	२६	भांपा	भाषा
५४७	२४	कौन करे।	कौन करे ?
५४८	शीर्षक	वाद–विवाद	वाद–विवाद
५५१	८	दृ्टि	दृष्टि
५५३	१	के	की
५५५	११	यह	वह
५५८	अंतिम	समाजवादी	समाजवादी
५६१	२८	आप को	आपको
,,	२६	मे	से
,,	अंतिम से २	राहे	चाहे
५६२	६	मन्त्रो महोदय	मन्त्री महोदय
५६५	१५	वड़ता	बढ़ता
५६६	१	टिनों	दिनों
,,	२	उ्घाटन	उद्घाटन
,,	१०	है। इसलिये	है, इसलिये
,,	२५	कंग्रेस	कांग्रेस
५७१	२७	नहीं	वहीं
५७७	३	विचाणीय	विचारणीय

१	२	३	४
५७८	अंतिम से २	महोदय	महोदय
५८१	१६	समझ ल	समझ लें
५८३	११	केन्द्रों	केन्द्रों
,,	२३	है	हैं
५८५	२५	नकावजनी	नकवजनी
५८७	२५	हुकूगत	हुकूमत
५९२	२४	दसरी	दूसरी
,,	अंतिम से २	म्हां लोगों ने	म्हां लोगां ने
,,	,,	करणां कीं	करण की
५९३	१	समझिया	समझियो
,,	१५	च्त्रो	क्षेत्र
,,	२०	लोगों ने	लोगो ने
,,	२६	इन व्हींन	उणने
,,	अंतिम	मैं	में
५९४	८	इं कदर	ईं कदर
,,	३०	रह्याया है	रह्यो है
५९५	५	वोटों	वोटां
,,	८	हुबो ।	हुयो ।
,,	२१	सच्चाजका	सच्चा जका
५९६	१	पहले	पहली
,,	८	श्री नगेन्द्रबाला (छाबड़ा) :	श्रीमती नगेन्द्रबाला (छबड़ा) :
६००	७	मेजना	भेजना
६०५	११-१२	राज थान	राजस्थान
६१०	२१	इोती	होती
६११	१२	प्र ू	प्र ब

१	२	३	४
६२०	अंतिम से ४	शंकाए प्रकट प्रकट	शंकाए प्रकट
६२२	६	सरकार	सरकारी
६२७	२५	तरीकां	तरीकों
६२८	३	तयार	तैयार
६३०	१४ व २२	में	मैं
६३१	१७	हैं	है
६३४	२४	दसरा	दूसरा
६३५	शीर्ष	(श्री मथुरादास माथुर)	—
,,	अंतिम से २	इन्फोरमेंशन	इन्फोर्मेशन
६३६	अन्तिम	श्री अभयसिंहजी : साहब	श्री अभयसिंहजी साहब
६३८	१५, १८, २८ व २६	एडवर्टाज़मेंटस	एडवर्टाइजमेंट
,,	२७	वषों	वर्षों
,,	अन्तिम से ३	एडवार्टाइज़मेंट	एडवर्टाइजमेंट
६४१	१	श्री भोरोसिंह	श्री भैरोंसिंह
,,	१३	बिलकुल	बिल्कुल
,,	१७	श्री मानसिह	श्री मानसिंह
६४३	शीर्षक	अमिभाषण	अभिभाषण
,,	१५	उन्होंन	उनको
,,	१६	othercandidates	other Candidates
६४४	६	श्री मानसिह महार :	श्री मानसिंह महार :
६४६	२५	वर्दाश्त	बर्दाश्त
६४७	४	कहीं।	कही।
,,	२१	अपने	आपने
६४६	२	बेठने	बैठने

१	२	३	४
,,	१२	है	हो
,,	१५	रीएम्लॉमैन्ट	रीएम्प्लॉयमैन्ट
,,	२१	लॉकमीशन	लॉ कमीशन
६५१	४	गई ।	गईं ।
,,	१५	श्री मथुरादाम माथुर :	श्री मथुरादास माथुर :
६५१	२३	दसरी	दूसरी
,,	२६	वन गई	बन गई
६६०	शीर्षक	परिषिष्ट	परिशिष्ट
६६३	,,	परिशिटट	परिशिष्ट
६६५	प्रथम	सूचि	सूची
६६६	६	कलकमुकलेरा	कलकलमुकलेरा
,,	१४	नेऊतर	नेऊसर
६६७	शीर्षक	परिशिष्टट	परिशिष्ट